सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद (अ) और इस्लाम की सेवा

पवित्र कुरआन मजीद तथा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों में उम्मते मुहम्मदिया में इमाम महदी अलैहिस्सलाम के नुजूल की ख़बर मौजूद है। पवित्र कुरआन की सूरह जुम्अ: आयत 4 में स्पष्ट शब्दों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक मसील तथा प्रतिरूप के आने का वर्णन मौजूद है।

हज़रत सरवरे क़ायनात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को खबर देते हुए फ़रमाया था :-

فَإِذَا رَأَيْتُمُوهُ فَبَايِعُوهُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الثَّلْجِ
فَإِنَّهُ خَلِيفَةُ اللّٰهِ الْمَهْدِيُّ

(मुसनद अहमद बिन हम्बल, भाग 6, पृ. 30)

"हे मुसलमान ! जब तुम को मसीह मौऊद का पता चले और तुम उस को देख लो तो तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उस तक पहुँचो और बैअत कर के उस के आज्ञाकारी लोगों में शामिल हो जाओ। चाहे तुम्हें उस तक पहुँचने के लिए बर्फ के ठण्डे पहाड़ों पर घुटनों के बल ही क्यों न जाना पड़े तुम उस के पास ज़रूर पहुँचो क्योंकि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं होगा बल्कि अल्लाह तआला का नियुक्त किया हुआ ख़लीफ़ा और उस की ओर से हिदायत प्राप्त होगा।"

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह मौऊद व महदी मसऊद पर ईमान लाने का महत्त्व वर्णन करते हुए फरमाया :-

"तुम में से जो ईसा अलैसहिस्सलाम को पाय मेरा सलाम कहे।"

(दुर्रे मंसूर, भाग 2 पृ. 445, द्वारा इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

अल्लाह तआला का हज़ारों लाखों गुणा शुक्र है कि उस ने अपने फज़ल से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम को उम्मते मुहम्मदिया के मौऊद मसीह तथा महदी के स्थान पर स्थापित किया। आप ने अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम की प्रतिष्ठा की और इस्लाम को एक ज़िन्दा धर्म प्रमाणित किया। आप ने अल्लाह तआला की आज्ञा से इस्लाम की प्रतिष्ठा तथा वास्तविक मुसलमान बनाने के लिए 23 मार्च 1889 ई को "अहमदिया मुस्लिम जमाअत" की स्थापना की।

पवित्र कुरआन मजीद तथा हदीसों के अनुसार मसीह मौऊद व महदी मौऊद का काम संक्षेप में निम्नलिखित शाखाओं में बंटा हुआ नज़र आता है।

1. अन्दरूनी मतभेदों में इन्साफ से फैसला करेगा।

2. इस्लाम पर जो बाहर से आक्रमण होते हैं उनका तोड़ निकालना विशेषकर ईसाई मत और भौतिकवाद के प्रभाव को तोड़ना और इस्लाम को अन्य सभी धर्मों पर विजयी कर दिखाना तथा उस की तब्लीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुँचाना। विशेष तौर पर पश्चिमी देशों अर्थात् यूरोप और अमरीका को अपने प्रचार के द्वारा विजय करना।

3. खोए हुए ईमान को फिर दुनिया में स्थापित करना।

ये वे तीन महान काम हैं जो मसीह मौऊद के लिए निश्चित कर दिए गए हैं और खुदा के फ़ज़ल से हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने इन कामों को बड़ी ख़ूबी के साथ पूरा किया है अपने तो अपने ग़ैरों ने भी इस बात को स्वीकार किया। आप का देहान्त 26 मई 1908 ई को हुआ। आप के देहान्त पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने इन शब्दों में आप के कामों का वर्णन किया। आप लिखते हैं कि

"मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी का देहान्त इस योग्य नहीं कि इस से शिक्षा प्राप्त न की जाए और मिटाने के लिए इसे ज़माना के सुपुर्द कर के सबर कर लिया जाए। ऐसे लोग जिस से धार्मिक या बौद्धिक दुनिया में कोई इंकलाब पैदा हो हमेशा दुनिया में नहीं आते। यह तारीख़ के महान पुरुष बहुत कम संसार में आते हैं और जब आते हैं दुनिया में इंकलाब पैदा कर के दिखा जाते हैं।

इन की यह विशेषता कि वह इस्लाम के विरोधियों के सामने एक विजय प्राप्त जरनेल का फर्ज़ पूरा करते रहे हमें मजबूर करती है कि इस अहसास को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया जाए.... मिर्ज़ा साहिब का वह लिट्रेचर जो मसीहियों और आर्यों के मुकाबला पर उन से प्रकट हुआ सर्व सम्मत की ओर से स्वीकारोक्ति की सनद प्राप्त कर चुका है और इस विशेषता में वह किसी परिचय का मुहताज नहीं। इस लिट्रेचर का मान सम्मान आज जब कि वह अपना काम पूरा कर चुका है हमें दिल से स्वीकार करना पड़ता है।" (तारीख़ अहमदियत भाग 2 पृष्ठ 560-561)

इस समय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आप के कामों को सारे संसार में फैला रहे हैं। आप के नेतृत्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत संसार के 209 देशों में स्थापित हो चुकी है। आप के कुशल नेतृत्व में अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम की शान्ति प्रदत शिक्षाओं को फैला रही है और सारे संसार को बता रही है कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब(अ) को मसीह मौऊद तथा हकम व अदल बना कर भेजा है आप ने आते ही अपना सफेद झण्डा ऊँचा कर दिया और पुकार कर कहा इधर आओ कि ख़ुदा ने मुझे तुम्हारी शान्ति का राजदूत बना कर भेजा है। आओ कि मैं तुम्हारी तकलीफों को दूर कर के तुम्हें सुख शान्ति तथा समृद्धि का मार्ग बताऊं। मुबारक वह जो आप को स्वीकार करे।

इस विशेष नम्बर में आप की इस्लाम के लिए की गई ख़िदमतों की कुछ झलकियां प्रस्तुत हैं। मूल लेख उर्दू भाषा में लिखे गए हैं, जो पाठकों के लिए अनुवाद किए गए हैं। आशा है कि पाठक लाभांवित होंगे।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र कुरआन	2
3	पवित्र हदीस	3
4	मुबारक वह जिस ने मुझे पहचाना। मल्फूज़ात	4
5	कलाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	5
6	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे	6
7	हज़रत मसीह मौऊद (अ) द्वारा अन्य धर्मों पर विजय	23
8	नज़्म, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	25
9	शाने इस्लाम, कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	26
10	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अरबों में अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की तब्लीग़	27
11	वफाते मसीह नासरी, कलाम हज़रत मसीह मौऊद (अ)	29
12	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें	31
13	हज़रत मसीह मौऊद (अ) और इलेक्ज़ेन्डर डोई का मुकाबला	32
14	मुसलमानों बनाओ ताम तक्वा, नज़्म	33
15	मसीह वक्त अब दुनिया में आया, नज़्म	34
16	महान धर्म महोत्सव लाहौर और इस्लाम की भव्य विजय	35

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

इमाम महदी तथा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान कार्य

वह ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत के साथ और सच्चा धर्म देकर भेजा है ताकि उस को सभी धर्मों पर विजयी करे चाहे मुशरिक कितना ही नापसंद करें।

वही ख़ुदा है जिस ने एक अनपढ़ क़ौम की तरफ उन्हीं में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा जो उन्हें ख़ुदा के आदेशों को सुनाता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और ज्ञान सिखाता है ।

وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ هُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ

(सूरह अस्सफ आयत 7 से 10)

अनुवाद तफसीर सग़ीर से :: और (याद करो) जब ईसा इब्ने मर्यम ने अपने लोगों से कहा कि हे बनी इस्राईल! मैं अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिए रसूल होकर आया हूं जो (कलाम) मेरे आने से पहले अवतरित हो चुका है अर्थात तौरात, उस की भविष्यवाणी को मैं पूरा करता हूँ और एक रसूल की भी ख़बर देता हूँ जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद होगा।[1] फिर जब वह रसूल दलीलें लेकर आ गया, तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला खुला धोखा है और उस से अधिक ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला पर झूठ बांधे हालांकि वह[2] इस्लाम की ओर बुलाया जाता है। और अल्लाह अत्याचारियों को कभी हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अपने मूंहों से अल्लाह के नूर को बुझा दें और अल्लाह अपने नूर को पूरा करके छोड़ेगा। चाहे काफिर (लोग) कितना ही नापसंद करें। वह ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत के साथ और सच्चा धर्म देकर भेजा है ताकि उस को सभी धर्मों पर विजयी करे चाहे मुशरिक कितना ही नापसंद करें।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (सूरह अल्जुमअ: आयत 2 से 5)

अनुवाद तफसीर सग़ीर से :: आसामानों और धरती में जो कुछ भी है वह अल्लाह की महिमा करता है। उस (अल्लाह) की जो बादशाह भी है और पवित्र (भी है और सब गुणों का व्यापक) है और विजयी (और) हिकमत वाला है। वही ख़ुदा है जिस ने एक अनपढ़ क़ौम की तरफ उन्हीं में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा जो उन्हें ख़ुदा के आदेशों को सुनाता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और ज्ञान सिखाता है यद्यपि वह इससे पहले बड़ी भूल में थे और उनके अतिरिक्त में एक दूसरे क़ौम[3] में भी (वह उसे भेजेगा) जो अभी तक उन से नहीं मिली और वह विजयी (और) हिकमत वाला है। यह अल्लाह का फज़्ल है जिस को चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾

(सूरह अन्नूर 56)

अनुवाद तफसीर सग़ीर से :: अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और उचित अवस्था कर्म करने वालों से वादा किया है कि वे उन्हें ज़मीन में ख़लीफा बना देगा जिस तरह उनसे पहले लोगों को ख़लीफा बना दिया था और जो धर्म उस ने उनके लिए पसंद किया है वह उनके लिए उसे मज़बूती से स्थापित कर देगा और उनके डर की स्थिति के बाद वह उनके लिए शांति की स्थिति बदल कर देगा वह मेरी इबादत करेंगे (और) किसी चीज़ को मेरा शरीक नहीं बनांगे और जो लोग उसके बाद भी इनकार करें वे नाफरमानों में से क़रार दिए जाएंगे।

☆ ☆ ☆

1.इस आयत में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी है जो इंजील बरनबास में लिखी हुई है। ईसाई उसे झूठी इंजील बताते हैं। मगर यह पोप की लाइब्रेरी में पाई जाती है। इसके अलावा यह भी दलील है कि प्रचलित सुसमाचारों में फ़ारक़लीत की ख़बर दी गई है जिसके अर्थ "अहमद" ही बनते हैं। इसलिए इस आयत में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अप्रत्यक्ष और आप के एक बुरूज़ की जिसका उल्लेख अगली सूरत में है, अप्रत्यक्ष ख़बर दी गई है।

2. इस आयत में इस बात को प्रकट किया गया है कि आप के बुरूज़ (प्रतिरूप) के बारे में विशेष ध्यान चाहिए जो भविष्यवाणी से परोक्ष सम्बंधित है लेकिन इस्लाम की ओर बुलाया जाएगा। मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ख़ुद दुनिया को इस्लाम की ओर बुलाते थे।

3. इस आयत में इस हदीस की तरफ संकेत मिलता है जिस में आता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहाबा ने पूछा कि या रसूलल्लाह! ये आख़रीन कौन हैं? तो आपने सलमान फ़ारसी के कंधे पर हाथ रखकर फरमाया:

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ اَوْ رِجَالٌ مِنْ فَارِسَ (बुख़ारी)

अर्थात एक समय अगर ईमान सुरैया तक भी उड़ गया तो फारस वालों की नस्ल में से एक या एक से अधिक लोग इसे वापस ले आएंगे। इस में महदी मौऊद की ख़बर है।

☆ ☆ ☆

इमाम महदी तथा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान कार्य

अगर ईमान सुरय्या के पास भी पहुंच गया अर्थात ज़मीन से उठ गया तो मसीह मौऊद उसे वापस ले आएंगे । मेहदी का मुझ से क़रीबी रिश्ता होगा उसका माथा उज्ज्वल और नाक ऊंची होगी (अर्थात विशाल माथा और खड़ी नाक वाला होगा) वह पृथ्वी को न्याय से भर देगा जिस तरह वह इससे पहले ज़ुल्म व अत्याचार से भरी हुई थी। मसीह मौऊद सलीब को तोड़ेगा, सुअर को क़त्ल करेगा,और दज्जाल को हलाक करेगा।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذْ نَزَلَتْ عَلَیْهِ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ فَلَمَّا قَرَأَ وَاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ ، قَالَ رَجُلٌ مَّنْ هٰؤُلَآءِ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ فَلَمْ یُرَاجِعْهُ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ حَتّٰی سَأَلَهٗ مَرَّةً اَوْ مَرَّتَیْنِ اَوْ ثَلَاثًا قَالَ وَفِیْنَا سَلْمَانُ الْفَارِسِیُّ قَالَ فَوَضَعَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَدَهٗ عَلٰی سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ لَوْ كَانَ الْاِیْمَانُ عِنْدَ الثُّرَیَّا لَنَالَهٗ رِجَالٌ مِّنْ هٰؤُلَآءِ

हज़रत अबू हुरैर: (रज़ि) वर्णन करते हैं कि हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेवा में बैठे थे कि आप पर सूर: जुम्अ: नाज़िल हुई। जब अपने इस की आयत وَاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ पढ़ी जिसके अर्थ यह हैं कि "कुछ बाद में आने वाले लोग भी उन सहाबा में शामिल होंगे जो अभी उन के साथ नहीं मिले। " तो एक आदमी ने पूछा हे रसूलल्लाह ! ये कौन लोग हैं जो दर्जा तो सहाबा का रखते हैं लेकिन अभी उनमें शामिल नहीं हुए। हज़ूर ने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। इस आदमी ने तीन बार यही सवाल दोहराया। रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी हम में बैठे थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ उनके कंधे पर रखा और फरमाया अगर ईमान सुरय्या के पास भी पहुंच गया अर्थात ज़मीन से उठ गया तो इन लोगों में से कुछ लोग उसे वापस ले आएंगे (अर्थात आख़रीन से अभिप्राय फारस वाले हैं जिन में से मसीह मौऊद होंगे और उन पर ईमान लाने वाले सहाबा का दर्जा पाएंगे।

(बुख़ारी किताबुत्तफसीर सूर: जुम्अ: व मुस्लिम उद्धरित हदीकतुस्सालेहीन हदीस नम्बर 941)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلْاَنْبِیَآءُ اِخْوَةُ الْعَلَّاتِ اُمَّهَاتُهُمْ شَتّٰی وَاَنَا اَوْلَی النَّاسِ بِعِیْسَی ابْنِ مَرْیَمَ لِاَنَّهٗ لَمْ یَكُنْ بَیْنِیْ وَبَیْنَهٗ نَبِیٌّ وَاِنَّهٗ نَازِلٌ فَاِذَا رَاَیْتُمُوْهُ فَاَعْرِفُوْهُ فَاِنَّهٗ رَجُلٌ مَرْبُوْعٌ اِلَی الْحُمْرَةِ وَالْبَیَاضِ سَبْطُ كَاَنَّ رَأْسَهٗ یَقْطُرُ وَاِنْ لَمْ یُصِبْهُ بَلَلٌ بَیْنَ مُمَصِّرَتَیْنِ فَیَكْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَةَ وَیُعْطِلُ الْمِلَلَ حَتّٰی یُهْلِكَ اللّٰهُ فِیْ زَمَانِهِ الْمِلَلَ كُلَّهَا غَیْرَ الْاِسْلَامِ وَیُهْلِكُ اللّٰهُ فِیْ زَمَانِهِ الْمَسِیْحَ الدَّجَّالَ الْكَذَّابَ وَتَقَعُ الْاَسْنَةُ فِی الْاَرْضِ حَتّٰی تَرْتَعَ الْاِبِلُ مَعَ الْاَسَدِ جَمِیْعًا وَالنُّمُوْرُ مَعَ الْبَقَرِ وَالذِّئَابُ مَعَ الْغَنَمِ وَیَلْعَبَ الصِّبْیَانُ وَالْغِلْمَانُ بِالْحَیَّاتِ لَا یَضُرُّ بَعْضُهُمْ بَعْضًا فَیَمْكُثُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ یَّمْكُثَ ثُمَّ یُتَوَفّٰی فَیُصَلِّیْ عَلَیْهِ الْمُسْلِمُوْنَ وَیَدْفِنُوْنَهٗ

हज़रत अबू हुरैर: (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। नबियों के आपसी संबंध इल्लाती भाइयों जैसे हैं जिनका पिता एक और माता अलग हों। मेरा लोगों में से ईसा इब्न मर्यम से सबसे क़रीबी रिश्ता है क्योंकि मेरे और उसके बीच कोई नबी नहीं। (इस रूहानी नज़दीकी क कारण मेरा मसील (प्रतिरूप) बनकर वह निश्चित रूप से नाज़िल होगा) जब तुम देखो तो हुलिए से उसे पहचान लेना कि वह दरमियाना कद का होगा। लाल और सफेद रंग, सीधे बाल उसके सिर से बिना पानी का उपयोग किए बूँदें गिर रही होंगी अर्थात उसके बाल चमक के कारण गीले गीले लगते होंगे। वह आकर सलीब को तोड़ेगा अर्थात सलीब की आस्थाओं का खण्डन करेगा। सुअर क़त्ल करेगा अर्थात दुष्ट प्रकृति के लोगों की मौत का कारण होगा अत: उसके द्वारा सलीब के प्रभुत्व की समाप्ति और सुअर प्रकृति लोगों का ख़ात्मा होगा। जज़िया ख़त्म करेगा अर्थात उसका ज़माना धार्मिक युद्धों की समाप्ति का ज़माना होगा। उस के ज़माना में इस्लाम के अतिरिक्त अल्लाह तआला बाकी धर्मों को रूहानी दृष्टि से भी और शौकत(सम्मान) की दृष्टि से भी मिटा देगा और झूठे मसीह दज्जाल को हलाक करेगा और ऐसा अमन तथा शान्ति का ज़माना होगा कि ऊंट शेर के साथ, तेंदुए गायों के साथ, भेड़िए बकरियों के साथ चरेंगे। बच्चे और बड़े आदमी सांपों के साथ खेलेंगे। अत: अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार जितना समय अल्लाह चाहेगा मसीह दुनिया में रहेंगे। फिर वफात पाएंगे मुसलमान उनका नमाज़ जनाज़ा पढ़ेंगे और उनको दफन किया जाएगा।

(अबु दाऊद किताबुल मलाहम बाब ख़ुरूजे दज्जाल पृष्ठ 594 अहमद बिन हंबल जिल्द 2, पृष्ठ 437 उद्धरित हदीकतुस्सालेहीन हदीस 945)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰی یَنْزِلَ عِیْسَی بْنُ مَرْیَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا وَاِمَامًا عَدْلًا فَیَكْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَةَ وَیَفِیْضُ الْمَالَ حَتّٰی لَا یَقْبَلَهٗ اَحَدٌ

हज़रत अबू हुरैर:(रज़ि) वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तक न्याय करने वाले स्वभाव के हाकिम और इमाम आदिल ईसा बिन मरियम अल्लाह की तरफ से नहीं आते क़यामत नहीं आएगी। (जब वह आएंगे तो) वह सलीब को तोड़ेंगे, सुअर को क़त्ल करेंगे, जज़िया के नियम को समाप्त करेंगे ऐसा माल वितरित करेंगे जिसे लोग स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फित्न बाब फित्ना दज्जाल व ख़ुरूज ईसा बिन मरियम व ख़ुरूज याजूज माजूज उद्धरित हदीकतुस्सालेहीन हदीस 949)

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَلْمَهْدِیُّ مِنِّیْ أَجْلَی الْجَبْهَةِ أَقْنَی الْاَنْفِ یَمْلَأُ الْاَرْضَ قِسْطًا وَّعَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेहदी का मुझ से क़रीबी रिश्ता होगा उसका माथा उज्ज्वल और नाक ऊंची होगी (अर्थात विशाल माथा और खड़ी नाक वाला होगा) वह पृथ्वी को न्याय से भर देगा जिस तरह वह इससे पहले ज़ुल्म व अत्याचार से भरी हुई थी। (सुनन अबु दाऊद किताबुल महदी)

मुबारक वह जिस ने मुझे पहचाना
मैं ख़ुदा की सब राहों में से आख़री राह हूं

मैं उस के सब नूरों में से से आख़री नूर हूं बदक़िस्मत है वह जो मुझे छोड़ता हूं क्योंकि मेरे बिना सब अन्धेरा है

उपदेश हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गया ताकि सलीब की आस्था को चकनाचूर कर दिया जाए

इस विनीत को दूसरे बुजुर्गों की स्वाभाविक समानता के अतिरिक्त जिस का विवरण बराहीने अहमदिया में विस्तार से सूचिबद्ध है हज़रत मसीह की प्रकृति से एक विशेष समानता है तथा स्वाभाविक समानता की वजह से मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गया ताकि सलीब की आस्था को चकनाचूर कर दिया जाए। अत: मैं सलीब को तोड़ने और सुअरों को कत्ल करने के लिए भेजा गया हूँ। आसमान से उतरा हूँ उन पवित्र फरिश्तों के साथ जो मेरे दाएं बाएं थे, जैसे मेरा ख़ुदा मेरे साथ है मेरे काम को पूरा करने के लिए हर एक तत्पर दिल में प्रवेश करेगा बल्कि कर रहा है और अगर मैं चुप भी रहूं और मेरी कलम लिखने से रुकी भी रहे तब भी वे फरिशते जो मेरे साथ उतरे हैं अपना काम बंद नहीं कर सकते और उनके हाथ में बड़े-बड़े हथोड़े हैं जो सलीब तोड़ने और सृष्टि पूजा के उपासना स्थल कुचलने के लिए दिए गए हैं।

(फतह इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 3, पृष्ठ 11, हाशिया)

जब से ख़ुदा ने मुझे दुनिया में मामूर करके भेजा है उसी समय से दुनिया में एक महान इंकलाब हो रहा है

"वह काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त फरमाया है वह यह है कि ख़ुदा और उसकी सृष्टि के संबंध में जो मलिनता आ गई है उसे दूर कर के मुहब्बत और ईमानदारी के संबंध को फिर से स्थापित करूं और सत्य की अभिव्यक्ति से धार्मिक युद्ध का अंत करके सुलह की बुनियाद डालूं और वह धार्मिक सत्य जो दुनिया की आंख से छुपे हुए हैं उन्हें प्रकट कर दूं और वह रूहानियत जो नफसानी अंधेरों के नीचे दब गई है उसका नमूना दिखाऊँ और ख़ुदा की शक्तियां जो इंसान के अंदर प्रवेश कर के इबादत या दुआ के माध्यम से प्रकट होती हैं अपितु न केवल कथन से व्यवहार के माध्यम से उनकी स्थिति बयान करूं और सब से अधिक यह है कि वह शुद्ध और चमकती हुई तौहीद जो प्रत्येक प्रकार के शिर्क (बहुदेववाद) की मिलावट से खाली है, जो अब नष्ट हो चुकी है उसका फिर से क़ौम में चिरस्थायी पौधा लगा दूं और यह सब कुछ मेरी शक्ति से नहीं होगा बल्कि ख़ुदा की शक्ति से होगा जो आसमान और धरती का ख़ुदा है। मैं देखता हूँ कि एक तरफ तो ख़ुदा ने अपने हाथ से मेरी तरबियत फरमा कर और मुझे अपनी वह्यी से सम्मानित कर के मेरे दिल को यह जोश प्रदान किया है कि मैं इस प्रकार के सुधारों के लिए खड़ा हो जाऊँ और दूसरी ओर वह दिल भी तैयार कर दिए हैं जो मेरी बातों के मानने के लिए तत्पर हों, मैं देखता हूँ कि जब ख़ुदा ने मुझे दुनिया में मामूर करके भेजा है उसी समय से दुनिया में एक महान इंकलाब हो रहा है। यूरोप और अमेरिका में जो लोग हज़रत ईसा की ख़ुदाई के चाहने वाले थे अब उनके शोधकर्ता अपने आप इस आस्था से अलग होते जाते हैं और वह क़ौम जो बाप दादों से बुतों और देवताओं पर मुग्ध थी बहुतों को उन में से यह बात समझ आ गई है कि बुत कुछ चीज नहीं हैं और यद्यपि वे लोग अभी रूहानियत से अनजान हैं और केवल कुछ शब्द रस्मी रूप से लिए बैठे हैं लेकिन कुछ शक नहीं कि असंख्य बेहूदा संस्कार और बिदअतें और शिर्क की रस्सियां उन्होंने अपने गले से उतार दी हैं और तौहीद की दहलीज़ के निकट खड़े हो गए हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि कुछ थोड़े समय के बाद अल्लाह तआला का फज़ल उन में से बहुतों को अपने एक विशेष हाथ से धक्का देकर सच्ची और सही तौहीद के इस दारुल अमान में प्रवेश करा देगा जिसके साथ पूर्ण मुहब्बत और पूर्ण भय और पूर्ण मअरफत प्रदान की जाती है। यह उम्मीद मेरी केवल काल्पनिक नहीं है बल्कि ख़ुदा की पवित्र वह्यी से यह सुसमाचार मुझे मिला है। इस देश में ख़ुदा ने यह यह काम किया है ताकि अति शीघ्र विविध क़ौमों को एक क़ौम बना दे और सुलह और प्रेम का दिन लाए। प्रत्येक को इस हवा की ख़ुशबू आ रही है कि यह सब विविध क़ौमें किसी दिन एक क़ौम बनने वाली हैं।

(लेक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पेज 181)

मैं इसलिए भेजा गया हूं तकि ईमानों को मज़बूत करूं और ख़ुदा तआला का वजूद लोगों पर साबित करके दिखलाऊं

मैं इसलिए भेजा गया हूं कि ताकि ईमानों को मज़बूत करूं और ख़ुदा तआला का वजूद लोगों पर साबित करके दिखलाऊं क्योंकि प्रत्येक क़ौम की ईमानी हालत बहुत कमज़ोर हो गई है और परलोक केवल एक कहानी माना जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यवहारिक हालत से बता रहा है कि वह जैसा कि विश्वास दुनिया और दुनिया के सम्मान पर रखता है और जैसा कि उसे भरोसा सांसारिक कारणों पर है, यह विश्वास और भरोसा हरगिज़ उसे ख़ुदा तआला और आख़िरत पर नहीं। ज़बानों पर बहुत कुछ है मगर दिलों में दुनिया की मुहब्बत का प्रभुत्व है। हज़रत मसीह ने इसी हालत में यहूद को पाया था और जैसा कि ईमान की कमज़ोरी की विशेषता है यहूद की नैतिक हालत भी बहुत ख़राब हो गई थी और ख़ुदा की मुहब्बत ठंडी हो गई थी। अब मेरे ज़माना में भी यही स्थिति है। अत: मैं भेजा गया हूं ताकि सच्चाई और ईमान का ज़माना फिर आए और दिलों में तक़्वा पैदा हो। अत: यही कार्य मेरे वजूद के आने का कारण हैं मुझे बतलाया गया है कि फिर आसमान ज़मीन से नज़दीक होगा, इसके बाद कि बहुत दूर हो गया था। अत: मैं इन ही बातों का मुजद्दिद हूँ और यही काम हैं जिनके लिए मैं भेजा गया हूँ।

(किताबुल बरिय्या, रूहानी ख़ज़ायन भाग 13, पृष्ठ 291 हाशिया)

☆ ☆ ☆

कलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हम्दे रब्बुल आलमीं

अल्लाह तआला की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा कलाम

किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दअुल अनवार का
बन रहा है सारा आलम आईना अबसार का
चान्द को कल देख कर मैं सख़्त बेकल हो गया
क्यों कि कुछ कुछ था निशाँ उस में जमाले यार का
उस बहारे हुस्न का दिल में हमारे जोश है
मत करो कुछ ज़िक्र हम से तुर्क या तातार का
है अजब जलवा तेरी क़ुदरत का प्यारे हर तरफ
जिस तरफ देखें वही रह है तेरे दीदार का
चश्माए-ख़ुर्शीद में मौजें तेरी मश्हूद हैं
हर सितारे में तमाशा है तेरी चमकार का
तूने ख़ुद रूहों पे अपने हाथ से छिड़का नमक
उस से है शोरे महब्बत आशिक़ाने ज़ार का
क्या अजब तूने हर इक ज़र्रः में रखे हैं ख़वास
कौन पढ़ सकता है सारा दफतर उन असरार का
तेरी क़ुदरत का कोई भी इन्तहा पाता नहीं
किस से खुल सकता है पेच इस उक़्दए दुश्वार का
खू-बरूयों में मलाहत है तेरे इस हुस्न की
हर गुलो गुलशन में है रंग उस तेरे गुलज़ार का
चश्मे मस्ते हर हसीं हर दम दिखाती है तुझे
हाथ है तेरी तरफ हर गेसूए ख़ुमदार का
आँख के अन्धों को हाइल हो गए सौ सौ हिजाब
वरना था क़िब्ला तेरा रुख़ काफिरो दीनदार का
हैं तेरी प्यारी निगाहें दिलबरा इक तेग़े-तेज़
जिन से कट जाता है सब झगड़ा ग़मे अग़यार का
तेरे मिलने के लिए हम मिल गए हैं ख़ाक में
ता मगर दरमाँ हो कुछ इस हिजर के आज़ार का
एक दम भी कल नहीं पड़ती मुझे तेरे सिवा
जाँ घुटी जाती है जैसे दिल घुटे बीमार का
शोर कैसा है तेरे कूचा में ले जल्दी ख़बर
खूँ न हो जाए किसी दीवाना मजनूँ वार का

(सुरमा चश्मः आर्यः, पृ. 4, प्रकाशन 1886 ई., रूहानी ख़ज़ायन भाग 2, पृ. 52)

उम्मुल किताब

सूरह फातिहः की शान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा कलाम

ऐ दोस्तो जो पढ़ते हो उम्मुल किताब को
अब देखो मेरी आँखों से इस आफताब को
सोचो दुआए फ़ातिहा को पढ़ के बार बार
करती है ये तमाम हक़ीक़त को आशकार
देखो ख़ुदा ने तुम को बताई दुआ यही
उस के हबीब ने भी पढ़ाई दुआ यही
पढ़ते हो पन्ज वक्त इसी को नमाज़ में
जाते हो इस की रह से दरे बे नियाज़ में
उस की क़सम कि जिस ने ये सूरत उतारी है
उस पाक दिल पे जिस की वो सूरत प्यारी है
ये मेरे रब्ब से मेरे लिए इक गवाह है
ये मेरे सिदक़े दावा पे मुहरे इलाह है
मेरे मसीह होने पे ये इक दलील है
मेरे लिए ये शाहिदे रब्बे जलील है
फिर मेरे बाद औरों की है इन्तज़ार क्या
तौबा करो कि जीने का है एतबार क्या

(एजाज़ुल मसीह, पृ. 2 प्रकाशन 20 फरवरी 1901 ई., रूहानी ख़ज़ायन भाग 18, पृ. 2)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह पेश्वा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद(स) दिलबर मेरा यही है
सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बहतर
लेक अज़ खुदाए बरतर ख़ैरुल वरा यही है
पहलों से ख़ूब तर है ख़ूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है बदरुद्दुजा यही है
पहले तो रह में हारे पार उसने हैं उतारे
मैं जाऊँ उस के वारे बस ना ख़ुदा यही है
पर्दे जो थे हटाए अन्दर की रह दिखाए
दिल यार से मिलाए वो आश्ना यही है
वह यारे ला मक़ानी, वह दिलबरे निहानी
देखा है हम ने उस से बस रहनुमा यही है
वह आज शाहे दीं है, वह ताजे मुरस्लीं है
वह तय्यबो अमीं है, उस की सना यही है
हक़ से जो हुक्म आए उस ने वो कर दिखाए
वह राज़ दीं बताए नेअमुल-अता यही है
आँख उसकी दूरबीं है, दिल यार से करीं है
हाथों में शमअे दीं है अैनुज्ज़िया यही है
जो राज़े दीं थे भारे उस ने बताए सारे
दौलत का देने वाला फर्मा रवा यही है
उस नूर पर फिदा हूँ उस का ही मैं हुआ हूँ
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है
वह दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना
बाकी है सब फसाना सच बे ख़ता यही है
सब हम ने उस से पाया शाहिद है तू खुदाया
वह जिस ने हक़ दिखाया वह मह लका यही है

☆ ☆ ☆

☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो)

(सारांश तक़रीर जलसा सालाना क़ादियान 1927 ई)

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ
النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ الَّذِیۡنَ یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰهَ
قِیٰمًا وَّ قُعُوۡدًا وَّ عَلٰی جُنُوۡبِهِمۡ وَ یَتَفَکَّرُوۡنَ فِیۡ خَلۡقِ
السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ
سُبۡحٰنَکَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ رَبَّنَاۤ اِنَّکَ مَنۡ تُدۡخِلِ
النَّارَ فَقَدۡ اَخۡزَیۡتَهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِیۡنَ مِنۡ اَنۡصَارٍ
رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعۡنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیۡ لِلۡاِیۡمَانِ اَنۡ اٰمِنُوۡا
بِرَبِّکُمۡ فَاٰمَنَّا ۟ رَبَّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَ کَفِّرۡ
عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الۡاَبۡرَارِ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا
وَعَدۡتَّنَا عَلٰی رُسُلِکَ وَ لَا تُخۡزِنَا یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ ؕ اِنَّکَ
لَا تُخۡلِفُ الۡمِیۡعَادَ فَاسۡتَجَابَ لَهُمۡ رَبُّهُمۡ اَنِّیۡ لَاۤ اُضِیۡعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنۡکُمۡ مِّنۡ ذَکَرٍ اَوۡ اُنۡثٰی ۚ بَعۡضُکُمۡ
مِّنۡۢ بَعۡضٍ ۚ فَالَّذِیۡنَ هَاجَرُوۡا وَ اُخۡرِجُوۡا مِنۡ
دِیَارِهِمۡ وَ اُوۡذُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِیۡ وَ قٰتَلُوۡا وَ قُتِلُوۡا لَاُکَفِّرَنَّ
عَنۡهُمۡ سَیِّاٰتِهِمۡ وَ لَاُدۡخِلَنَّهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا
الۡاَنۡهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عِنۡدَهٗ حُسۡنُ
الثَّوَابِ

(सूरह आले इम्रान 195)

हुज़ूर ने फरमाया कि

मैंने जो कुछ आयतें अभी तिलावत की हैं उन में मेरे इस विषय की तरफ इशारा है जो आज मैं वर्णन करना चाहता हूँ।

यह विषय जमाअत से ऐसा संबन्ध रखता है कि उसे जीवन और मौत का सवाल कहा जा सकता है और जिस तरह में इस विषय को अपनी जमाअत के दिमाग़ में बिठाना चाहता हूं अगर वह उसी तरह दिमाग़ में बिठा लें तो तब्लीग़ में इंशा अल्लाह बड़ी आसानी हो सकती है।

मैंने बड़ा विचार किया है और अंत में इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि दुनिया में सच्चाई टुकड़े टुकड़े कर के प्रस्तुत करने से वह प्रभाव नहीं पैदा कर सकती जो संयुक्त रूप से मिलाकर प्रस्तुत करने से हो सकती है। देखो अगर किसी सुंदर से सुंदर इंसान का नाक काट कर ले जाएं और पूछें यह नाक कैसा सुंदर है ? तो कोई उसकी सुंदरता को स्वीकार नहीं करेगा। इसी तरह अगर किसी सुंदर आदमी का कान काट कर ले जाएं और जाकर पूछें कि यह कैसा सुंदर है ? तो कोई उसकी सुंदरता का कोई असर नहीं होगा। हां सारे अंग मिल कर संयुक्त रूप में दिल को प्रभावित करते हैं। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा के बारे में भी हमें संयुक्त रूप में विचार करना चाहिए और फिर देखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की तरफ से सच्चे साबित होते हैं या नहीं।

मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि जमाअत ने अब तक इस मस्ला के बारे में बहुत लापरवाई से काम लिया है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कार्यों पर विस्तृत रूप से नज़र नहीं डाली गई। मैंने बार-बार लोगों को यह कहते सुना है कि बताओ तो मिर्ज़ा साहिब के आने की क्या ज़रूरत थी? अगर हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में एक विस्तार पूर्वक नजर डालें तो वे सारी बातें नज़र आती हैं जिन के लिए आप का आना ज़रूरी था और इस सवाल का उत्तर ऐसा प्रमुख और इतना वज़नी है कि अगर इसे विस्तार पूर्वक वर्णन किया जाए तो कोई सच्चाई का इच्छुक इस का इन्कार नहीं कर सकता। यह सवाल ऐसा प्रमुख है कि इस के समझे बिना कोई समझदार व्यक्ति सिलसिला की ओर आकर्षित नहीं हो सकता। क्योंकि जब तक किसी के दिल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के काम के महत्त्व का नक्शा न जमे वह आप की ओर ध्यान कैसे कर सकता है?

इस में शंका नहीं कि ख़ुदा तआला की तरफ से आने वाली ताज़ा सच्चाइयां तथा निशान ऐसे होते हैं कि वे स्वयं अपनी ज़ात में सच्चाई का प्रमाण होते हैं परन्तु जब तक उन को भी ऐसे रूप में प्रस्तुत न किया जाए कि दुनिया उन का लाभ समझ सके तो वे निशान भी प्रभावित नहीं करते। अत: इस सवाल का उत्तर देना बहुत आवश्यक है।

यह प्रश्न किया जाता है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क्या काम किया? तो कभी-कभी सवाल करने वाले का अभिप्राय यह होता है कि कोई ठोस चीज़ उसके हाथ में दे दें। वह ऐसी गवाही चाहता है जैसी कि केवल भैतिकता में मिल सकती है आध्यात्मिकता में नहीं। या लोग इस बात की कोशिश करते हैं कि समय से पहले परिणाम निकाल लें समय अभी आता नहीं मगर वे पूछते हैं कि क्या परिणाम निकला? ऐसे लोगों का वही उदाहरण होता है कि एक व्यक्ति कहे चूंकि मेरे यहां औलाद नहीं है इसलिए में औलाद के लिए दूसरी शादी करता हूं और जिस दिन दूसरी शादी करे उस के दूसरे दिन सुबह ही उस के दोस्त उस के यहां पहुच जाऐं और अस्सलामो अलैकुम के बाद पूछें कि औलाद हुई या नहीं? वह कहे अभी तो नहीं हुई तो वह कहें कि फिर शादी किस लिए की थी? शादी की शीघ्र से शीघ्र नतीजा नौ महीने बाद निकल सकता है और यदि इस समय को कम से कम भी कर दिया जाए तो सात महीने में नतीजा निकल सकता है। इतना इंतज़ार करना ज़रूरी होता है अत: किसी काम के लिये जो समय निर्धारित है इससे पहले परिणाम की मांग करना ग़लत है। दरअसल इस तरह का सवाल करने वालों को आमतौर पर दो ग़लतियां लगती हैं। एक तो यह कि जो सवाल करते हैं वह ठोस भौतिक जवाब चाहते हैं। जैसे कहते हैं ये बताओ मुसलमानों की हुकूमत कहाँ कहाँ स्थापित हुई? या यह कि कितने काफिरों को मारा है। कितने ग़ैर मुस्लिम राज्यों को हराया है। अत: वह या तो चांदी सोने के या मुर्दों के ढेर को देखना चाहते हैं दूसरी ग़लती यह लगती है कि बे मौके परिणाम तलाश करते हैं। हलांकि पहले नबियों के बारे में इस प्रकार का सवाल ऐसा सूक्ष्म होता है कि अगर वे इसे पहले नबियों पर लागू करें तो उन्हें पता चले कि इस से सूक्ष्म सवाल और कोई हो ही नहीं सकता। जो नबी शरीअत नहीं लाए इन के बारे में तो विशेष रूप से यह बहुत सूक्ष्म सवाल है। जैसे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में कोई प्रश्न करता कि आप ने क्या किया?

तो उस समय प्रस्तुत किया जा सकता था कि आप पर इतनी सूरतें उतरी हैं। प्रथम तो यह उत्तर भी ऐसे लोगों के लिए सन्तोष जनक न हो सकता क्योंकि एक ही समय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सारी शरीअत नहीं उतरी थी। कुछ आदेश उतरे थे और जब तक पूर्ण शरीअत न उतरी थी उस समय तक इस्लाम के बारे में भी यही कहा जा सकता था जिस तरह आज सिक्खों और बहाइयों के बारे में कहा जाता है कि तुम्हारे पास तो पूर्ण शरीअत नहीं है उस समय जब कि इस्लाम में विरसा के पूर्ण आदेश न उतरे थे अगर कोई सवाल करता कि इस्लाम में विरसा के बारे में क्या आदेश हैं। तो कोई उत्तर न दिया जा सकता था। अत: शरीअत भी वास्तव में पूर्णता के बाद प्रस्तुत की जा सकती है और नबी की ज़िन्दगी में केवल इतना कहा जा सकता है कि इस ने ऐसे मस्ले वर्णन किए हैं कि जो दूसरी किताबों में नहीं। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि यह शिक्षा पूर्ण हो गई है क्योंकि उस समय तक वह पूर्ण नहीं हुई होती अत: शरीअत वाले नबी के बारे में भी यह कठिनाई सम्मुख आती है परन्तु फिर भी कुछ न कुछ आदेश जो उस पर अवतरित हुए हों प्रस्तुत किए जा सकते हैं परन्तु जो शरीअत वाले नबी नहीं हैं इन के लिए क्या प्रस्तुत किया जा सकता है?

वे लोग जो यह सवाल करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या काम किया कि आप का मानना आवश्यक करार दिया जाए।? इन से हम कहते कि केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही तो मामूर और मुरसल (प्रेषक) नहीं हैं। आप से पहले हज़ारों मामूर गुज़र चुके हैं जिनका उल्लेख क़ुरआन में और दूसरी किताबों में मौजूद है। दो दर्जन के क़रीब नबियों का उल्लेख तो क़ुरआन में भी आया है। जिनमें दो तीन को छोड़कर बाकी ऐसे ही हैं जिन पर कोई शरीअत नहीं उतरी। हम कहते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में सवाल जाने दो यह बताओ हज़रत मसीह नासरी के ज़माना में जब उन्होंने दावा किया कि मैं ख़ुदा की तरफ से नबी और रसूल होकर आया हूं उस समय अगर इन लोगों से सवाल करते कि आप ने क्या काम किया है? तो वे क्या जवाब देते? या उन के हवारियों से पूछते कि हज़रत मसीह का काम बताओ तो वे क्या बताते?

हुज़ूर विभिन्न नबियों के जीवन के उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद फरमाते हैं कि

अत: सारे अंबिया के जीवन पर विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि नबी बहुत सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रभाव दुनिया में छोड़ते हैं जो भौतिक रूप पर नहीं देखा जा सकता। हां दलीलसंगत रूप में समझा जा सकता है कि नबी ने ऐसी चीज़ छोड़ी है जो भव्य परिणाम पैदा कर सकती है।

वास्तव में नबियों का उदाहरण उस बारिश जैसा होता है जो एक समय तक रुकी रहने के बाद बरसती है। बारिश न होने की वजह से हाथ पांव फूटने लगते हैं, पेड़ सूखने शुरू हो जाते हैं, लेकिन जब बारिश होती है तो स्वत: हाथों में नरमी आ जाती है। हरियाली पैदा हो जाती है और कई प्रकार की स्थितियाँ प्रकट होने लग जाती हैं।

अत: यह सवाल कि अमुक नबी ने शुरुआती दिनों में क्या किया। बहुत सूक्ष्म है और मोमिन का काम है कि बहुत ध्यानपूर्वक इस पर विचार करे। अगर कोई व्यक्ति एक नबी को इसलिए छोड़ता है कि अपने प्रारंभिक जीवन में उसे कोई सांसारिक काम नज़र नहीं आता और बहुत बड़ी सफलता और परिवर्तन दिखाई नहीं देता तो उसे सब नबियों को छोड़ना होगा। क्योंकि अगर उसकी यह कसौटी सही है तो पिछले अंबिया को भी इस पर परखना चाहिए और उन्हें भी छोड़ देना चाहिए। मगर मुसलमान चूंकि अंबिया की प्रामाणिकता के मानने वाले हैं इसलिए उन्हें यह भी मानना पड़ेगा कि नबियों के बारे में विचार करते समय बहुत सूक्ष्म मामलों को देखना चाहिए।

हुज़ूर फरमाते हैं कि

अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के काम वर्णन करना शुरू करता हूँ। लेकिन यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि नबी के जो आध्यात्मिक काम होते हैं , वास्तविक काम वही होते हैं और वही महत्त्वपूर्ण होते हैं उनके बारे में मैं कुछ नहीं वर्णन करूँगा। क्योंकि अगर आध्यात्मिक काम प्रस्तुत करूं तो एक ग़ैर अहमदी कह सकता है कि यह आप का दावा है यह कैसे मान लिया जाए। जैसे नबी का असली और वास्तविक काम है कि मनुष्य का ख़ुदा तआला से संबंध पैदा कर दे। अब अगर मैं यह कहूं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने अपने मानने वालों का ख़ुदा तआला से संबंध बना दिया तो एक ग़ैर अहमदी कहेगा यह आप का दावा है। इसे हज़रत मिर्ज़ा साहिब को न मानने वाला कैसे स्वीकार कर सकता है। इसलिए मैं इन बातों को छोड़ता हूँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दूसरे मोटे मोटे काम वर्णन करता हूं जो दूसरों के लिए भी मान्य हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पहला काम

पहला काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह है कि जिस में सभी नबी भागीदार हैं कि नबी ख़ुदा तआला का सबूत उस के पूर्ण विशेषताओं से दिया करता है ख़ुदा तआला दुनिया से छिपा होता है और अंबिया इसका सबूत उस की पूर्ण विशेषताओं से देते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस ज़माने में भेजे गए उस समय भी ख़ुदा तआला दुनिया की नज़रों से छिप चुका था और ऐसा छिपा हुआ था कि वास्तविक संबंध लोगों का इससे बिल्कुल न रहा था सृष्टा तथा मालिक की वास्तविकता का कोई सबूत न था बल्कि केवल किताबों में लिखा रह गया था कि ख़ुदा प्रत्येक चीज़ का सृष्टा और मालिक है। जब मुसलमानों से पूछा जाता ख़ुदा के सृष्टा होने का क्या सबूत है? तो वह कहते क़ुरआन में लिखा है या कहते कि तुम नहीं मानते के ख़ुदा सृष्टा है और अगर सृष्टा नहीं तो फिर और कौन है? ऐसे ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के ज़िक्र को जो वास्तव में मिट गया था उस की पूर्ण विशेषताओं के माध्यम से दोबारा स्थापित किया और निशानों के द्वारा उस के गुणों को साबित किया। मैं ने अभी बताया कि निशान अपनी ज़ात में काम नहीं होती, हां निशान का परिणाम काम होता है। इस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निशान प्रस्तुत नहीं कर रहा बल्कि यह बता रहा हूं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने निशान दिखाकर ख़ुदा तआला को सही विशेषताओं के साथ दुनिया पर प्रकट किया। जैसे हज़रत साहिब का एक इलहाम है जो प्रारंभिक समय का है कि:

" दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े बलवन्त हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। "

(तज़किरह पृष्ठ 4 प्रकाशन चतुर्थ 1977 ई)

इस इलहाम को हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने उस समय प्रकाशित किया जब आप को यहां के लोग भी न जानते थे।

देखो इस में कैसी महान ख़ुश ख़बरी दी गई है। क्या कोई इंसान किसी चतुराई से ऐसी ख़बर दे सकता है। यह इलहाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मामूरित से पहले हुआ। जिसमें एक तो यह भविष्य वाणी थी कि आप जीवित रहेंगे और मामूरियत का दावा करेंगे। दूसरी भविष्यवाणी यह थी कि जब आप दावा करेंगे तो दुनिया आप को रद्द कर देगी। तीसरी भविष्यवाणी यह थी कि दुनिया कोई मामूली विरोध न करेगी बल्कि आप पर हर तरह के हमले किए जाएंगे। चौथी भविष्यवाणी यह थी कि ख़ुदा की ओर से वह हमले रद्द किए जाएंगे और दुनिया पर अज़ाब नाज़िल होंगे। पांचवी भविष्यवाणी

यह थी कि आप की सच्चाई अंत में प्रकट हो जाएगी।

यह कोई मामूली बात नहीं जो समय से पहले और जब कि बाहरी हालात बिल्कुल ख़िलाफ थे, बतलाई गई थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेहत शुरू से ही इतनी कमज़ोर थी कि कई बार बीमारी के हमले के समय चारों ओर बैठने वालों ने समझा कि आप वफात पा गए हैं। मगर इसके बावजूद आप कहते हैं कि वह समय आने वाला है जब मामूरियत का दावा किया जाएगा। दूसरे यह कि लोग विरोध करेंगे। यह बात भी हर एक को नसीब नहीं होती।

फिर मुखाल्फ़तें मौखिक हद तक भी सीमित रहती हैं। मगर हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में ख़ुदा तआला ने तीसरी भविष्यवाणी यह फरमाई थी कि मामूली विरोध न होगा बल्कि ऐसा होगा जिस को रद्द करने के लिए ख़ुदा तआला ज़ोरदार हमले करेगा। अर्थात एक तो सख्त हमले होंगे दूसरे कई प्रकार के होंगे और कई जमाअतों की तरफ से होंगे। इससे मालूम हुआ कि दुश्मन भी सख़्त हमले करेंगे और कई प्रकार के हमले करेंगे। जिनके मुकाबला में ख़ुदा तआला को भी इस प्रकार का जवाब देना होगा। अत: विरोधियों ने आप पर विभिन्न प्रकार के हमले किए और ये हमले उस सीमा तक पहुंच गए कि एक तरफ गावर्मेन्ट आप को गिरफ्तार करने के लिए तुली बैठी थी दूसरी तरफ पीर गद्दा नशीन और मौलवी आप के विरोध पर उतारू और आप की जान के दुश्मन थे, सामान्य मुसलमानों ने भी कोई कमी नहीं की और अपने ख़िलाफ मंसूबों पर मंसूबे किए। हिन्दुओं, सिखों और ईसाइयों और बाकी सब जातियों ने भी नाख़ुनों तक ज़ोर लगाया कि आप को तबाह कर दें। आप को क़त्ल करने की कोशिश की गई। आप पर आरोप लगाए गए। आपकी इज़्ज़त व सम्मान, आप की ईमानदारी और विश्वसनीयता, आप के तक्वा और पवित्रता पर हमले किए गए। मगर सब असफल रहे और आप की इज्जत बढ़ गई। चौथी भविष्यवाणी यह थी कि इन हमलों के मुकाबला में ख़ुदा तआला की तरफ से हमले होंगे तो ऐसा ही हुआ। जिसने जिस रंग में आप पर हमला किया था उसी रंग में वह पकड़ा गया। पांचवीं भविष्यवाणी जो अंतिम बात थी कि ख़ुदा तआला आपकी प्रामाणिकता प्रकट कर देगा। इसके सबूत में यह जलसा मौजूद है। इस समय पूरी दुनिया में आप के मानने वाले हैं। अमरीका में मौजूद हैं, यूरोप में मौजूद हैं, अफ्रीका में मौजूद हैं। एशिया के हर क्षेत्र में मौजूद हैं। क्या यह अजीब बात नहीं है कि दुनिया के चालीस करोड़ मुसलमान कहलाने वालों के हाथों इतने अमेरिका के निवासी मुसलमान नहीं हुए जितने अहमदियों की छोटी सी जमाअत के प्रयासों से हुए हैं। इस समय एक ऐसे अमेरिकन मुसलमान के मुकाबला में सौ अहमदी अमेरिकन हैं। इसी तरह नीदरलैंड में जहां दूसरे मुसलमानों का बनाया हुआ एक भी मुसलमान नहीं अहमदी मुसलमान हैं और कई ऐसे देश हैं जहां अहमदी निवासियों की संख्या इस देश के मुसलमानों से अधिक है यह कितना बड़ा निशान है और ज़ोरदार हमलों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता प्रकट होने का कितना बड़ा सबूत है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक और इलहाम है और वह यह कि ख़ुदा तआला फरमाता है:

" मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन(धरती) के किनारों तक पहुँचाऊंगा।"

अब देख लो कि दुनिया में कई ऐसे स्थान हैं जहां मूल निवासियों में अन्य समुदायों के मुसलमान नहीं मगर अहमदी हैं। इससे बढ़कर दुनिया के किनारों तक आप की तब्लीग़ के पहुंचने का और क्या सबूत हो सकता है।

इसी प्रकार आप ने यह दावा किया था कि मेरा विरोध मिटता चला जाएगा और स्वीकृति फैलती चली जाएगी। जब आप ने अपना दावा दुनिया के सामने प्रस्तुत किया तो ख़तरनाक रूप से आप का विरोद्ध हुआ परन्तु आप ने उस समय फरमाया

वह घड़ी आती है जब ईसा पुकारेंगे मुझे
अब तो थोड़े रह गए दज्जाल कहलाने के दिन

उस समय दज्जाल के अतिरिक्त आप का कोई नाम न रखा जाता था परन्तु आज अल्लाह तआला की कृपा से आप का काम इतना तो स्पष्ट हो चुका है कि जो लोग अभी आप की जमाअत में शामिल नहीं हुए उन का भी बहुत बड़ा हिस्सा कहता है कि आप को दज्जाल नहीं कहना चाहिए आप ने भी अच्छा काम किया है।

इसी तरह क़ादियान की तरक्की भी बहुत बड़ा निशान है अंतिम जलसा में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में हुआ, इसमें सात सौ आदमी भोजन करने वाले थे। इस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सैर के लिए निकले तो इस लिए वापस चले गए कि लोगों की भीड़ की वजह से धूल उड़ती है। अब देखो अगर एक साथ हज़ार भी जलसा में आएँ तो शोर पड़ जाए कि क्या हो गया है क्यों इतने थोड़े लोग आए हैं। प्रत्येक वर्ष आने वालों में अधिकता होती है। पिछले वर्ष का सत्ताईस तारीख़ की हाज़री की तुलना में इस साल की हाज़री में 9 सौ गुणा वृद्धि हुई है। मानो जितने लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन के आख़री जलसा पर आए थे उस से बहुत अधिक लोगों की अधिकता प्रत्येक वर्ष जलसा की हाज़री में हो जाती है।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हज़ारों भविष्यवाणियां हैं जो किताबों में लिखी हुई हैं।

अत: ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद के माध्यम से इस तरह अपनी विशेषताओं के सबूत दिए हैं कि जिस तरह वह पहले नबियों के माध्यम से देता चला आया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दूसरा काम

नबी का एक काम यह होता है कि वह एक काम करने वाली जमाअत पैदा कर जाता है। हमारी जमाअत की कमजोरी वित्तीय मामले में और संख्या की दृष्टि से देखो और फिर इस मुकाबला में इस कार्य की विशालता को देखो। कोई व्यक्ति इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि जो काम जमाअत अहमदिया कर रही है वह कोई और क़ौम नहीं कर रही। ग़ैर अहमदी अख़बारों में छपता रहता है कि काम करने वाली एक ही जमाअत है और वह जमाअत अहमदिया है। रूस, फ्रांस, नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंगलैंड इत्यादि देशों में हमारी तरफ से इस्लाम का प्रचार किया गया और अब तो लोग हम से मांग कर रहे हैं कि हमारे देश में आकर तब्लीग़ करो अत: ईरान से मांग आई है कि बहाइयों के मुकाबला के लिए अहमदियों को आना चाहिए। कुछ लोग आर्यों का काम हमारे मुकाबला में प्रस्तुत करते हैं परन्तु उन लोगों के मालों और हमारे मालों को देखो। फिर उन के कामों का विस्तार और हमारे कामों का विस्तार देखो। हिन्दुओं में से कुछ धनी ऐसे हैं कि वह अकेले इतना रुपया दे सकते हैं जितना हमारी सारी जमाअत मिलकर सारे साल में नहीं दे सकती और एक दो नहीं बल्कि अच्छी संख्या में ऐसे लोग उनमें मौजूद हैं। मगर बावजूद इसके सारी हिंदू क़ौम ने मिलकर मलकाना क्षेत्र में हमला किया। मगर जब हमारे मुबल्लिग़ पहुंचे तो सब भाग गए। उस समय दिल्ली में हिंदू मुसलमानों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें यह सवाल पेश हुआ कि आओ सुलह कर लें। इस सम्मेलन को आयोजित करने वाले हकीम अजमल खान, डॉ अंसारी, मौलवी मुहम्मद अली साहिब और मौलवी अबुल कलाम साहिब आज़ाद थे और हिन्दुओं से श्रद्धानंद साहिब आदि। जैसा कि उलेमा का हमारे बारे में तरीका रहा है उन्होंने कहा कि अहमदियों को बुलाने की क्या ज़रूरत है और वह ख़ुद संधि की शर्तें तय करने लगे। लेकिन श्रद्धानंद जी ने कहा कि अहमदी भी इस क्षेत्र

में काम कर रहे है उन्हें बुलाना चाहिए। इस पर मेरे नाम हकीम अजमल खान, डॉ अंसारी और मौलवी अबुल कलाम साहिब का तार आया कि अपने प्रतिनिधि भेजिए। यहां से लोगों को भेजा और उन्हें बता दिया कि मलकानों से संबंधित प्रश्न उठेगा और कहा जाएगा कि हिन्दु मुसलमान अपनी अपनी जगह बैठ जाएं मगर हिन्दुओं ने बीस हज़ार मलकानों को मुर्तद कर लिया है इसलिए जब यह सवाल पेश हो तो कहें कि हमें बीस हज़ार मुर्तदों को कलमा पढ़ा लेने देजिए तब इस शर्त पर सुलह होगी और हम वहाँ से वापस आ जाएंगे। वरना जब तक एक मलकाना भी मुर्तद रहेगा हम वहाँ से नहीं हटेंगे। इसलिए जब हमारे आदमी सम्मेलन में पहुंचे तो यही सवाल पेश हुआ और उन्होंने यही बात कही कि जो मैंने बताई थी। उस पर मौलवियों ने कहा अहमदियों की हस्ती ही क्या है उन्हें छोड़ दीजिए और हम से सुलह कर लें। श्रद्धानंद जी ने उस समय उनके सामने कहा कि आप के अगर पचास आदमी भी वहाँ हों तो हमें उनकी परवाह नहीं। लेकिन जब तक एक भी अहमदी वहाँ होगा सुलह नहीं हो सकती। अहमदी लोगों को पहले इस क्षेत्र से निकालो और फिर सुलह के लिए आगे बढ़ो।

अत: जमाअत अहमदिया के काम के महत्त्व को वे लोग भी स्वीकार करते हैं जो जमाअत में दाख़िल नहीं हैं बल्कि जो इस्लाम के दुश्मन हैं वे भी स्वीकार करते हैं अत: ख़ुदा की कृपा से हमारी जमाअत को धार्मिक दुनिया में ऐसा महत्त्व प्राप्त हो रहा है कि दुनिया हैरान है और यह सब कुछ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से है और आपके इस काम का कोई इंकार नहीं कर सकता।

ये बातें जो मैंने वर्णन की हैं ये भी चूंकि ईमानियात से सम्बन्ध रखती हैं इसलिए मैं और नीचे उतरता हूं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्मी(ज्ञान सम्बन्धी) काम वर्णन करता हूं।

हज़रत मसीह मौऊद का तीसरा काम

तीसरा काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह है कि अल्लाह की विशेषताओं के बारे में लोगों के विचार में जो फसाद पड़ गया था, उस का आप ने सुधार किया। धर्म में सबसे बड़ी हस्ती ख़ुदा तआला की हस्ती है। मगर उसकी ज़ात के बारे में मुसलमानों और अन्य धर्मों में इतना अंधेर मचा हुआ था और ऐसी बुद्धि के ख़िलाफ बातें वर्णन की जाती थीं कि उनकी मौजूदगी में अल्लाह की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं हो सकता था। इस त्रुटि को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दूर किया।

ख़ुदा तआला के बारे में यह ग़लत विचार फैले हुए थे।

(1) शिर्क जली और और ख़फी में लोग पीड़ित थे (2) कुछ लोग अल्लाह तआला के बारें में यह विश्वास रखते थे कि अगर ख़ुदा है तो वह "इल्लतुल इलल" है। वह उसकी इच्छाशक्ति का इनकार करते थे और समझते थे कि जिस तरह मशीन चलती है इसी तरह ख़ुदा तआला से दुनिया के काम प्रकट हो रहे हैं।

(3) कुछ लोग विचार कर रहे थे कि दुनिया अपने आप ही बनी है और प्राचीन है। ख़ुदा तआला का जोड़ने जाड़ने से अधिक दुनिया से कोई संबंध नहीं है। कुछ मुसलमान भी इस ग़लती में थे ।

(4) कुछ लोग ख़ुदा तआला के रहम से इनकार करने लग गए थे और कहते थे कि ख़ुदा में दया का विशेषण नहीं पाया जाता क्योंकि वह न्याय के ख़िलाफ है।

(5) कुछ लोग ख़ुदा तआला की शक्ति का ऐसा घटिया मूल्यांकन करने लग गए थे कि उन्होंने ख़ुदा तआला के गुण के प्रकट होने को कुछ हज़ार साल में सीमित कर दिया था और विचार करते थे कि बस ख़ुदा तआला के गुण इन्हीं कुछ हज़ार साल में प्रकट हुए हैं और अगर इस दौर को लंबा भी करते थे तो इतना कि मानो इस दुनिया की उम्र लाखों साल ही मानते थे मगर ख़ुदा तआला की विशेषताओं के प्रकट होने को उसी दौर के साथ सीमित करते थे।

(6) कुछ लोग ख़ुदा की शक्ति को ग़लत तरीके से साबित करते हुए कहते हैं कि ख़ुदा झूठ भी बोल सकता है, चोरी भी कर सकता है। अगर नहीं कर सकता तो पता चला कि उस में सामर्थ्य नहीं है।

(7) कुछ लोग ख़ुदा तआला को कानून कज़ा तथा कदर जारी करने के बाद पूरी तरह निरर्थक समझते और इसलिए कहते थे कि दुआ करना व्यर्थ है। जब ख़ुदा का कानून जारी हो गया कि अमुक बात इस तरह हो तो दुआ करना व्यर्थ है। दुआ से इस कानून में रुकावट नहीं पैदा हो सकती।

(8) ख़ुदा तआला की विशेषताओं के आरम्भ का मस्ला बिल्कुल व्यर्थ समझा जाने लगा था लोग ख़ुदा तआला की सब विशेषताओं के एक ही समय में जारी होने का ज्ञान नहीं रखते थे और समझ ही नहीं सकते थे कि ख़ुदा तआला जो "शदीदुल इकाब" है वह इस विशेषण को रखते हुए एक ही समय में "वह्हाब" कैसे हो सकता है। वह हैरान थे कि क्या एक व्यक्ति के लिए कहा जा सकता है कि वह बड़ा उदार है और बड़ा कंजूस भी है। यदि नहीं तो ख़ुदा के लिए कैसे कहा जा सकता है कि वह एक ही समय में "कह्हार" भी है और रहीम भी। चूंकि क़ुरआन में ख़ुदा तआला की ऐसी विशेषताएं आई हैं जो ज़ाहिरी तौर पर आपस में विरोध रखती हैं इसलिए वे लोग हैरान थे।

(9) कुछ लोग इस विचार में पड़े हुए थे कि सब कुछ ख़ुदा ही ख़ुदा है और कुछ इस भ्रम में पड़े हुए थे कि एक सिंहासन है। ख़ुदा तआला उस पर बैठा आदेश करता है।

(10) ख़ुदा तआला की ओर ध्यान ही नहीं रहा था। यहां तक कि जब कोई मकान या भवन उजाड़ हो जाता तो कहते कि अब तो अल्लाह ही अल्लाह है। या किसी के पास न रहता तो कहा जाता है कि अब तो उसके पास अल्लाह ही अल्लाह है जिसका अर्थ था कि ख़ुदा तआला भी एक ख़ुल्लो (बेकार) ही का नाम है। ख़ुदा तआला की मुहब्बत और उसके मिलने की तड़प बिल्कुल मिट गई थी। जिन्न और भूतों की मुलाकात, हुब्बे अमल और द्वेष अमल की इच्छा तो लोगों में थी लेकिन अगर न थी तो ख़ुदा तआला से मुलाकात की इच्छा न थी।

इन मतभेदों के तूफान के समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्रकट हुए और आप ने उन सब ग़लतियों से धर्म को पवित्र कर दिया। सब से पहले मैं शिर्क लेता हूँ। आप ने शिर्क को पूरे तौर पर रद्द किया और तौहीद को अपने पूरे जलाल के साथ प्रदर्शित किया। आप ने एकेश्वरवाद से संबंधित विभिन्न पुस्तकों में लेख लिखे हैं। उनका सारांश यह है कि जो बातें लोगों ने वर्णन की हैं उनके ऊपर और उनसे ऊपर एक और स्थिति पूर्ण तौहीद की है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि खाली आस्था रखना कि प्रत्येक चीज़ में ख़ुदा का हाथ है। यह उच्च तौहीद नहीं। बल्कि सम्पूर्ण तौहीद यह है कि ख़ुदा तआला प्रत्येक चीज़ में अपना हाथ दिखाए। जब ऐसा हो तब ख़ुदा तआला वास्तव में सब चीज़ों में दिखाई देता है। केवल हमारा विचार नहीं है।

यह ऐसी तौहीद है जो आस्था से संबंध नहीं रखती बल्कि मनुष्य के सभी कार्यों पर हावी है। एक मुसलमान के नैतिक, संस्कृति, राजनीतिक, सामाजिक सारांक्ष यह कि सभी प्रकार के जीवन पर हावी है। जब इंसान खाना खाए तो ख़ुदा उसे खाने में जलवा दिखा रहा हो जब पानी पी रहा हो तो भी इसी प्रकार हो, जब दोस्तों से मिले तब भी ऐसा ही हो। अत: प्रत्येक काम जो वह करे ख़ुदा तआला उस के साथ हो और उस में अपनी कुदरत उस के लिए प्रकट कर रहा हो।

यह पूर्ण तौहीद का स्तर है जब किसी को यह प्राप्त हो जाए तो उस के बाद किसी प्रकार की शंका बाकी नहीं रहती और इसी तौहीद पर ईमान

लाना मुक्ति का आधार है।

अब इस से पहले कि मैं उन्हें दूसरी ग़लत फहमियों को दूर करने का उल्लेख करूँ जो ख़ुदा तआला के बारे में लोगों में फैली हुई थीं, मैं यह बताना चाहता हूँ कि इन सब ग़लतियों को दूर करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मूल पेश किया है जो उन सभी ग़लतियों का निवारण कर देता है और वह मूल यह है कि अल्लाह तआला لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ (अश्शुअर:12)है। इसलिए इस के बारे में कोई बात हम सृष्टि पर आधारित कह नहीं सकते। इस बारे में हम जो कुछ कह सकते हैं वह ख़ुद उसी की विशेषताओं पर आधारित होना चाहिए वरना हम ग़लती से ग्रस्त हो जाएंगे। हमें देखना चाहिए कि जो आस्था हम ख़ुदा तआला के बारे में रखते हैं वह उसकी दूसरी विशेषताओं के जिन्हें हम स्वीकार करते हैं अनुरूप है या नहीं। अगर नहीं तो निसन्देह हम ग़लती पर हैं क्योंकि ख़ुदा तआला के गुण विरोधाभास नहीं हो सकते हैं।

इस मूल को बताने से आप ने एक तरफ तो इन त्रुटियों का निवारण कर दिया जो मुसलमानों में पाई जाती हैं और दूसरी ओर ग़ैर धर्मों की ग़लतियों की भी हक़ीक़त खोल दी है।

(2)दूसरी ग़लती अल्लाह तआला से संबंधित विभिन्न धर्मों के अनुकरण कारियों में यह पैदा हो रही थी कि वह उसे "इल्लतुल इलल" बताते थे। अर्थात उसकी इच्छा शक्ति के इनकार करने वाले थे। इस त्रुटि का निवारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की सिफ़त हकीम और क़दीर से किया है। सभी धर्म ख़ुदा तआला के हकीम और क़दीर होने को स्वीकार करते हैं और यह स्पष्ट है कि अगर वह हकीम और क़दीर है "इल्लतुल इलल" नहीं हो सकता बल्कि सामर्थ्य के साथ स्रष्टा है। किसी मशीन को कोई बुद्धिमान कभी हकीम नहीं कहेगा। इसलिए ख़ुदा हकीम है "इल्लतुल इलल" नहीं हो सकता। फिर ख़ुदा तआला सर्वशक्तिमान है और अरबी में "कादिर" के अर्थ मूल्यांकन करने वाले हैं। अर्थात जो प्रत्येक काम का मूल्यांकन करता है और देखता है कि किसके उपयुक्त क्या शक्तियां या क्या उपकरण हैं। जैसे फैसला करे कि गर्मी के लिए क्या नियम हैं और ठंड के लिए किया। किस किस जानवर की कितनी उम्र हो और यह अनुमान कोई इरादा के बिना हस्ती नहीं कर सकती। अत: ख़ुदा तआला के क़दीर और हकीम गुण उसके इरादे को साबित कर रहे हैं और उसे क़दीर और हकीम मानते हुए "इल्ललतुल इलल" नहीं कहा जा सकता।

(3) तीसरे प्रकार के वे लोग थे जो कहते थे कि दुनिया आप ही आप बनी है ख़ुदा का इसमें कोई दखल नहीं अर्थात ख़ुदा रूह और पदार्थ का निर्माता नहीं है। इस का जवाब आप ने ख़ुदा की सिफ़त मालकियत और रहीमियत से दिया और कहा कि ख़ुदा तआला की दो बड़ी विशेषताएं मालकियत और रहीमियत हैं। अब अगर ख़ुदा ने दुनिया पैदा नहीं की तो उस पर आधिपत्य जमाने का भी उसे कोई अधिकार नहीं है। यह अधिकार उसे कहाँ से मिल गया? इसलिए जब तक ख़ुदा तआला को दुनिया का स्रष्टा न मानोगे दुनिया का मालिक नहीं मान सकते।

दूसरा गुण ख़ुदा तआला की रहीमियत है। रहीम के अर्थ हैं वह हस्ती जो मनुष्य के काम का बेहतर अच्छा बदला दे। अब सवाल यह है कि अगर ख़ुदा किसी चीज़ का स्रष्टा नहीं तो वे बदले उसके पास कहां से आएंगे, जो लोगों को अपनी इस विशेषण के अधीन देगा।

(4) चौथे किस्म के वे लोग थे जो ख़ुदा तआला के विशेषण रहीमियत का ही इनकार करने वाले थे उन लोगों को हज़रत मसीह मौऊद ने ख़ुदा तआला के विशेषण रहमानियत और मालकियत से जवाब दिया। जैसे मसीहियों के धर्म की बुनियाद ही इस बात पर है कि चूंकि ख़ुदा आदिल (न्याय करने वाला) है इसलिए वह किसी के गुनाह माफ नहीं कर सकता। तो उसे दुनिया के गुनाहों को क्षमा करने के लिए एक कफ्फारह की आवश्यकता पड़ी ताकि उसकी दया भी स्थापित रहे और न्याय भी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वास्तव में ख़ुदा आदिल है मगर न्याय उसकी सिफ़त नहीं। न्याय उसका विशेषण होता है जो मालिक न हो। मालिक का विशेषण रहम होता है। हां जब मालिक का रहम काम के बराबर प्रकट हो तो उसे भी न्याय कह सकते हैं। चूंकि ख़ुदा तआला मालिक और रहमान भी है इसलिए उसका अन्य बातों पर अटकलें नहीं लगाई जा सकती। देखो ख़ुदा तआला ने मनुष्य को कान, नाक, आँखें बिना किसी कर्म के दी हैं। क्या कोई आपत्ति कर सकता है कि यह उसके न्याय के ख़िलाफ है। तो अगर ख़ुदा तआला बिना मनुष्य के किसी विशेषाधिकार के यह चीज़ें उसे दे सकता है तो वह इंसान के गुनाह क्यों माफ नहीं कर सकता। इसी तरह वह मालिक है और मालिक के कारण माफ करने से उसके न्याय पर आरोप नहीं आता।

(5) पांचवें किस्म के वे लोग थे जो ख़ुदा के गुण सृष्टा को एक ज़माने तक सीमित करते थे। उन्हें आप ने ख़ुदा तआला के गुण क़य्यूम से जवाब दिया। फरमाया ख़ुदा तआला के गुण चाहते हैं कि उन में गतिरोध न हो बल्कि वह हमेशा जारी रहें। "क़य्यूम" के अर्थ हैं बनाए रखने वाला और यह विशेषण सभी विशेषताओं पर हावी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया है कि ख़ुदा तआला के गुण में गतिरोध नहीं हो सकता। आप ने जो मूल पेश किया और जो सिद्धांत समझाया है वह बाकी दुनिया से अलग है। कुछ लोग यह कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने अमुक समय से दुनिया को बनाया। मानो इससे पहले ख़ुदा बेकार था और कुछ लोग कहते हैं कि दुनिया हमेशा से चली आ रही है, मानो वह ख़ुदा तआला की तरह अनन्त है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ये दोनों बातें ग़लत हैं।

अगर कोई यह कहता है कि जब से ख़ुदा है उसी समय से दुनिया का सिलसिला है तो उसे दुनिया को ख़ुदा तआला की तरह सनातन मानना होगा और अगर कोई यह कहे कि जन्म का सिलसिला करोड़ों या अरबों वर्षों में सीमित है तो उसे यह भी मानना होगा कि ख़ुदा तआला अनादि काल से निकम्मा था केवल कुछ करोड़ या कुछ अरब साल से वह सृष्टा बना और ये दोनों बातें ग़लत हैं। अत: सही यही है कि इस बात की पूरी सच्चाई को इंसान पूरी तरह समझ ही नहीं सकता और सच्चाई इन दोनों दावों के बीच में है। यह मसला भी इसी तरह अक्ल को हैरान करने वाला है कि जिस तरह से ज़माना और जगह का मसला है कि इन दोनों चीज़ों को सीमित या असीमित मानना दोनों ही बुद्धि के ख़िलाफ नज़र आते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बहस का ऐसे फैसला किया है कि न ख़ुदा तआला का सृष्टा होने का विशेषण कभी निलंबित हुआ और न दुनिया ख़ुदा के साथ चली आ रही है और सच्चाई दोनों मामलों के बीच है और इसकी व्याख्या आप ने यह फरमाई है कि सृष्टि को अपनी नस्ल में आनादि होना प्राप्त है यद्यपि किसी वस्तु को व्यक्तिगत रूप में अनादि होना प्राप्त नहीं। कोई कण, कोई आत्मा, कोई चीज़ अल्लाह तआला के अतिरिक्त ऐसी नहीं कि जिसे व्यक्तिगत अनादि गुण प्राप्त हो। लेकिन यह सच है कि ख़ुदा तआला हमेशा से अपनी विशेषता सृष्टा को प्रकट करता चला आया है लेकिन इसके साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने व्यक्तिगत अनादि होने का भी वह अभिप्राय नहीं लिया जो दूसरे लोग लेते हैं जो यह है कि जब से ख़ुदा है तब से प्राणी है। यह एक बेहूदा आस्था है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसके मानने वाले नहीं थे।

सृष्टा और सृष्टि एक ही अर्थों में अनादि नहीं हो सकते। आवश्यक है कि सृष्टा को प्राथमिकता प्राप्त हो और सृष्टि को पीछे होना। यही कारण है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह कभी नहीं लिखा कि जीव भी सनातन है बल्कि यह कहा है कि जीव को अपनी नसल में अनादि

होना हासिल है और सनातन और अनादि में अंतर है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट सृष्टि को अपनी नसल में अनादि होना तो हासिल है परन्तु स्वंय अनादि होना सम्भव नहीं। सृष्टा को प्राणियों पर बहरहाल प्राथमिकता है।

(6) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत से पहले अल्लाह की ज़ात से संबंधित एक और बहस भी हो रही थी और वह यह कि कुदरत के अर्थ को ग़लत समझा जा रहा था। कुछ लोग यह कह रहे थे कि ख़ुदा कादिर है इसलिए वे झूठ भी बोल सकता है या नष्ट भी हो सकता है। कुछ कहते कि नहीं इसकी विशेषताएं इतनी ही हैं जो उसने वर्णन की हैं और वह झूठ नहीं बोल सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस झगड़े का भी फैसला किया और फरमाया कि ख़ुदा तआला के क़दीर की सिफ़त को उसकी दूसरी विशेषताओं के तुलना में रखो और फिर इस बारे में विचार करो। जहाँ यह नज़र आता है कि ख़ुदा क़दीर है वहाँ यह भी तो है कि ख़ुदा पूर्ण है और विनाश पूर्णता के ख़िलाफ है। देखो अगर कोई कहे कि मैं बड़ा पहलवान हूं, बड़ा शक्तिशाली हूं तो क्या उसे यह कहा जाएगा कि तुम्हारी ताकत हम तब स्वीकार करेंगे जब तुम ज़हर खा कर मर जाओ। यह उस की शक्ति का चिन्ह नहीं है बल्कि विपरीत है। अत: ख़ुदा तआला के पूर्ण होने का यह अर्थ नहीं कि उसमें दोष और कमज़ोरियां भी हों। दरअसल इन लोगों ने कुदरत (सामर्थ्य) के अर्थ नहीं समझे। क्या अगर कोई कहे कि मैं बहुत शक्तिशाली हूँ तो उसे कहा जाएगा कि अगर शक्तिशाली हो तो गन्दगी खाओ। यह शक्ति का प्रतीक नहीं बल्कि कमज़ोरी है और कमज़ोरी ख़ुदा तआला में पैदा नहीं हो सकती क्योंकि वह परिपूर्ण है।

(7) एक सातवां गिरोह था। जिस की यह आस्था थी कि ख़ुदा तआला क़ज़ा व क़द्र जारी करने के बाद खाली हाथ होकर बैठा है। इसलिए किसी की दुआ सुन नहीं सकता। उनके संबंधित हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह फरमाया वास्तव में ख़ुदा तआला ने क़ज़ा व क़द्र जारी की है मगर उनमें से एक कज़ा यह भी है कि जब बंदे दुआएं मांगें तो उनकी दुआ सुनूंगा। यह कितना छोटा लेकिन कैसा संतोषजनक जवाब है। फरमाते हैं नि:सन्देह ख़ुदा ने यह फैसला किया है कि बंदा बद परहेज़ी करे तो बीमार हो मगर इसके साथ ही यह भी फैसला किया है कि अगर वह गिड़गिड़ा कर दुआ मांगे तो अच्छा भी कर दिया जाए। इसलिए क़ज़ा व क़द्र के जारी होने के बावजूद ख़ुदा तआला की कुदरत का कर्म भी जारी है।

(8) ख़ुदा तआला के गुणों के आरम्भ के बारे में भी विवाद पैदा हो गया था। आप ने इसे भी दूर किया और बताया कि ख़ुदा तआला का हर एक विशेषण का एक क्षेत्र है एक ही समय में वह दयालु है और उसी समय शदीदुल इक़ाब (अत्यधिक बदला लेने वाला) भी है। एक आदमी जिसे फांसी की सज़ा मिली वह चूंकि मुजरिम है इसलिए ख़ुदा तआला की सिफत शदीदुल इक़ाब के अधीन सज़ा मिली. परन्तु जहां इस की जान निकल रही थी वहां ऐसे समर्थन जो मौत से सम्बन्धित नहीं हैं वे भी इस के लिए जारी थीं। इंसानों की यह हालत नहीं हो सकती कि एक ही समय में उनकी सारी विशेषताऐं प्रकट हो। यह नहीं हो सकता कि एक इंसान दया कर रहा हो और उसी समय वैसे ही ज़ोर से अज़ाब (प्रकोप) को प्रकट भी कर रहा हो। मगर ख़ुदा तआला चूंकि सम्पूर्ण है इसलिए एक ही समय में उसकी सारी विशेषताएं बराबर ज़ोर से प्रकट हो सकती हैं। यदि ऐसा न हो तो दुनिया तबाह हो जाए। अगर ख़ुदा तआला का क्रोध हो रहा हो और साथ दया न हो तो दुनिया तबाह हो जाए। इसी तरह अगर ख़ुदा तआला का केवल रहम जारी हो और क्रोध बंद हो जाए तो मुजरिम छूट जाएं और इस प्रकार भी तबाही बरपा हो जाए। अत: ख़ुदा तआला की सारी विशेषताएं एक ही समय में अपनी सीमा के भीतर काम कर रही होती हैं।

(9) नौवीं ग़लत आस्था ख़ुदा तआला की हस्ती के बारे में यह फैल रही थी कि कुछ लोग विचार कर रहे थे कि सब कुछ ख़ुदा ही ख़ुदा है। आपके बताए हुए नियम से इस आस्था का भी रद्द हो गया। क्योंकि ख़ुदा तआला एक विशेषण मालकियत भी है और जब तक अन्य प्राणी न हो ख़ुदा मालिक नहीं हो सकता।

(10) इन सब बातों के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण काम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला की हस्ती के बारे में किया यह था कि आप ने लोगों का ध्यान ख़ुदा तआला की ओर फेरा और उनमें ख़ुदा तआला का सच्चा प्रेम पैदा कर दिया। लाखों इंसानों को आप ने ख़ुदा तआला का प्यारा बना दिया और वे लोग जिन्होंने अभी तक आप को नहीं माना उनका भी ध्यान ख़ुदा तआला की ओर इस रंग में हो रहा है जो आपके दावे से पहले नहीं था।

हज़रत मसीह मौऊद का चौथा काम

चौथा काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि आपने अल्लाह तआला के कलाम की वास्तविकता को प्रकट किया है और इस बारे में जो विभिन्न विचार लोगों में फैले हुए थे उनका सुधार किया है।

प्रथम इलहाम :

इलहाम से संबंधित विभिन्न और ख़तरनाक विचार लोगों में फैले हुए थे। लोग समझते थे

(1) इलहाम आसमानी होता है या शैतानी (2) फिर लोग यह समझते थे कि इलहाम केवल नबियों को हो सकता है। (3) कुछ लोग समझते थे कि इलहाम शब्दों में नहीं हो सकता। दिल के प्रकाश से प्राप्त ज्ञान का नाम ही इलहाम है (4) कुछ लोग इस शंका का शिकार हो रहे थे कि इलहाम और सपना मानसिक स्थिति का परिणाम होते हैं (5) कुछ लोग इस शंका में थे कि शाब्दिक इलहाम की आस्था रखना मनुष्य की मानसिक विकास में रुकावट है। (6) आमतौर पर लोग इस ग़लती में थे कि अब इलहाम का सिलसिला बंद हो चुका है। ये और इस तरह के और शंकाए इलहाम से संबंधित लोगों में पाई जाती थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन सब का सुधार किया है।

यह जो मानना था कि इलहाम केवल आसमानी या शैतानी होता है इसके कई ख़तरनाक परिणाम पैदा हो रहे थे। कुछ दावा करने वालों को जब लोग सच्चा समझते तो उनकी वह्यी को भी आसमानी समझ लेते। कुछ ख़्वाबें जब लोगों की पूरी न होतीं तो वे इलहाम और सपने की हकीकत से ही इनकार करने वाले हो जाते। आप ने इस समस्या को हल करके दुनिया को कई परीक्षाओं से बचा लिया।

(इसके बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों से इलहाम की किस्में वर्णन करते हुए बताया कि दो प्रकार के होते हैं। सच्चा इलहाम और झूठा इलहाम। सच्चे इलहाम कई प्रकार के होते हैं (1) आसमानी इलहाम (2)शैतानी इलहाम (3)नफ्सानी इलहाम। इसी प्रकार आप ने इलहाम तथा ख़वाब के बारे में विस्तार से बताया।)

(2) दूसरी ग़लती लोगों को यह लगी हुई थी कि इलहाम या वह्यी केवल नबी को हो सकता है। यह विचार बहुत ग़लत और उम्मत में पतन का विचार पैदा करने का कारण और अल्लाह तआला के सानिध्य का वास्तविक दरवाज़ा बन्द करने वाला था। इस नतीजे में केवल इंसानी कोशिशों पर ख़ुश हो जाते थे और ख़ुदा तआला के फज़ल को जो एक ही माध्यम इस की प्रसन्नता का पता लगाने का है, भुला बैठे थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विचार का भी सुधार किया और फरमाया कि इलहाम प्रत्येक व्यक्ति को हो सकता है। हां इलहाम के भी स्तर होते हैं। नबी को नबियों वाला इलहाम होता है, मोमिन को मोमिनों

वाला और काफ़िर को काफिरों वाला।

(3) तीसरी ग़लती यह लगी हुई थी कि कुछ लोगों का मानना था कि इलहाम शब्दों में नहीं होता बल्कि दिल की रौशनी का नाम ही इलहाम है। आप ने उन लोगों के विचार का भी सुधार फरमाया। नास्तिकों, बहाइयों और प्राय: ईसाईयों का यही विचार है। शिक्षित मुसलमान भी अक्सर इसी भ्रम में पड़े हैं। आप ने ऐसे लोगों के सामने पहले अपना अनुभव प्रस्तुत किया और कहा, मैं इलहाम के शब्दों को सुनता हूँ इसलिए मैं इस विचार से इनकार करता हूँ कि इलहाम शब्दों में नहीं होता। दूसरा जवाब आप ने यह दिया कि इलहाम और सपना मानव प्रकृति में सम्मिलित हैं। हर इंसान में यह इच्छा है कि ख़ुदा उसे मिले और उस की प्रकृति की इच्छा का जवाब भी ज़रूर होना चाहिए। खाली दिल का विचार इस मुहब्बत के जोश का जवाब नहीं हो सकता। जो इंसान के दिल में ख़ुदा तआला की मुलाकात के बारे में रखा गया है। जवाब केवल इलहाम और सपना ही हो सकते हैं। इसी तरह आपने फ़रमाया कि सपने और इलहाम केवल नबियों से संबंध नहीं रखते बल्कि दुनिया के अक्सर लोग इससे कम तथा अधिक हिस्सा पाते हैं।

(4) चौथी ग़लती कुछ लोगों को इलहाम से संबंधित यह लगी हुई थी कि वह समझते थे कि इलहाम मानसिक स्थिति का परिणाम होता है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया बेशक ऐसा भी होता है लेकिन यह कहना कि हमेशा ऐसा ही होता है और कभी बाहर से इलहाम नहीं होता ग़लत है। क्योंकि नबियों और मोमिनों के कुछ इलहाम ऐसे ज्ञान पर आधारित होते हैं जिन्हें मानवीय दिमाग़ खोज नहीं सकता।

मुझे आश्चर्य है कि जो लोग इलहाम को मानसिक विकृतियों का परिणाम मानते हैं वह यह विचार नहीं करते कि मानव मस्तिष्क बुढ़ापे में कमज़ोर हो जाता है। लेकिन नबियों पर बुढ़ापे का कभी कोई असर नहीं होता बल्कि उनके इलहामों में अधिक प्रताप पैदा उठता है।

(5) पांचवां संदेह इलहाम के बारे में यह कहा जाता है कि इल्हाम का अस्तित्व मानव के मानसिक और बौद्धिक विकास के विरुद्ध है क्योंकि जब इलहाम से एक बात ज्ञात हो गई तो फिर लोगों को सोचने और विचार करने की क्या ज़रूरत है और क्या मौका है?

इस ग़लती से आप ने लोगों का ध्यान इस बात की ओर फेर कर दूर किया कि इलहाम मानसिक विकास का विरोधी नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला ने मानसिक विकास के लिए बनाया है। संसार को देखने से मालूम होता है कि आध्यात्मिक भौतिक दो नियम इस दुनिया में समानांतर और बराबरी से चल रहे हैं। भौतिक सिलसिले में मानव मार्गदर्शन के लिए बुद्धि के साथ अनुभव को लगाया गया है ताकि बुद्धि की कमज़ोरी को पूरा कर दे और मानव त्रुटि की संभावना से बच जाए। आध्यात्मिक सिलसिला में इस जगह इलहाम को बुद्धि के साथ लगाया गया है ताकि बुद्धि ग़लती करके मनुष्य को विनाश के गड्ढे में न गिरा दे।

(6) छठी शंका जिसमें लोग पड़े हुए थे यह थी कि इलहाम का सिलसिला अब बिल्कुल बंद हो चुका है। यह आस्था मुसलमानों की ही नहीं थी बल्कि अन्य धर्मों की भी यही आस्था थी। यहूदी, ईसाई, हिंदू सब पहले ज़माने में इलहाम को मानने वाले हैं लेकिन अब यह दरवाजा बंद बताते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ख़तरनाक आस्था की ग़लती भी दुनिया पर प्रकट की और बताया कि इलहाम तो ख़ुदा तआला की तरफ से बन्दों के लिए एक पुरस्कार है और बन्दा और ख़ुदा तआला में प्यार का न टूटने वाला संबंध बनाने का माध्यम है और विश्वास तथा विश्वसनीयता तक पहुंचाने का माध्यम है इस का सिलसिला बंद करके धर्म और आध्यात्मिकता का बाकी क्या रह जाता है। मुसलमानों को आपने ध्यान दिलाया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो इसलिए भेजे गए थे कि दुनिया में ख़ुदा तआला की रहम की बारिश और भी शान से अवतरित है। अत: आप के आने के कारण से ख़ुदा तआला का यह पुरस्कार बंद नहीं हुआ बल्कि इसमें और भी अधिक तरक्की हो गई।

दूसरा उत्तर आप ने यह दिया कि इलहाम केवल शरीअत नहीं होता बल्कि इस के और भी उद्देश्य हैं जिन में से एक यह है कि बन्दों को ख़ुदा तआला पर पूर्ण विश्वास दिलाए। देखो जिस से ख़ुदा तआला बातें करे, उस के मुकाबला में वह व्यक्ति जो केवल यह कहे कि ख़ुदा है ईमान की दृष्टि से क्या वास्तविकता रख सकता है। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यद्यपि शरीअत को पूर्ण कर गए हैं। परन्तु मुसलमानों को विश्वास तथा मन की शान्ति के स्तर तक पहुचाने के लिए फिर भी इलहाम की ज़रूरत शेष रहती है।

तीसरा उत्तर आप ने यह दिया कि ख़ुदा तआला इलहाम के द्वारा मआरिफ से सूचित करता है वे आध्यात्मिक ज्ञान जो सैंकड़ों वर्षों की मेहनत और कोशिश से भी मालूम न हो सके ख़दा तआला इलहाम के द्वारा एक सैकण्ड में बता देता है। अत: इस शिक्षा के आसान रास्ता को उम्मते मुहम्मदिया के लिए कैसे बन्द किया जा सकता है। आप ने अपने वजूद से साबित किया कि इलहाम जितनी जल्दी और जितना पूर्ण रूप से आध्यात्मिक मआरिफ को खोलता है उस का उदाहरण इंसानी कोशिशों में नहीं पाया जाता। अत: जो बातें उलमा लगभग तेरह सौ सालों से बहसों में प्राप्त न कर सके, आप ने कुछ सालों में इलहाम की सहायता से हल कर के रख दिए और उन की सहायता से अहमदी उलमा दुनिया भर के धर्मों पर इस्लाम को विजयी कर रहे हैं।

चौथा उत्तर आप ने यह दिया कि इलहाम का एक उद्देश्य मुहब्बत को प्रकट करना भी है. जब तक ख़ुदा तआला अपने विशेष बन्दों पर इलहाम नाज़िल न करे, उस समय तक किस प्रकार उन की तड़प दूर हो सकती है।

अत: आपने साबित कर दिया कि इलहाम का सिलसिला जारी है क्योंकि अगर इलहाम को बंद मानें तो ख़ुदा तआला की कई विशेषताओं में गतिरोध मानना होगा। इस जगह आपत्ति की जा सकती है कि ख़ुदा की विशेषताओं में अस्थायी गतिरोध तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी माना है। अत: आप फरमाते हैं कि कुछ समय में ख़ुदा तआला अपनी एक सिफत को बंद कर देता है तो दूसरी सिफ़त जारी हो जाती है। अगर इस तरह हो सकता है तो यह मानने में क्या हर्ज है कि इलहाम को ख़ुदा ने कयामत तक बंद कर दिया? इस के बारे में याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने गतिरोध तब माना है जब दो गुण आपस में टकराएँ। और जो गुण न टकराएँ उनके बारे में गतिरोध नहीं माना। चूंकि इलहाम के जारी होने में किसी एक विशेषण से भी टकराव नहीं इसलिए इस बारे में गतिरोध मानना ना वाजिब है।

आप ने क़ुरआन की आयतों से भी साबित किया है कि इलहाम के जारी रहने का ख़ुदा तआला ने वादा किया है और अल्लाह अपने वादे को झूठा नहीं करता।

क़ुरआन के बारे में ग़लतफहमियों का निवारण

कलाम इलाही में से विशेष रूप से क़ुरआन के बारे में कई ग़लतियाँ लोगों में फैली हुई थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें भी दूर किया है। जैसे (1) एक ग़लती कुछ मुसलमानों को लगी हुई थी कि वह क़ुरआन के बारे में यह आस्था रखते थे कि इसमें बदलाव हो गया है और कुछ हिस्से छपने से रह गए हैं। इस विचार का भी खंडन आप ने फरमाया और बताया कि क़ुरआन पूर्ण किताब है। मनुष्य की जितनी ज़रूरतें धर्म से संबंध रखने वाली हैं वे सब इस में वर्णन कर दी गई हैं। अगर इस के कुछ पारे या हिस्से ग़ायब होते तो इसकी शिक्षा में ज़रूर कोई कमी होनी

चाहिए थी और क्रम ख़राब हो जाना चाहिए था मगर नहीं उसकी शिक्षा में न कोई त्रुटि है और न क्रम में त्रुटि, जिससे पता चला कि क़ुरआन करीम का कोई हिस्सा ग़ायब नहीं हुआ।

(2) दूसरा विचार मुसलमानों में यह पैदा हो गया था कि क़ुरआन का एक हिस्सा रद्द है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जवाब सूक्ष्म ढ़ंग में दिया और वह इस तरह कि जिन आयतों को लोग रद्द बताते थे, उनमें से ऐसे ऐसे मआरिफ़ वर्णन फरमाए जिन्हें सुनकर दुश्मन भी हैरान हो गए और आप के बताए हुए नियमों के अनुसार एक आयत भी क़ुरआन की ऐसी नहीं जो आवश्यक साबित न की जा सके। और अब वही ग़ैर अहमदी जो कुछ आयतों को रद्द कहते थे इस्लाम के दुश्मनों के सामने उन्ही आयतों को पेश करके इस्लाम की श्रेष्ठता साबित करते हैं। जैसे "लकुम दीनकुम वलिया दीन" की आयत जिसे रद्द कहा जाता था अब उसी को विरोधियों के सामने पेश किया जाता है।

(3) तीसरी ग़लती क़ुरआन के बारे में लोगों को यह लग रही थी कि अक्सर हिस्सा मुसलमानों का यह विचार करता था कि इस के मआरिफ़ का सिलसिला पिछले समय में समाप्त हो गया है इस भ्रम का निवारण भी आप ने किया और उसके ख़िलाफ बड़े ज़ोर से आवाज़ उठाई और साबित किया कि न केवल यह कि पिछले दिनों में इसके मआरिफ़ खत्म नहीं हुए बल्कि आज भी खत्म नहीं हुए और भविष्य में भी खत्म न होंगे। आप फरमाते हैं

" जिस प्राकर प्रकृति के आश्चर्य किसी पहले ज़माना तक समाप्त नहीं हो गए नए से नए होते जाते हैं यही हालत पवित्र क़ुरआन की है ताकि ख़ुदा तआला के कथन तथा कर्म में समानता प्रमाणित हो।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 258 इज़ाला औहाम भाग 1 पृष्ठ 158)

अत: बहुत सी भविष्यवाणियां जो इस ज़माने के बारे में थीं और जिन्हें पहले ज़माने के लोग नहीं समझते थे आप ने क़ुरआन से निकाल कर समझाईं।

आप से पहले मौलवी यही कहा करते थे कि अमुक बात अमुक तफसीर में लिखी है और अगर कोई नया प्रस्तुत करता तो कहते बताओ किस तफसीर में लिखी है मगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि जो ख़ुदा इन तफसीरों के व्याख्याकारों को क़ुरआन सिखा सकता है, वह हमें क्यों नहीं सिखा सकता और इस तरह एक कुएं के मेंढक की स्थिति से निकाल कर आप ने हमें समुद्र का तैराक बना दिया।

(4) चौथी ग़लती लोगों को यह लग रही थी कि क़ुरआन के विषय में कोई विशेष क्रम नहीं है। वे यह नहीं मानते थे कि आयत के साथ आयत और शब्द के साथ शब्द का जोड़ है। बल्कि वह तकदीम तथा ताख़ीर (आगे-पीछे) के नाम पर क़ुरआन का क्रम बदल देते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ख़तरनाक ग़लती को भी दूर किया और बताया कि तकदीम और ताख़ीर वास्तव में जायज़ होती है मगर कोई यह बताए कि क्या सही क्रम से वह बेहतर हो सकती है। अगर क्रम तकदीम और ताख़ीर (प्रथम तथा पूर्व करने) से उच्च है तो क़ुरआन की तरफ निम्नतर बात क्यों सम्बंधित करते हैं।

(5) पांचवीं ग़लती मुसलमानों में भी और ग़ैर मुस्लिमों में क़ुरआन के अर्थों के बारे में यह पैदा हो गई थी कि क़ुरआन में विषय की पुनरावृत्ति है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह साबित किया कि क़ुरआन में कभी विषय की पुनरावृत्ति नहीं है। बल्कि हर शब्द जो आता है वह नया विषय और नई ख़ूबी लेकर आता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन की आयतों को फूल से उपमा दी है। अब देखो कि फूल में ज़ाहिरी तौर पर हर सीमा पत्तियों की पुनरावृत्ति मालूम होती है लेकिन वास्तव में प्रत्येक क्षेत्र, फूल की सुन्दरता के क्रम को पूर्ण कर रहा होता है क्या फूल पत्तियों की एक सीमा को अगर तोड़ दिया जाए तो फूल सही फूल रहेगा? नहीं। यही बात क़ुरआन में है। जिस तरह फूल में हर पत्ती नया सौंदर्य पैदा करती है और ख़ुदा तआला पत्तियों की एक श्रृंखला के बाद दूसरी बनाता है और तब ही समाप्त करता है जब हुसन पूरा हो जाता है इसी तरह क़ुरआन में हर बार का विषय एक नया अर्थ और नए उद्देश्य के लिए आता है और पूरा क़ुरआन मिलकर एक पूर्ण वजूद बनता है।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन के अर्थ वर्णन करके पुनरावृत्ति की आपत्ति करने वालों को ऐसा जवाब दिया है कि मानो उनके दांत तोड़ दिए हैं।

(6) छठी ग़लती क़ुरआन के बारे में मुसलमानों को यह लग रही थी कि क़ुरआन में नसीहत के लिए पुराने किस्से वर्णन किए गए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस संदेह का भी निवारण किया है और प्रमाणित किया कि क़ुरआन में केवल इबरत के लिए किस्से वर्णित नहीं। यद्यपि क़ुरआन के किस्सों से इबरत भी प्राप्त होती है, लेकिन वास्तव में वे उम्मते मोहम्मदिया के लिए भविष्यवाणियां हैं और जो कुछ इन घटनाओं में कहा गया है, वह उसी प्रकार भविष्य में आने वाला है और यही कारण है कि क़ुरआन लगातार किस्सा वर्णन नहीं बताता बल्कि चयनित टुकड़ा का उल्लेख करता है।

(7) सातवां संदेह यह पैदा हो गया था कि क़ुरआन में इतिहास के ख़िलाफ बातें हैं। यह संदेह मुसलमानों में भी पैदा हो गया था और ग़ैर मुसलमानों में भी। सर सैय्यद अहमद जैसे योग्य व्यक्ति ने भी आपत्ति से घबरा कर यह जवाब पेश किया कि क़ुरआन में ख़िताबियात से काम लिया गया है। अर्थात ऐसी घटनाओं को या आस्थाओं को दलील के रूप में पेश किया है जो यद्यपि उचित नहीं मगर संबोधित उनकी प्रमाणिकता को मानता है इसलिए उसके समझाने के लिए उन्हें सही मान कर पेश कर दिया गया है।

लेकिन यह जवाब वास्तव में स्थितियों को और भी ख़तरनाक कर देता है, क्योंकि सवाल हो सकता है कि किस स्रोत से हमें मालूम हो कि क़ुरआन में कौन सी बात ख़िताबी रूप में पेश की है और कौन-सी सच्चाई के रूप में। इस दलील के अधीन तो कोई व्यक्ति सारे क़ुरआन को ही ख़िताबियात की किस्म का करार दे दे तो इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता और दुनिया में कुछ भी शेष नहीं रहता। ख़िताबी दलील के लिए आवश्यक है कि ख़ुद लेखक ही बताए कि वह ख़िताबी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उपरोक्त आपत्ति के जवाब में ख़िताबियात के सिद्धांत को धारण नहीं किया बल्कि उसे रद्द किया है और यह नियम पेश किया है कि क़ुरआन ख़ुदा तआला का कलाम है। इस आलेमुल ग़ैब(भविष्य का जानने वाले) से जो भी वर्णन हुआ है वह अवश्य सही है और इस के मुकाबला पर दूसरी तारीख़ों की जो अपनी कमज़ोरी पर आप गवाह हैं बिल्कुल अक्ल के ख़िलाफ है। हाँ, यह आवश्यक है कि क़ुरआन जो कुछ वर्णन करता है इसके अर्थ स्वयं क़ुरआन के सिद्धांत के अनुसार किए जाएँ। इसे एक किस्सों की किताब न बनाया जाए और उसकी हिकमत वाली शिक्षा को स्तरीय वर्णनों का संग्रह न समझ लिया जाए।

(8) आठवीं ग़लती जिस में लोग थे यह थी कि क़ुरआन कुछ ऐसे छोटे मामलों का वर्णन करती है जिनका वर्णन करना ज्ञान और मानव विकास के लिए उपयोगी नहीं हो सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसे भी ग़लत साबित किया और बताया कि क़ुरआन में कोई व्यर्थ बात वर्णन नहीं हुई। बल्कि जितने अर्थ या घटनाएं वर्णित हैं बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के रूप में हज़रत सुलैमान की एक घटना को लेता हूँ। क़ुरआन में आता है कि उन्होंने एक महल ऐसा तय्यार किया था जिस का फर्श शीशा का था और इस के नीचे पानी बहता था। रानी सबा जब उन के पास आई तो उन्होंने उस में दाख़िल होने को कहा लेकिन रानी ने समझा कि इस में पानी है और वह

डरी। हज़रत सुलैमान ने बताया कि डरो नहीं इस में पानी नहीं बल्कि शीशे के नीचे पानी है। क़ुरआन करीम के शब्द हैं।

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

(सूरह अन्नमल 45)

अर्थात सबा की रानी को हज़रत सुलैमान की तरफ से कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो जा। जब वह दाख़िल हुई तो उसे मालूम हुआ कि फर्श के स्थान पर गहरा पानी है तब सुलैमान ने उसे कहा कि तुम्हें ग़लती लगी है यह पानी नहीं है। पानी नीचे है और ऊपर शीशे के फर्श है तब उस ने कहा हे मेरे रब्ब! मैंने आपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं सुलैमान के साथ सब जहानों के रब्ब पर ईमान लाती हूं।

मुफस्सरीन इन आयतों के आश्चर्य जनक अर्थ करते हैं। कुछ टिप्पणीकार कहते हैं हज़रत सुलैमान इस से (रानी सबा से) शादी करना चाहते थे। मगर जिन्न ने उन्हें ख़बर दी थी कि उसकी पिंडलियों में बाल हैं। हज़रत सुलेमान ने उसकी पिंडलियां देखने के लिए इस तरह का महल बनवाया। मगर जब उसने पाजामा उठाया तो मालूम हुआ की पिंडलियों पर बाल नहीं।

कुछ कहते हैं कि पिंडलियां देखने के लिए हज़रत सुलैमान ने इतना प्रबन्ध किया करना था। वास्तविक बात यह है कि उन्होंने इस रानी का तखत मंगवाया था। इस पर उन्होंने ख़याल किया कि मेरी बे इज़्ज़ती हुई है कि मैं ने इस से तख़त मांगा इस बे इज़्ज़ती को दूर करने के लिए आप ने ऐसा किला बनवाया ताकि वह अपनी ताकत स्थापित कर सकें।

मगर क्या कोई समझदार कह सकता है कि ये बातें ऐसी प्रमुख हैं कि ख़ुदा के कलाम और विशेष कर के आख़री शरीअत के पूर्ण कलाम में इन बातों का वर्णन किया जाए। जिन का न धर्म से सम्बन्ध है न इर्फान से और क्या समझ में आ सकता है कि ख़ुदा तआला के नबी ऐसी बातों में जिन को यहां वर्णन किया गया है कैसे मशग़ूल हो सकते हैं।?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत की तफसीर फरमाई है कि इस ने हकीकत को ज़ाहिर कर दिया है और स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो गया है कि पवित्र क़ुरआन में जो कुछ वर्णन हुआ है ईमान तथा इर्फान की तरक्की के लिए है। आप फरमाते हैं कि पवित्र क़ुरआन से मालूम होता है कि रानी सबा एक मुशरिकह औरत थी और सूरज की इबादत करने वाली थी। हज़रत सुलैमान उसे सबक देना चाहते थे और शिर्क छुड़ाना चाहते थे। अत: आप ने शब्दों में दलील देने के साथ साथ यह तरीका भी पसंद किया कि व्यवहार में इस आस्था की ग़लती उस पर प्रदर्शित करें और इस मुलाकात के लिए एक ऐसे किले को बनाया जिसमें शीशे का फर्श था और नीचे पानी बहता था। जब रानी इस फर्श पर से चलने लगी तो उसे पानी की एक झलक दिखी जिसे देखकर उसने अपना लिबास ऊंचा कर लिया। यह कि वह घबरा गई (कशफे साक के दोनों ही अर्थ हैं।) इस पर हज़रत सुलैमान ने उसे सांत्वना दी और कहा कि जिसे आप पानी समझती हो यह तो वास्तव में शीशा का फर्श है जिसके नीचे पानी है। चूंकि पहले दलील से शिर्क की ग़लती उस पर साबित हो चुकी थी उसने तुरंत समझ लिया कि उन्होंने एक व्यावहारिक उदाहरण देकर मुझ पर शिर्क की वास्तविकता खोल दी है और वह इस तरह कि जिस तरह पानी की झलकता शीशा से तुझे नज़र आई है और तूने उसे पानी समझ लिया है ऐसा ही ख़ुदा तआला का नूर आकाशीय पिंडों में से झलक है और लोग उन्हें ख़ुदा ही समझ लेते हैं। हालांकि वह ख़ुदा तआला के नूर से नूर प्राप्त कर रहे होते हैं। अत: इस दलील द्वार वह तुरंत प्रभावित हुई और अपने आप कह उठी कि اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ। कि मैं उस ख़ुदा पर ईमान लाती हूँ जो सारे जहानों का ख़ुदा है।

अब देखो यह कैसा महत्त्वपूर्ण और दार्शनिक लेख है और इस पर एक किताब लिखी जा सकती है। मगर पहले यह कहा जाता था कि बालों वाली पिंडलियां देखने का लिए महल बनाया गया था। क्या जिन महिलाओं की पिंडलियों पर बाल हैं उनकी शादी नहीं होती? और नबी ऐसे हालात में हो सकता है? अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन के मज़मूनों (विषयों) के महत्त्व को स्थापित किया और उसकी ओर जो व्यर्थ मामले सम्बन्धित किए जाते थे उन से उसे पवित्र करार दिया।

(9) नौवीं ग़लती यह लग रही थी कि कुछ लोग समझते थे कि क़ुरआन के बहुत से दावे बिना दलील के हैं, उन्हें दलील से साबित नहीं किया जा सकता। मुसलमान कहते क़ुरआन चूंकि अल्लाह तआला का कलाम है इसलिए इसमें जो कुछ कहा गया है उसे हम मानते हैं और दूसरे लोग कहते ये बेहूदा बातें हैं उन्हें हम कैसे मान सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि क़ुरआन का प्रत्येक दावा अपने साथ स्पष्ट दलील रखता है और क़ुरआन अपने हर दावा की ख़ुद दलील देता है और कहा यही बात क़ुरआन को दूसरी इलहामी किताबों से अलग करती है। तुम कहते हो क़ुरआन की बातें बिना दलील हैं, लेकिन क़ुरआन में यही विशेषता नहीं कि इसकी बातें दलील से साबित हो सकती हैं, लेकिन यह भी है कि वह अपनी बातों की दलीलें ख़ुद देता है। वह किताब सही ही क्या होगी जो हमारी दलीलों की मोहताज हो। बात ख़ुदा वर्णन करे और दलील हम ढूँढें। यह तो ऐसा ही उदाहरण हुआ जैसे राजाओं महाराजाओं के दरबारों में होता है कि जब राजा साहिब कोई बात करते हैं तो उनके अनुचर हाँ जी हाँ जी कहकर समर्थन और पुष्टि करने लग जाते हैं। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया कि क़ुरआन का कोई दावा ऐसा नहीं जिन की दलील बल्कि दलीलें ख़ुद उस ने न दी हों और इस विषय को आप ने इतने व्यापक रूप से वर्णन किया कि दुश्मनों पर इस की वजह से मौत आ गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अमृतसर में ईसाइयों से मुबाहिसा हुआ जो " जंगे मुकद्दस " के नाम से प्रकाशित हुआ, इसमें आपने ईसाइयों के सामने यही बात प्रस्तुत की कि दोनों पक्ष जो दावा करें इसका सबूत अपनी ईश्वरीय किताब से दें और फिर उस की दलीलें भी इलहामी किताब से ही पेश करें। ईसाई दलीलें क्या पेश करते वह यह दावा भी इंजील से न निकाल सके कि मसीह ख़ुदा का बेटा है।

(10) दसवीं ग़लती कुछ लोगों को यह लगी हुई थी कि पवित्र क़ुरआन विश्वसनीय ज्ञान को अस्वीकार करता और उनके ख़िलाफ बातें बताता है। इस ग़लती को भी आप ने दूर किया और बताया कि क़ुरआन ही तो एक किताब है जो प्रकृति या ख़ुदा के कर्म को ज़ोर के साथ प्रस्तुत करती है और इसके महत्त्व को स्वीकार करती है और ज़ाहरी सिलसिला अर्थात प्रकृति को भीतरी सिलसिला अर्थात कलामे इलाही के सदृश्य बताती है। इसलिए यह कहना ग़लत है कि क़ुरआन विश्वसनीय ज्ञान के ख़िलाफ बातें करता है। ख़ुदा तआला का वचन और उसका कार्य एक दूसरे के कभी ख़िलाफ नहीं हो सकते। जो बातें क़ुरआन करीम में कुदरत के कानून के विरुद्ध बताई जाती हैं। आप ने इन के बारे में फरमाया कि वे दो अवस्थाओं से ख़ाली नहीं या तो यह कि जिस बात को लोगों ने कानूने कुदरत समझ लिया है वह कानूने कुदरत नहीं। या फिर जो क़ुरआन के अर्थ किए जाते हैं वह उचित नहीं हैं।

(11) "**ग्यारवहीं ग़लती** लोग पवित्र क़ुरआन की तफसीर (व्याख्या) करने में ग़लती करते थे। आप ने ऐसे सिद्धांत पर तफसीर क़ुरआन की बुनियाद रखी कि गलती की संभावना बहुत कम हो गई है। इन सिद्धांतों

के माध्यम से ही ख़ुदा तआला ने आप के अनुसरण में पवित्र क़ुरआन के ऐसे मआरिफ़ खोले हैं जो और लोगों पर नहीं खुले। इसलिए मैंने भी कई बार घोषणा की है कि पवित्र क़ुरआन करीम का कोई स्थान किसी बच्चे से खुलवाया जाए या कुरअ: डाल लिया जाए फिर इस जगह के मआरिफ़ मैं भी लिखूंगा, दूसरी किसी जमाअत का प्रतिनिधि भी लिखे। फिर पता चलेगा कि ख़ुदा तआला किसके द्वारा पवित्र क़ुरआन के मआरिफ़ प्रकट कराता है। परन्तु किसी ने यह बात स्वीकार न की।

पवित्र क़ुरआन की तफसीर के सही सिद्धांत

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तफसीर के जो सिद्धान्त वर्णन किए हैं वे ये हैं :.

(1) आप ने बताया कि पवित्र क़ुरआन ख़ुदा तआला का राज़ है और राज़ उन पर खोले जाते हैं जो विशेष संबन्ध रखते हैं। इसलिए पवित्र क़ुरआन समझने के लिए ज़रूरी है कि इंसान ख़ुदा तआला से संबन्ध पैदाकरे। मगर यह अजीब बात है कि पवित्र क़ुरआन की तफसीरें जिन लोगों ने लिखी हैं वे न सूफी थे न वली, बल्कि आम मौलवी थे जो अरबी जानने वाले थे। हां उन्होंने कुछ आयतों की तफसीरें लिखी हैं और अत्य-धिक सूक्ष्म तफसीर लिखी हैं। जैसे हज़रत मोहिउद्दीन साहिब इब्ने अरबी की पुस्तकों में क़ुरआन की आयतों की तफसीर आती है तो ऐसी सूक्ष्म होती है कि दिल उस की प्रामाणिकता को स्वीकार करने वाला होता है।

अत: हज़रत मसीह मौऊद ने बताया कि पवित्र क़ुरआन समझने के लिए आवश्यक है कि अल्लाह तआला से संबन्ध हो।

(2) दूसरा नियम आपने यह बताया कि पवित्र क़ुरआन में प्रत्येक शब्द क्रम से रखा गया है। इस बिंदु से पवित्र क़ुरआन की व्याख्या भी आसान हो गई है और उसके सूक्ष्म मआरिफ़ भी खुलते हैं। इसलिये चाहिए कि जब कोई पवित्र क़ुरआन पर विचार करे तो इस बात को ध्यान में रखे कि ख़ुदा तआला ने एक शब्द को पहले क्यों रखा और दूसरे को बाद में क्यों। जब वह इस पर विचार करेगा तो उसे हिक्मत समझ में आ जाऐगी।

(3) पवित्र क़ुरआन का कोई शब्द बे मकसद नहीं होता और कोई शब्द अधिक नहीं होता। हर शब्द किसी विशेष अर्थ अभिप्राय के अदा करने के लिए आता है। अत: किसी शब्द को यूं ही न छोड़ दो।

(4) जिस तरह पवित्र क़ुरआन का कोई शब्द व्यर्थ नहीं होता। इसी तरह वह जिस संदर्भ में आता है वहीं इसका आना ज़रूरी होता है। इसलिए अर्थ करते समय पहले और पछले विषय के साथ संबंध समझने की ज़रूर कोशिश करनी चाहिए। अगर सन्दर्भ का ध्यान न रखा जाए तो अर्थ करने में ग़लती होती है।

(5) पवित्र क़ुरआन अपने हर दावा की दलील ख़ुद वर्णन करता है। इस बारे में विस्तृत पहले बयान कर आया हूं। आप ने फरमाया जहाँ पवित्र क़ुरआन में कोई दावा हो वहाँ दलील की भी तलाश करो ज़रूर मिल जाएगी।

(6) पवित्र क़ुरआन अपनी तफसीर आप करता है। जहाँ कोई बात अधूरी नज़र आए इस के बारे में दूसरा टुकड़ा दूसरी जगह तलाश करो ज़रूर मिल जाएगा और इस तरह वह बात पूरी हो जाएगी।

(7) पवित्र क़ुरआन में तकरार नहीं। इस बारे में विस्तृत पहले बयान कर आया हूं।

(8) पवित्र क़ुरआन में महज़ किस्से नहीं हैं। बल्कि हर पिछली घटना भविष्यवाणी के रूप में वर्णन हुई है। यह भी पहले बयान कर चुका हूं।

(9) पवित्र क़ुरआन का कोई हिस्सा रद्द नहीं है। पहले लोगों को जो आयत समझ नहीं आती थी इस बारे में कह देते कि वह रद्द है और इस तरह उन्होंने पवित्र क़ुरआन का बड़ा भाग रद्द घोषित कर दिया या उनका उदाहरण ऐसा ही था जैसे कहते हैं एक व्यक्ति का विचार था कि वह बड़ा बहादुर है। उस ज़माने में बहादुर लोग अपना कोई निशान करार देकर अपने शरीर पर गुदवाते थे। उसने अपनी छाप शेर करार दिया और उसे हाथ पर गुदवाना चाहा। वह गोदने वाले के पास गया और उसे कहा कि मेरे बाज़ू पर शेर का निशान गोद दो। जब वह गोदने लगा और सूई चुभोई तो उसे दर्द हुआ और उसने पूछा क्या चीज़ गोदने लगे। गोदने वाले ने कहा। शेर का कान बनाने लगा हूं। उसने कहा अगर कान न हो तो क्या इसके बिना शेर, शेर नहीं रहता? गोदने वाले ने कहा कि नहीं। फिर भी शेर ही रहता है। उसने कहा अच्छा तब कान छोड़ दो। उसे भी पहले बहाना से छुड़ा दिया। इसी तरह जो हिस्सा वह गोदने लगता वही छुड़ा देता। आख़िर गोदने वाले ने कहा कि अब तुम घर जाओ। एक एक करके सब हिस्से ही ख़त्म हो गए हैं। यही हाल क़ुरआन में नासख़ तथा मंसूख़ मानने वालों का था। ग्यारह सौ आयतें उन्होंने रद्द घोषित कर दीं। हज़रत मसीह मौऊद ने बताया कि पवित्र क़ुरआन करीम का एक शब्द भी रद्द नहीं है और जिन आयतों को रद्द कहा जाता था। उनके बहुत सूक्ष्म अर्थ और तफसीर वर्णन की।

(10) एक गुर आप ने पवित्र क़ुरआन के बारे में यह बयान फ़रमाया कि ख़ुदा तआला का कलाम और उसकी सुन्नत आपस में विरोधी नहीं हो सकते। आप ने यह नहीं फ़रमाया ख़ुदा तआला के कलाम का साईंस विरोधी नहीं होती। क्योंकि विज्ञान कभी कभी ख़ुद ग़लत बात प्रस्तुत करती है और उसकी ग़लती साबित हो जाती है। बल्कि फ़रमाया ख़ुदा तआला की सुन्नत उसके कलाम के ख़िलाफ नहीं होती। हाँ, यह संभव है कि जिस तरह इलाही कलाम के समझने में लोग ग़लती कर जाते हैं उसी तरह अल्लाह तआला के कार्य को समझने में भी ग़लती कर जाएं।

(11) आप ने यह भी फरमाया कि अरबी भाषा के शब्द समानान्तर नहीं होते। बल्कि इस के वर्ण भी अपने अंदर अर्थ रखते हैं। इसलिए हमेशा अर्थ पर विचार करते हुए इस बात को ध्यान में रखना चाहिए जो इस प्रकार के दूसरे शब्दों में पाए जाते हैं ताकि वे अधिक बात दिमाग़ से ग़ायब न हो जाए जो एक विशेष शब्द के चुनने में अल्लाह तआला के सामने थी।

(12) पवित्र क़ुरआन की सूरतें मानव अंगों के स्थान के जैसी हैं जो एक दूसरे से मिलकर और एक दूसरे के मुकाबला में अपने कमाल दिखाती हैं। आपने फ़रमाया किसी बात को समझना हो तो सारे पवित्र क़ुरआन पर नज़र डालनी चाहिए। एक एक हिस्से को अलग नहीं लेना चाहिए।

(13) तेरहवीं ग़लती लोगों को यह लगी हुई थी कि वह समझते थे क़ुरआन हदीसों के अधीन है यहां तक कहते थे कि हदीसें क़ुरआन की आयतों को रद्द कर सकती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद ने इस ग़लती को इस तरह दूर किया कि आपने फरमाया क़ुरआन शासक है और हदीसें उसके अधीन हैं। हम केवल वही हदीस मानेंगे जो पवित्र क़ुरआन के अनुसार होगी, अन्यथा अस्वीकार कर देंगे। इसी तरह वह हदीस जो प्रकृति के कानून अनुसार हो, वह मान्य होगी। क्योंकि ख़ुदा तआला का कलाम उस के कर्म के विरोधी नहीं हो सकता।

(14) चौदहवीं ग़लती लोगों में पैदा हो गई थी कि वे समझते थे कि पवित्र क़ुरआन एक मुजमल किताब है जिस में मोटी मोटी बातें वर्णन की गई हैं। नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक बातों का विवरण इसमें नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद ने इस बारे में यह दावा किया कि पवित्र क़ुरआन एक सम्पूर्ण किताब है जिस में आध्यात्मिकता, आख़िरत के बारें में ज्ञान, सभ्याचार के उसूल, राजनीतिशास्त्र और नैतिकता के बारे में जितनी बातें रूहानी तरक्की के लिए आवश्यक हैं, वे सारी की सारी वर्णन कर दी हैं और फरमाया मैं यह सब बातें निकाल कर दिखाने के लिए तैयार हूं।

(15) पन्द्रहवीं ग़लती यह लोगों को लगी हुई थी कि पवित्र क़ुरआन

की कुछ शिक्षाएं सामयिक तथा अरब की स्थिति और उस ज़माने के अनुसार थीं। अब उनमें बदलाव किया जा सकता है। अत: सय्यद अमीर अली जैसे लोगों ने लिख दिया कि फरिश्तों की आस्था एक से अधिक विवाह की अनुमति ऐसी ही बातें हैं। दरअसल ये लोग ईसाई ऐतराज़ों से डरते थे और इस डर की वजह से लिख दिया कि ये बातें अरबों के लिए थीं हमारे लिए नहीं हैं अब उन्हें छोड़ा जा सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद ने फरमाया यह बात ग़लत है। क़ुरआन के सारे आदेश सही हैं और कोई आदेश सीमित नहीं सिवाए इसके जिसके बारे में पवित्र क़ुरआन ने ख़ुद बताया हो कि यह अमुक समय और अमुक अवसर के लिए आदेश है।

आपने बताया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंतिम शरीअत लाने वाले थे इस लिए सब शिक्षाएं पवित्र क़ुरआन में मौजूद हैं और हर ज़माने के लिए हैं। हां उन शिक्षाओं का पालन करने के समय ख़ुद उस ने बता दिए हैं और पवित्र क़ुरआन की कोई ऐसी शिक्षा नहीं है जिस पर अनुकरण हमेशा के लिए बंद हो या ऐसी कोई शिक्षा नहीं है जिस पर कोई अनुकरण न कर सके और विस्तृत आपने उन ऐतराज़ों को दूर किया जो फरिश्तों और प्राय एक से अधिक विवाह और ऐसे ही अन्य मुद्दों पर पड़ते थे।

(16) सोलहवीं गलती लोगों को यह लग रही थी कि वह पवित्र क़ुरआन को एक पवित्र किताब बताते थे और दैनिक काम आने वाली किताब नहीं समझते थे जिसका नतीजा यह होता था कि इसकी तिलावत उस के अर्थों पर विचार करने से वह बिल्कुल बेपरवाह हो गए थे। सुंदर ग़िलाफों में लपेट कर क़ुरआन को रख देना या खाली शब्द पढ़ लेना काफी समझते थे। कहीं पवित्र क़ुरआन करीम का दर्स न होता था। यहां तक कि उसका अनुवाद भी नहीं पढ़ाया जाता था। अनुवाद के लिए सारा भरोसा तफसीरों पर था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही इस ज़माने में वह व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने पवित्र क़ुरआन को पवित्र क़ुरआन करके पेश किया और ध्यान दिलाया कि पवित्र क़ुरआन का अनुवाद पढ़ना चाहिए। आप से पहले पवित्र क़ुरआन का काम केवल यह समझा जाता था कि झूठी शपथ खाने के लिए इस्तेमाल किया जाए। या मुर्दों पर पढ़ा जाए। या अच्छी सुंदर चादर चढ़ा कर ताक में रख दिया जाए।

क्या यह अजीब नहीं है कि कवियों ने ख़ुदा तआला की प्रशंसा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नात में तो असंख्य नज़्में लिखी हैं। मगर पवित्र क़ुरआन की प्रशंसा में किसी ने भी कोई नज़्म नहीं लिखी। पहले इंसान हज़रत मिर्ज़ा साहिब ही थे जिन्होंने पवित्र क़ुरआन की प्रशंसा में कविता लिखी और फरमाया :.

जमालो हुसने कुरआं नूरे जाने हर मुसलमां है
क़मर है चान्द औरों का हमारा चाँद कुरआं है

लोगों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नात पढ़नी होती है तो वह उन्हें मिल जाती है। ख़ुदा तआला की प्रशंसा पर शेर पढ़ने होते हैं तो वह उन्हें मिल जाते हैं। मगर पवित्र क़ुरआन की प्रशंसा में उन्हें नज़म नहीं मिलती और दुश्मन से दुश्मन भी हज़रत मसीह मौऊद के शेर पढ़ने पर मजबूर होते हैं और यह कहते हुए कि मिर्ज़ा साहिब ख़ुद तो बुरे थे मगर शेर उन्होंने बहुत अच्छे कहे हैं आप के कलाम को पढ़ने लग जाते हैं और इस तरह साबित करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद सही अर्थों में क़ुरआन को सुरय्या से लाए हैं।

फरिश्तों के बारे में ग़लत फहमी को दूर करना।

पांचवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया है कि फरिश्तों से संबंधित जो ग़लत फहमी थीं उन्हें आप ने दूर किया है।

(1) कुछ लोग कहते थे कि इंसानी शक्तियों का नाम फरिश्ता रखा गया है। वरना ख़ुदा तआला को फरिश्ते की क्या ज़रूरत है। आप ने इस संदेह को ज़ोरदार तरीके से रद्द किया और बताया कि फरिश्ते का अस्तित्व वहमी नहीं है बल्कि वह संसार में एक उपयोगी और लाभ दायक अस्तित्व हैं आपने फ़रमाया कि:

(क) फरिश्तों की ज़रूरत अल्लाह को नहीं है मगर उनका अस्तित्व मनुष्य के लिए आवश्यक है। जिस तरह ख़ुदा तआला बिना भोजन मनुष्य का पेट भर सकता है लेकिन उसने खाना बनाया। बिना सांस के जीवित रख सकता था मगर उसने हवा बनाई। बिना पानी के तृप्त कर सकता था मगर उसने पानी बनाया। बिना प्रकाश दिखा सकता था मगर उसने प्रकाश बनाया। बग़ैर हवा के सुना सकता था मगर आवाज़ को पहुंचाने के लिए उसने हवा बनाई और उसके इस काम पर कोई आपत्ति नहीं। इसी तरह उस ने अगर अपने कलाम को पहुंचाने के लिए फरिश्तों का अस्तित्व बनाया तो राहत और ज़रूरत का सवाल क्यों पैदा हो गया? शेष माध्यमों के पैदा करने से अगर ख़ुदा तआला को ज़रूरत नहीं,बल्कि बन्दों की ज़रूरत साबित होती है तो फरिश्तों के बनाने से ख़ुदा तआला की ज़रूरत कैसे साबित हुई? उनका जन्म भी सृष्टि की ज़रूरत है न कि ख़ुदा तआला की ज़रूरत के कारण।

(ख) दूसरा जवाब आप ने दिया कि इंसान को व्यावहारिक और मानसिक तरक्की के लिए फरिश्ते का अस्तित्व चाहिए। बौद्धिक तरक्की इस तरह होती है कि जो बातें बहुत अधिक छिपी रखी गई हैं उन्हें इंसान तलाश करते जाते हैं और तरक्की करते जाते हैं। इसलिए जरूरी था कि संसार इस तरह चलाया जाता कि परिणाम अचानक न निकलते बल्कि छिपे हुए कारणों का परिणाम होते, ताकि इंसान इन को तलाश करके ज्ञान में तरक्की करता जाता और दुनिया इसके लिए एक निर्धारित यात्रा न होती बल्कि हमेशा के लिए काम मौजूद रहता। इस सिलसिले की अंतिम कड़ी फरिश्ते हैं। जिनका काम यह है कि वह उन नियमों को ठीक तरह से चलाएं जिन्हें ख़ुदा तआला ने सुन्नतुल्लल्लाह के नाम से दुनिया में जारी किया है। इनके अस्तित्व के बिना बेजान पदार्थ के कर्म का सिलसिला इस खूबी से चल ही नहीं सकता था जिस तरह कि वह उनकी उपस्थिति में चल रहा है।

(2) दूसरी ग़लती फरिश्तों के बारे यह लगी हुई थी कि वे भी इंसानों की तरह चल फिर कर अपने कर्तव्यों को अदा करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस के बारे में बताया कि वह कुदरत के माध्यम से काम करते हैं न कि ख़ुद हर जगह जा कर।

(3) तीसरी ग़लती फरिश्तों से संबंधित यह लग रही थी कि मानो वे भी गुनाह कर सकते हैं। अत: आदम की घटना के बारे में कहा जाता था कि फरिश्तों ने ख़ुदा तआला पर आपत्ति जताई कि इसे क्यों बनाया गया है। इसी तरह विचार किया जाता था कि कुछ फरिश्ते दुनिया में आए और एक कंचनी पर आशिक हो गए। अंत अल्लाह ने उन्हें सजा दी और वह बाबुल के कुएं में अब तक कैद हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन आरोपों से फरिश्तों को पवित्र किया।

(4) चौथी ग़लती यह लग रही थी कि फरिश्ते को एक व्यर्थ सा वुजूद समझा था। जैसे कि बड़े बड़े राजा अपने आस पास आदमियों का रखते हैं मानो ख़ुदा ने भी इसी तरह उन्हें रखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि ऐसा नहीं बल्कि सारे संसार का निज़ाम इन्हीं पर चल रहा है तो उनका काम इंसानों के दिलों में नेक तहरीक करना भी है और इंसान उन से संबंध पैदा करके आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि कर सकता है।

नबियों के बारे में ग़लतफहमियों को दूर करना

छठा काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि नबियों के बारे में जो ग़लतियाँ फैली हुई थीं उन्हें दूर किया।

(1) पहली ग़लतफहमी नबियों के बारे में यह थी कि मुसलमानों में से सुन्नी औलिया अल्लाह और सूफ़ियों के गिरोह और उनके मानने वाले नबियों के सम्मान के विरोधी थे कुछ तो संभावनाओं की सीमा तक ही रहते लेकिन कई व्यावहारिक रूप से नबियों की ओर गुनाह मन्सूब करते और इसमें दोष महसूस नहीं करते थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में कहते थे कि उन्होंने तीन झूठ बोले थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में कहते कि उन्होंने ने चोरी की थी। हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम के बारे में कहते कि वह ख़ुदा से नाराज़ हुए थे। दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में कहते थे कि वह किसी ग़ैर की पत्नी पर आशिक हो गए थे और इसे हासिल करने के लिए उन्होंने उस के पति को युद्ध में भिजवा कर मरवा दिया। यह रोग यहां तक तरक्की कर गया कि सय्यदे वुलदे आदम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती भी सुरक्षित नहीं रही थी।

(1) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि यह विचार बिल्कुल ग़लत हैं और जो बातें वर्णन की जाती हैं बिल्कुल झूठ है। यह कभी नहीं हो सकता कि नबी कोई गुनाह करे।

(2) दूसरी ग़लती जिस में लोग थे यह थी कि वह मानते थे कि नबी से इज्तेहादी ग़लती नहीं हो सकती। अजीब बात तो यह है कि एक ओर तो लोग कहते थे कि नबी गुनाहगार हो सकता है और दूसरी ओर यह कहते कि नबी से इज्तेहादी ग़लती नहीं हो सकती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस मस्ला को ज्ञानीय मस्ला बना दिया और बताया कि

(क) नबी से इज्तेहादी ग़लती न केवल संभव है, बल्कि ज़रूरी है ताकि मालूम हो कि नबी पर जो कलाम नाज़िल हुआ वह उसका नहीं बल्कि दूसरी हस्ती ने नाज़िल किया है।

(ख) दूसरे न केवल नबी को इज्तेहादी ग़लती लगती है, बल्कि ख़ुदा तआला नबी से इज्तेहादी ग़लती कई बार खुद कराता है। ताकि पहले नबी को पवित्र करे अर्थात उसका स्तर और बुलंद करे इसका उदाहरण हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़्वाब है। जब उन्हें ख़्वाब में दिखाया गया कि वह बेटे को ज़िब्ह कर रहे हैं तो इसका यह अर्थ नहीं था कि वह बेटे को क़त्ल कर दें क्योंकि अगर यह अर्थ होता तो जब वह कत्ल करने लगे थे तो उन्हें मना न किया जाता लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़्वाब ऐसे रंग में दिखाया गया कि इब्राहीम का ईमान लोगों पर प्रकट हो।

(3) तीसरी ग़लती लोगों को नबियों की शिफाअत (हिमायत) के बारे में लगी हुई थीं और इसकी दो किस्में थीं (क) यह कि कुछ लोग मानते थे कि जो मर्ज़ी आए करो, हिमायत के माध्यम से सब कुछ बख़्शा जाएगा। अत: एक शायर का कथन है:

मुस्तहिक शिफाअत गुनाह गाराँ अन्द

अर्थात शिफाअत के लायक गुनहगार ही हैं।

(ख) कुछ लोग इसके उलट यह विचार करते थे कि शिफाअत शिर्क है अल्लाह तआला के गुणों के ख़िलाफ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन दोनों ग़लतियों को दूर किया। आप ने शिफाअत के मामला की यह व्याख्या की कि शिफाअत विशेष रूपों में होती है और अल्लाह की इजाज़त से होती है। इसलिए शिफाअत पर भरोसा करना सही नहीं है। शिफाअत तभी हो सकती है जब कि बावजूद पूरी कोशिश करने के फिर भी मनुष्य में कुछ कमी रह गई हो और जब तक मनुष्य शफी के जैसा ना हो जाए शिफाअत नहीं हो सकती। क्योंकि शफी के अर्थ हैं जोड़ा और जब तक कोई रसूल का जोड़ा न बन जाए शिफाअत से बख्शा नहीं जा सकता। फिर वे जो कहते हैं शिफाअत शिर्क है उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि अगर शिफाअत हुकूमत के माध्यम से कराई जाती यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला से हुकम दे कर कहते कि अमुक को बख्श दे तो यह शिर्क होता। मगर ख़ुदा तआला कहता है शिफाअत हमारी इजाज़त से होगी अर्थात हम आदेश देकर रसूल से यह काम कराऐंग जब हम कहेंगे कि शिफाअत करो, तब नबी शिफाअत करेगा और यह बात शिर्क हरगिज़ नहीं हो सकती। इसमें न ख़ुदा तआला की बराबरी है और न उसकी किसी गुण पर पर्दा पड़ता है।

(4) नबियों के बारे में जिन ग़लतियों में मुसलमान पड़े हुऐ थे उनमें से चौथे नंबर पर वह ग़लतियां हैं, जो विशेष रूप से हज़रत मसीह नासरी के बारे में पैदा हो रही थीं। मसीह की हस्ती एक नहीं कई ग़लतियों का केन्द्र बना दी गई थी और फिर आश्चर्य है कि उनसे संबंधित विभिन्न क़ौमें ग़लत विचारों में पड़ी हुई थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन सब ग़लतियों को दूर किया।

सब से पहली ग़लती हज़रत मसीह नासरी के जन्म से संबंधित थी। मुसलमान भी और दूसरे लोग भी ग़लती में थे कि हज़रत मसीह का जन्म मानव जन्म से बढ़ कर जन्म था और उनका "रूहुल्लाह" और "कलमतुल्लाह" से पैदा होना अपनी मिसाल आप ही था। इस विचार से बड़ा शिर्क पैदा हो गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में कहा कि सब नबियों में रूहुल्लाह थी और सब कलमतुल्लह थे। हज़रत मसीह पर चूंकि एतराज़ होता था और उन्हें नऊज़ो बिल्लाह ज़ना से उत्पन्न कहा जाता था इसलिए उनकी बरियत के किए जाने के लिए उनके बारे में ये शब्द इस्तेमाल किए गए वरना सारे नबी रूहुल्लाह और कलमतुल्लाह थे। क़ुरआन में हज़रत सुलैमान के कुफ्र का इंकार किया गया है जैसा कि कहा مَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि केवल हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने इनकार नहीं किया था सब नबियों ने किया था। उनके कुफ्र के इनकार का कारण केवल यह है कि उन पर कुफ्र का आरोप लगाया गया था। इसलिए उनके संबंधित आरोप को रद्द किया गया। दूसरे नबियों के बारे में जब इस प्रकार का आरोप नहीं लगा था इसलिए उनके बारे में कुफ्र को नकारने की ज़रूरत नहीं थी।

मोजज़ों (चमत्कारों) के बारे में ग़लत फहमियों को दूर करना

सातवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि मोजज़ूं के बारे में जो ग़लत फहमियां थीं, उनका सुधार किया। दुनिया मोजज़ूं के बारे में दो गिरोहों में विभाजित थी। कुछ लोग मोजज़ूं से पूर्ण रूप से इनकार करते थे। उन्हें आप ने दलील के अतिरिक्त अपने मोजज़ूं को पेश कर के खामोश किया।

करामत गर चे बेनाम व निशां अस्त

बिया बनगर ज़ ग़ुलमाने मुहम्मद

जो लोग हर बेकार और व्यर्थ मिथक को मोजज़ा बता रहे थे उन्हें आपने बताया कि मोजज़ा तो एक असाधारण स्थिति का नाम है और असाधारण मामलों को स्वीकार करने के लिए असाधारण सबूत भी आवश्यकता है। अत: इन्हीं मोजज़ूं को स्वीकार किया जा सकता है कि (1) जिनका उल्लेख इलहामी किताब में हो या कि उनके समर्थन में जबरदस्त ऐतिहासिक सबूत हो। (2) दूसरे जो अल्लाह तआला की सुन्नत के ख़िलाफ न हो चाहे ज़ाहिर में अचम्भा दिखे। जैसे ख़ुदा तआला कहता है कि कोई मुर्दा इस दुनिया में ज़िन्दा नहीं हो सकता। अगर कोई कहे कि अमुक नबी या वली ने मुर्दा ज़िन्दा किया है तो क्योंकि यह क़ुरआन के ख़िलाफ होगा, हम इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि मोजज़ा दिखाने वाली हस्ती ने ख़ुद फरमा दिया है कि वह मुर्दा ज़िन्दा नहीं करेगी।

(3) तीसरी शर्त आप ने यह बताई कि मोजज़ा में एक रंग का पर्दा होना चाहिए अगर पर्दा न रहे तो मोजज़ा का मूल उद्देश्य जो ईमान का पैदा करना है बर्बाद हो जाती है। जैसे अगर इज़्राईल आए और कहे कि फलां नबी को मान लो वरना अब जान निकालता हूँ तो तुरंत सभी लोग मान लेंगे और ऐसे ईमान का कोई फायदा नहीं होगा। तो मोजज़ा के लिए छिपा हुआ होना चाहिए। क्योंकि मोजज़ा ईमान के लिए होता है। अगर इस में पर्दा न हो तो इस पर ईमान लाना क्या लाभ दे सकता है हां इतना पर्दे में भी नहीं होना चाहिए कि दलील के स्तर से गिर जाए, वरना फिर लोगों के लिए दलील न रहेगा।

(4) चौथी शर्त यह है कि मोजज़ूं में कोई लाभ हो क्योंकि मोजज़ा लग़्व नहीं होता और तमाशा की तरह नहीं दिखाया जाता बल्कि इसका कोई न कोई उद्देश्य होता है। अत: जो मूजज़ा किसी उद्देश्य और लाभ पर आधारित हो उसे स्वीकार किया जा सकता है वरना उसे ख़ुदा तआला की ओर सम्बन्धित नहीं किया जा सकता।

शरीअत की महानता को कायम(स्थापित) करना।

आठवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि शरीअत की महानता की स्थापना की। शरीअत की महानता ग़ैर मुस्लिमों में भी और मुसलमानों में भी पूरी तरह से मिटी हुई थी। आप के माध्यम से वह फिर स्थापित हुई।

(1) सबसे बड़ी शंका शरीअत के बारे में यह पैदा हो गई थी कि लोग शरीअत को चट्टी समझते थे। ईसाई कहते थे ईसा मसीह मनुष्य को शरीअत से बचाने के लिए आया था। मानो शरीअत चट्टी थी जिससे वह बचाने आए थे। हालांकि शरीअत तो मार्गदर्शन के लिए थी और कोई मार्गदर्शन को चट्टी नहीं कहता। क्या कोई किसी को सीधा रास्ता बताए तो वह यह कहता है कि हाय उसने मुझे चट्टी डाल दी। मुसलमान भी शरीअत को चट्टी समझते थे क्योंकि उन्होंने इस प्रकार की कोशिशें की हैं कि शरीअत के अमुक आदेश से बचने के लिए क्या तरीका है और अमुक के लिए किया। यहां तक कि कुछ लोगों ने किताबुल हैल लिख दी है। यदि वह शरीअत को शाप न समझते तो इससे बचने के लिए हीले (बहाने) क्यों तलाश करते। वहाबी किसी क़दर इससे बचे हुए थे मगर दूसरे मुसलमानों ने अजीब अजीब बहाने तराशे हुए थे। जैसे एक प्रसिद्ध फिक्ह: (न्यायशास्त्र) की पुस्तक में लिखा है कि कुरबानी करना ईद की नमाज़ के बाद सुन्नत है लेकिन अगर किसी को नमाज़ से पहले कुरबानी करने की ज़रूरत है वे इस प्रकार करे कि शहर के पास के एक गांव में जाकर बकरा ज़िब्ह कर दे। क्योंकि ईद शहर में हो सकती है और इस जगह के लिए ईद के बाद कुरबानी की शर्त है और वहाँ से गोश्त शहर में ले आए।

(2) दूसरी शंका यह पैदा हो रही थी कि कुछ लोग कहते थे कि शरीअत तो मूल उद्देश्य नहीं है, मूल उद्देश्य तो मनुष्य का ख़ुदा तआला तक पहुंचना है। अत: जब ख़ुदा तआला तक पहुँच गए तो शरीअत के पालन करने की क्या ज़रूरत है।

यह एक ख़तरनाक रोग था, जो लोगों में पैदा हो गया था। सूफी कहलाने वाले शरीअत के आदेशों का पालन करना छोड़ रहे थे और जब मुसलमान उनसे पूछते कि शरीअत के नियमों पर क्यों पालन नहीं करते तो कहते हम ख़ुदा तआला तक पहुँच गए हैं। अब हमें शरीअत के आदेशों का पालन करने की क्या ज़रूरत है। इसी आस्था का एक आदमी मेरे पास भी आया था। मैं जुम्अ: की नमाज़ पढ़ कर बैठा ही था उस ने मुझ से सवाल किया कि आप यह फरमाऐं कि कोई आदमी किश्ती में बैठ कर दूसरे किनारे तक पहुंच जाए तो फिर क्या उसे किश्ती में ही बैठे रहना चाहिए या किश्ती से उतर जाना चाहिए। उस का अभिप्राय यह था कि जब ख़ुदा मिल जाए तो फिर शरीयत पर चलने की क्या ज़रूरत है। जैसे ही उस ने यह बात की मैं उस का अभिप्राय समझ गया। मैंने कहा "अगर दरिया का किनारा हो बेशक किश्ती से उतर जाए लेकिन अगर किनारा ही नज़र न आए तो फिर कहां उतरे। एसी स्थिति में अगर उतर गया तो डूब ही जाएगा। यह सुन कर वह बहुत लज्जित हुआ और कोई उत्तर नहीं दे सका।

(3) तीसरा संदेह यह पैदा हो रहा था कि कुछ लोग इस ग़लती में पड़ गए थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सभी काम शरीअत के अंग हैं। इसलिए अगर कोई मौलवी किसी का पाजामा टख़ने से नीचे देखता तो झट कह देता कि यह काफ़िर है। खाने के बाद किसी को हाथ धोते देखा तो झट कह दिया कि काफिर है क्योंकि यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के ख़िलाफ है। हालांकि यह बात है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में खाने में सालन न पड़ते थे। ज़ैतून के तेल से रोटी खा लेते थे। और यह तेल बालों पर भी मला जाता था इस लिए यह खाने के बात मुंह पर मल लेते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ग़लती को यूं दूर फरमाया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कार्य कई प्रकार के हैं। (क) प्रथम वे कर्म हैं जो आप हमेशा करते जिनका करने का आप ने दूसरों को भी आदेश दिया और फरमाया इस तरह किया करो। इन का करना वाजिब है। (ख) वे कर्म जो आमतौर पर आप करते और दूसरों को करने की नसीहत भी करते, यह सुन्नत हैं। (ग)तीन वह कर्म जो आप करते और दूसरों को फरमाते कि कर लिया करो तो अच्छे हैं यह मुस्तहिब हैं। (घ) वे कर्म जिन्हें आप विभिन्न रूपों में करते इनका सारे तरीकों से करना जायज़ है। (च) एक वे कर्म जो खाने पीने के बारे में थे इन में आप दूसरों को करने के लिए न कहते और न कोई हिदायत देते। आप उनमें अरब के रिवाज का पालन करते हैं। इन आदेशों में हर देश का इंसान अपने देश की रिवाज का पालन कर सकता है।

(4) चौथी ग़लती यह लग रही थी कि कुछ लोगों के पास शरीअत केवल कलामे इलाही तक सीमित थी। नबी को शरीअत से कोई संबंध नहीं समझा जाता था जैसे कि चकड़ालवी कहते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में बताया कि शरीअत के दो भाग हैं (क) एक सैद्धांतिक हिस्सा है जिस पर धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक कामों की बुनियाद है। (ख) दूसरा भाग आंशिक व्याख्या और व्यावहारिक जानकारी का है। यह ख़ुदा तआला के नबियों के द्वारा करता है ताकि नबियों से भी सृष्टि को संबंध हो और वह लोगों के उस्वा (आदर्श) बनें। इसलिए शरीअत में नबी की व्याख्या भी शामिल हैं।

इबादतों के बारे में सुधार

नौवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इबादत के सुधार का किया है। इस बारे में लोगों में (1) एक तो यह शंका हुए पैदा हो गई थी कि इबादत दिल से संबंध रखती है शरीर को इससे कोई संबंध नहीं। अत: लगभग बीस वर्ष हुए कि अलीगढ़ में एक आदमी ने लेक्चर दिया। जिस में वर्णन किया कि अब चूंकि ज़माना तरक्की कर गया है इस लिए पहले ज़माना के इबादत के तरीके इस समय अनुकरण के योग्य नहीं हैं। अब केवल इतना काफी है कि अगर कोई नमाज़ पढ़ना चाहे तो बैठे बैठे थोड़ा सा मेज़ पर सिर झुका कर ख़ुदा को याद कर लिया। रोज़ा इस प्रकार रखा जा सकता है कि पेट भर कर खाना न खाए । कुछ बिस्कुट एक दो चाय की प्याली पी पीले तो कोई हर्ज नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि इबादत का संबंध रूह से है और रूह का संबंध शरीर से है। अगर शरीर को इबादत में नहीं लगाएंगे तो हृदय की विनम्रता नहीं पैदा होगी। इसलिए शारीरिक इबादत को व्यर्थ समझना निहायत ग़लत तरीका और घातक रास्ता है और इबादत का सिद्धांत न

समझने की वजह से ऐसा विचार पैदा होता है।

(2) दूसरी ग़लती लोगों को यह लगी थी कि वह नमाज़ में दुआ करना भूल गए थे। सुन्नियों में तो नमाज़ में दुआ करना मानो कुफ्र माना जाता था। उनका मानना था कि नमाज़ पढ़ लेने के बाद हाथ उठा कर दुआ करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने जब इस बात का ज़िक्र आता तो हंसते और फरमाते इन लोगों का तो ऐसा उदाहरण है जैसे कोई बादशाह के दरबार में जाए मगर वहां चुपचाप खड़ा रहकर आ जाए और जब दरबार से बाहर आए तो कहे कि हुज़ूर मुझे यह कुछ दिलाया जाए और वह कुछ दिलाया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि दुआ नमाज़ में करनी चाहिए और अपनी ज़बान में भी करनी चाहिए ताकि जोश पैदा हो।

(3) कुछ लोगों का यह मानना था ज़ाहरी इबादत काफी है। हाथ में तस्बीह पकड़ ली और बैठ गए। इन लोगों की हालत तो यहां तक पहुंच गई थी कि मैंने एक किताब देखी है जिस में लिखा था कि अगर कोई अमुक दुआ पढ़ ले तो सारे सालेहीन की नेकियां उसे मिल जाऐंगी। और सब गुनाहगारों के बराबर अगर गुनाह इस ने किए हों तो वह माफ किए जाऐंगे। जिन लोगों का यह विचार हो उन्हें रोज़ाना नमाज़ें पढ़ने की क्या ज़रूरत महसूस होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया। यह जिस्म तो घोड़ा है और रूह उस पर सवार है तुम ने घोड़े को पकड़ लिया और सवार को छोड़ दिया। बाहरी इबादतें तो आध्यात्मिक पवित्रता का माध्यम हैं इसलिए दिल की पवित्रता पैदा करो जो मूल गंतव्य है।

फिक्ह: (न्यायशास्त्र)का सुधार

दसवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि फिक्ह: का सुधार किया जिस में बहुत ख़राबियां पैदा हो गई थीं और इतना मतभेद हो रहा था कि सीमा न रही थी आप इस बारे में सुनहरे नियम बांधे और कहा शरीअत का आधार निम्नलिखित बातों पर है ।

(1) क़ुरआन (2) सुन्नत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (3) हदीसें जो क़ुरआन और सुन्नत और बुद्धि के ख़िलाफ न हों (4) धर्म में विचार करना (5) तबीयतों तथा हालात में मतभेद।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह एक महान उपलब्धि है कि आप ने सुन्नत और हदीस को अलग किया। आपने फ़रमाया सुन्नत तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वह कर्म है जिस पर आप स्थापित हुए और दूसरों को प्रोत्साहित किया और हदीस वह कथन है जो आप ने वर्णन किया।

महिलाओं के अधिकारों की स्थापना

ग्यारहवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि महिलाओं के वे अधिकार स्थापित किए जो आपके आगमन से पहले पूरी तरह से नष्ट किए जाते थे। जैसे (1) विरासत नहीं मिलती थी। (2) घूंघट में सख्ती की जाती थी। चलने फिरने तक से रोका जाता था। (3) ज्ञान से वंचित रखा जाता था। (4) व्यवहार और विशेषाधिकारों से वंचित रखा जाता था। (5) निकाह के बारे में अधिकार नहीं दिया जाता था। (6) खुलअ और तलाक में सख्ती की जाती थी।(7) मानवता के अधिकारों का ध्यान नहीं रखा जाता था। आप ने इन सब का सुधार किया।

इंसानी कर्मों का सुधार

बारहवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इंसान के कर्मों के सुधार के बारे में किया। जिस पर मुक्ति की बुनियाद है। सारी दुनिया इंसानी कर्मों का सुधार तो एक प्रमुख काम समझती थी लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि यह काम किस प्रकार हो सकता है। मुसलमान भी इस मसला के बारे में ख़ामोश थे बल्कि दूसरों से कुछ गिरी हुई हालत में थे। आप ने क़ुरआन करीम से ऐसे गुर बताए कि इस मसला को बिलकुल हल कर दिया और रास्ता खोल दिया जिस का मुकाबला और कोई मज़हब नहीं कर सकता।

मसीहयत ने विरासत के गुनाह की थ्योरी पेश करके कहा था कि चूंकि मनुष्य को गुनाह विरासत में मिले हैं इसलिए कोई इंसान उनसे बच नहीं सकता। मानो उसके निकट नफ्स का सुधार असंभव था और इस असंभव को संभव बनाने के लिए उसने कफ्फार: का आविष्कार किया था।

हिन्दू धर्म की आस्था थी कि नफ्स का सुधार हिसाब साफ करने से हो सकता है जब हिसाब साफ हो जाएगा तब मुक्ति होगी। अगर बुराइयां अधिक होंगी तो मरने के बाद किसी योनि में डाल कर दुनिया में भेज देता है इस प्रकार हिन्दु धर्म ने नफ्स के सुधार को असंभव बना कर इंसान को पुनर्जन्म के चक्र में डाल दिया था।

यहूदी नफ्स के सुधार को सिरे से ही इनकार करने वाले थे। क्योंकि उनके निकट नबी भी गुनहगार हो सकता था और होता है। वह मज़े ले लेकर नबियों के गुनाह गिनाते थे और इसमें कोई त्रुटि न समझते थे। उनके निकट मुक्ति की सूरत केवल यह थी कि अल्लाह किसी को अपना प्यारा करार देकर उस से मुक्ति को संबद्ध कर दे। मानो वह मुक्ति को एक भाग्य का कर्म समझते थे और अपनी मुक्ति पर इसलिए संतुष्ट थे कि वह इब्राहीम के वंश और मूसा की उम्मत हैं, ना इसलिए कि वह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को नफ्स के सुधार के माध्यम से प्राप्त कर चुके हैं।

मुसलमानों ने भी फरिश्तों और नबियों तक को गुनाह में शामिल करके यहूदियों की नकल में इस लक्ष्य को फौत कर दिया था और यह बात गढ़ ली थी कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे मुसलमानों की हिमायत करेंगे और सब बख़्शे जाएंगे और इस से अधिक ग़ज़ब यह हो रहा था कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त और कई पीर ऐसे बना रखे थे और वे पीर उन से कहते थे कि कुछ करने धरने की ज़रूरत नहीं। हम तुम्हें खुद सीधे जन्नत में पहुँचा देंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन सब विचारों की ग़लती को साबित किया और मुक्ति के गुर क़ुरआन से पेश किए और एक पूर्ण और सम्पूर्ण मूल इस्लाहे नफ्स के लिए प्रस्तुत किया जिस पर मुक्ति की बुनियाद है।

फिर आपने बताया कि वास्तव में क़ौमों को यह धोखा लग गया है कि मानव प्रकृति से गुनाहगार है। किसी को विरासत के गुनाह की थ्योरी से, किसी को पुराने कर्म के कारण से किसी को خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (अन्निसा 29) की आयत से, किसी को सनातन तकदीर(भाग्य) के विचार से यह शंका पैदा हो गई है। हालांकि मूल बात यह है कि बावजूद विरासत तरबियत आदि के प्रभाव के मानव स्वभाव अच्छाई पर पैदा किया गया है। प्रकृति में दोष से नफरत और अच्छाई की तरफ ध्यान आकर्षित होना रखा गया है। सब ज़ंग होते हैं जो ऊपर चढ़ जाते हैं। सबूत इस का है कि बुरे काम करने वाले लोग भी नेकियाँ अधिक करते हैं। एक आदमी जिसे झूठा कहा जाता है अगर वे कई झूठ दिन में बोलेगा तो उन से कहीं अधिक वह सच बोलेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि सब बुराइयों की जड़ यह है कि मनुष्य के मन में पवित्रता की उम्मीद को निकाल दिया गया है और इसे ख़ुद उसकी नज़रों में गिरा दिया गया है। मनुष्य को सदैव का शकी (हतभागा) कह कह कर ऐसा ही बना दिया गया है। किसी लड़के को यूं ही झूठा कहने लग जाओ कुछ समय के बाद वह सचमुच झूठ बोलने लग जाएगा। आपने बताया कि मनुष्य को वास्तव में नेक बनाया गया है बुराई केवल ज़ंग है। जिस धातु से वह बना है वह नेकी है। इसे इस तथ्य से अवगत कराना चाहिए ताकि उसमें साहस पैदा हो और निराशा दूर हो। उसे इस के पवित्र स्रोत की तरफ ध्यान दिलाओ। इस तरह वे अपने आप अच्छाई की ओर होता चला जाएगा।

इस्लाम और मुसलमानों की तरक्की के सामान

तेरहवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि इस्लाम और मुसलमानों की तरक्की के सामान का उत्पादन किया, जो इस प्रकार हैं:

(1) **इस्लाम की तब्लीग़** -हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही पहले आदमी हैं जिन्होंने इस काम को जो ज़माना से बन्द हो चुका था शुरू किया। आपकी बेअसत से पहले मुसलमान इस्लाम की तब्लीग़ के काम से बिल्कुल बेख़बर हो चुके थे। अपने आसपास के लोगों में कभी कोई मुसलमान तब्लीग़ कर लेता तो कर लेता लेकिन तब्लीग़ को नियमित काम के रूप में करना मुसलमानों के मन में ही न था और ईसाई देशों में तब्लीग़ को बिल्कुल असंभव माना जाता था। आप ने 1870 ई के लगभग से इस काम के करने के लिए ध्यान दिया और पहले ख़तो के माध्यम से और फिर एक इश्तेहार के माध्यम से यूरोप के लोगों को इस्लाम के मुकाबला के लिए आमंत्रित किया और बताया कि इस्लाम अपने गुणों में सारे धर्मों से बढ़कर है अगर किसी धर्म में हिम्मत है तो उसका मुकाबला करे। मिस्टर एलैकज़ेण्डर वेब प्रसिद्ध अमेरिकन मुस्लिम मिशनरी आप ही की तहरीरों से मुसलमान हुए और भारत आप की ही मुलाकात को आए थे कि दूसरे मुसलमानों ने उन्हें बहका दिया कि मिर्ज़ा साहिब के मिलने से बाकी मुसलमान नाराज़ हो जाएंगे और आप के काम में मदद न देंगे अमेरिका वापस जाकर उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ और मरते दम तक अपने इस काम पर में विभिन्न ख़तों के माध्यम से लज्जा प्रकट करते रहे और आज दुनिया के विभिन्न देशों में इस्लाम की तब्लीग़ करने के लिए आपकी जमाअत की तरफ से मिशन काम कर रहे हैं और आश्चर्य है कि आज साठ साल के बाद सिर्फ आप की ही जमाअत यह काम कर रही है।

(2) **दूसरा काम आप ने जिहाद की सही शिक्षा दी**। लोगों को यह धोखा लगा हुआ है कि आपने जिहाद से रोका है। हालांकि आप ने जिहाद से कभी नहीं रोका बल्कि इस पर ज़ोर दिया है कि मुसलमानों ने जिहाद की वास्तविकता को भुला दिया है और वह केवल तलवार चलाने का नाम जिहाद समझते रहे हैं। जिस का नतीजा यह हुआ कि जब मुसलमानों को विजय प्राप्त हो गई तो वह संतोष से बैठ गए और कुफ्र दुनिया में मौजूद रहा और उन देशों की तरफ भी ध्यान न दिया गया जिन को इस्लामी हुकूमत से जंग का अवसर न आया और इस कारण से वहां कुफ्फार की हुकूमत रही। इस का नतीजा यह हुआ कि कुफ्र अपनी जगह पर फिर ताकत पकड़ता गया और कुछ क़ौमों का सियासी विजय के साथ ही इस्लाम को नुकसान पहुंचने लगा। अगर मुसलमान जिहाद की यह परिभाषा जानते जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की है कि जिहाद हर उस कर्म का नाम है जिसे इंसान नेकी और तक्वा (संयम) की स्थापना के लिए करता है और वह जिस तरह तलवार से होता है इसी तरह नफ्स के सुधार से भी होता है और इसी तरह तब्लीग़ से भी होता है और माल से भी होता है और प्रत्येक प्रकार के जिहाद का अलग अलग मौका है तो आज यह बुरा दिन न देखना पढ़ता। अगर इस परिभाषा को समझते तो इस्लाम के ज़ाहिरी विजय के अवसर पर जिहाद के आदेश को खत्म न समझते बल्कि उन्हें लगता रहता है कि केवल एक प्रकार का जिहाद समाप्त हो गया। अन्य प्रकार के जिहाद अभी बाकी हैं और तब्लीग़ का जिहाद शुरू करने का अधिक मौका है और इसका नतीजा यह होता कि न केवल इस्लाम इस्लामी देशों में फैल जाता बल्कि यूरोप भी आज मुसलमान होता और इसकी तरक्की के साथ इस्लाम का पतन नहीं होता। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिहाद के अवसर बताए हैं। आप ने यह नहीं कहा कि तलवार का जिहाद मना है बल्कि यह फ़रमाया कि इस ज़माना में शरीअत के अनुसार किस जिहाद का मौका है और ख़ुद बड़े ज़ोर से इस जिहाद को शुरू कर दिया है और सारी दुनिया में तब्लीग़ जारी है। अभी भी अगर मुसलमान इस जिहाद को शुरू कर दें तो सफल हो जाएंगे। अगर मुसलमान समझें तो आप का यह एक काम इस्लाम की ज़बरदस्त सेवा है।

(3) **तीसरा काम इस्लाम की तरक्की के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया है कि आप ने आधुनिक ज्ञान पैदा किया है।** आपकी बेअसत से पहले धर्मों की लड़ाई गोरिल्ला युद्ध से मिलती जुलती थी। हर एक व्यक्ति उठकर एक बात को लेकर आपत्ति शुरू कर देता और अपने ख़सम (द्वत्तीय पक्ष) को शर्मिंदा करने की कोशिश करने लगता था। धर्मों की परख निम्नलिखित सिद्धांत पर होनी चाहिए।

(क) **निरीक्षण पर**-अर्थात हर धर्म जिस उद्देश्य के लिए खड़ा है उसका सबूत दे। अर्थात यह साबित करे कि उस पर चल कर वह लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। जिस उद्देश्य को पूरा करना उस धर्म का काम है। जैसे ख़ुदा की नज़दीकी उस धर्म का उद्देश्य है तो उसे चाहिए कि साबित करे कि उस धर्म पर चलने वालों को ख़ुदा तआला की नज़दीकी हासिल होती है।

(ख) **दूसरा नियम** धार्मिक मुबाहसों (शास्त्रार्थों) के बारे में आप ने यह फरमाया कि दावा और दलील दोनों इलहामी किताब में मौजूद हैं। आप ने धार्मिक दुनिया का ध्यान इस ओर फेरा कि इस ज़माना में यह एक अजीब रिवाज हो रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को अपने धर्म की ओर सम्बन्धित ठहरा कर उस पर बहस करने लग जाता है और नतीजा यह होता है कि न उसकी जीत उस धर्म की जीत होती है और न उसकी हार उसके धर्म की हार होती है और इस तरह लोग व्यर्थ समय धार्मिक बहसों में बर्बाद करते रहते हैं, लाभ कुछ भी नहीं होता। इसलिए चाहिए कि धार्मिक बहसों के समय इस बात का प्रावधान रखा जाए कि जिस दावा को प्रस्तुत किया जाए इस बारे में पहले यह साबित किया जाए कि वह इस धर्म की आसमानी किताब में मौजूद है और फिर दलील भी इसी पुस्तक से दी जाए क्योंकि ख़ुदा का कलाम दलील के बिना नहीं हो सकता। हां आगे स्पष्टीकरण के लिए सहायक दलीलें दी जा सकती हैं। आपके इस नियम ने धार्मिक दुनिया में एक तहलका मचा दिया।

(ग) **तीसरा नियम आप ने यह प्रस्तुत किया कि** हर धर्म जो सार्वभौमिक होने का दावा करता है उसके लिए केवल यह आवश्यक नहीं कि वह यह साबित कर दे कि उसके अंदर अच्छी शिक्षा है बल्कि सार्वभौमिक धर्म के लिए ज़रूरी है कि वह यह साबित करे कि उसकी शिक्षा प्रत्येक स्वभाव को तसल्ली देने वाली और सच्ची ज़रूरत को पूरा करने वाली है।

(4) **चौथा काम** इस्लाम और मुसलमानों की तरक्की के लिए आप ने यह किया कि सिक्ख जो भारत की जोशीली और काम करने वाली क़ौम है। उसे इस्लाम के क़रीब कर दिया।

(5) **पांचवां काम** आप ने इस्लाम की तरक्की के लिए यह किया कि अरबी को उमुल अलसिना (सब भाषाओं का मां) साबित किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि मुसलमानों को अरबी भाषा सीखनी चाहिए। मुसलमानों ने अभी तक इस बात के महत्तव को समझा नहीं। बल्कि इस के विपरीत वह अभी तक अरबी भाषा को मिटाने में लगे हुए हैं।

(6) **छठा काम** इस्लाम की तरक्की के लिए आप ने यह किया है कि एक भव्य खज़ाना इस्लाम समर्थक दलीलों का जमा कर दिया है और अपनी किताबों की मदद से अब हर धर्म और हर मिल्लत के लोगों का और नवीन ज्ञान के दुरुपयोग से जो उपद्रव पैदा होते हैं उनका मुकाबला करने के लिए हर तरह की आसानियां पैदा कर दी हैं।

(7) **सातवां काम** आप ने यह किया है कि उम्मीद जो मुसलमानों के दिल से बिल्कुल समाप्त हो गई थी उसे फिर पैदा कर दिया है। आप के आगमन से पहले मुसलमान पूरी तरह निराश हो चुके थे और समझ बैठे थे कि इस्लाम

दब गया आप ने आकर ज़ोरदार घोषणा की कि इस्लाम को मेरे द्वारा तरक्की होगी और इस्लाम पहले दलीलों के माध्यम से दुनिया पर विजयी होगा और अंत तब्लीग़ के माध्यम से शक्तिशाली राष्ट्र इसमें शामिल होकर इस की राजनीतिक ताकत बढ़ा देंगी। इस तरह आप ने टूटे हुए दिलों को बांधा। झुकी हुई कमर को सहारा दिया। बैठे हौसलों को खड़ा किया और मुर्दा उमंगों को जिन्दा किया और इसमें क्या शक है कि जब आशा और जबरदस्त उम्मीद पैदा हो जाए तो सब कुछ करा लेती है। उम्मीद ही से कुरबानी तथा त्याग पैदा होते हैं और चूंकि मुसलमानों में उम्मीद नहीं थी, कुरबानी भी नहीं रही थी। अहमदियों में उम्मीद है, इसलिए कुरबानी भी है। जिस का उद्देश्य यह होता है कि प्रत्येक कण को इस प्रकार मिला लिया जाए कि इस से तरक्की के सामान पैदा हों।

सार्वजनिक शान्ति की स्थापना

चौदहवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया कि आप ने सार्वजनिक शान्ति को स्थापित किया है इस उद्देश्य के लिए आप ने कुछ उपाय वर्णन किए हैं जिन का अनुकरण करने से दुनिया में शांति स्थापित हो सकती है और होगी।

(1) दुनिया में सबसे बड़ा उपद्रव का कारण है लोग एक दूसरे के बुज़ुर्गों को बुरा भला कहते हैं और दूसरे धर्मों की खूबियों से आंखें बंद कर लेते हैं। हालांकि सामान्य ज्ञान इसे स्वीकार नहीं कर सकता कि ख़ुदा तआला जो रब्बुल आलमीन (सारे संसारों का रब्ब) है वह किसी एक जाति को हिदायत के लिए चुन ले और बाकी सब को छोड़ देगा। मगर सामान्य ज्ञान चाहे कुछ कहे दुनिया में यह विचार फैला हुआ था और इस कारण से सख्त फसाद पैदा हो रहे थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस सच्चाई को दुनिया के सामने पेश किया और बड़े ज़ोर से दावा किया कि हर देश में नबी गुज़रे हैं और इस तरह एक बड़े फसाद के कारण का समूल उखाड़ फेंका। इस में कोई शक नहीं कि आप से पहले कुछ बुज़र्गों ने कुछ क़ौमों के बुज़र्गों को या कुछ क़ौमों ने कुछ क़ौमी बुज़ुर्गों को या कुछ क़ौमों ने कुछ अन्य क़ौमों के बुज़र्गों को ख़ुदा वाला मान लिया था जैसे एक देहलवी बुज़र्ग ने कहा कि(श्री) कृष्ण (जी) नबी थे। इसी तरह तौरात में अय्यूब अलैहिस्सलाम को नबी कर के प्रस्तुत किया गया। हालांकि वह बनी इस्राईल में से न थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस मसला को दूसरे रंग में प्रस्तुत किया। आप के दावा से पहले विभिन्न क़ौमों के हिदायत के बारे में विभिन्न विचार थे।

(1) कुछ का विचार था कि बाक़ी सभी लोग जहन्नमी हैं केवल उन की कौम के लाग मुक्ति प्राप्त हैं । यहूद तथा ज़रतुश्ती इस विचार के थे।

(2) कुछ का मानना था कि उनके संस्थापक के आने से पहले तो दुनिया की हिदायत का दरवाजा बंद था मगर उसके आने के बाद खुला है। ईसाई लोग इस विचार के पाबन्द हैं। उनके निकट हिदायत सर्व साधारण के लिए हज़रत मसीह नासरी के माध्यम से हुई है।

(3) कुछ का विचार था कि क़ौमी हिदायत तो उन की क़ौम से ही विशिष्ट है लेकिन कुछ ख़ास लोग दूसरी क़ौमों के भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं अगर वे विशेष ज़ोर लगाएं। सनातन धर्मी लोगों का यही मानना है। वह असल और सच्चा तो अपना धर्म स्वीकार करते थे परन्तु उन की यह आस्था है कि अगर कोई व्यक्ति अन्य धर्म का ख़ुदा तआला की मुहब्बत को दिल में पैदा कर के मुजाहिद: (कोशिश) करे तो अल्लाह तआला उस पर भी रहम करता है मानो एक ऐसा रास्ता मिल जाता है जो यद्यपि सीधा मंज़िल तक तो नहीं पहुंचता लेकिन चक्कर खा कर पहुंचता है।

मुसलमानों के विचार भी बावजूद इसके कि क़ुरआन ने इस समस्या को हल कर दिया था, अनिश्चित थे।

इस प्रकार के विचारों का परिणाम यह था कि विभिन्न देशों में सुलह असंभव हो रही थी और ज़िद में आकर सब लोग कहने लगे थे कि केवल हम ही मुक्ति पाएँगे, हमारे अतिरिक्त और कोई नहीं मुक्ति पा सकता। हमारा ही धर्म वास्तविक धर्म है। कुछ लोग दूसरों के बुज़ुर्गों को भी स्वीकार कर लेते थे लेकिन एक सुधारक या शिक्षक के रूप में नहीं बल्कि एक बुज़ुर्ग या पहलवान के रूप में जिस ने अपने ज़ोर से तरक्की की और वह उसी की ज़ात तक सीमित रही। आगे इस के माध्यम से दुनिया में हिदायत स्थापित नहीं हुई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आकर उस सोचने के बिंदु को ही बिल्कुल बदल दिया। आप ने इस मसला पर असूली रूप से निगाह डाली

(1) आप ने सूरज और उसकी किरणों, पानी और उस के प्रभाव, हवा और उसके असरों को देखा और कहा कि जिस ख़ुदा ने सब मनुष्यों को इन बातों में साझा किया है वह हिदायत में अंतर नहीं कर सकता और सिद्धांत रूप से सब क़ौमों में नबियों का होना अनिवार्य ठहराया। अत: आप ने जैसे हज़रत कृष्ण(जी) को इसलिए नबी स्वीकार नहीं किया कि वह एक बुज़ुर्ग हस्ती थे जिन्होंने एक अंधकार में पड़े हुए देश में व्यक्तिगत चेष्ठा के साथ ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त की थी बल्कि इसलिए कि आप ने ख़ुदा तआला के गुणों पर विचार कर के निष्कर्ष निकाला कि ऐसा संभव न था कि ख़ुदा हिंदू क़ौम को भुला दे और उसकी हिदायत का कोई सामान न करे।

(2) दूसरे आपने मनुष्य की प्रकृति और उसकी शक्तियों को देखा और अपने आप बोल उठे कि यह तत्व बर्बाद होने वाला नहीं, ख़ुदा ने उसे ज़रूर स्वीकार किया होगा और उसे प्रकाशित करने के समान पैदा किए होंगे।

अत: आप का विचार बिन्दु बिल्कुल पृथक था और आप का फैसला कुछ शानदार हस्तियों से प्रभावित होने का परिणाम न था बल्कि ख़ुदा तआला की महानता और मानवीय योग्यता और पवित्रता की बुनियाद पर था।

अब सुलह का रास्ता खुल गया। कोई हिन्दू नहीं कह सकता कि अगर मैं इस्लाम स्वीकार करूं तो मुझे अपने बुज़ुर्गों को बुरा समझना होगा क्योंकि इस्लाम उन्हें भी बुज़ुर्ग करार देता है और इस्लाम स्वीकार करने में वह उन्हीं का अनुसरण करेगा।

(2) दूसरा माध्यम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सार्वजनिक शान्ति की स्थापना के लिए यह धारण किया कि आप ने सुझाव दिया है कि हर धर्म के लोग अपने धर्म का गुणगान करें। दूसरे धर्मों पर आपत्ति न करें क्योंकि दूसरे धर्मों के दोष वर्णन से अपने धर्म की सच्चाई साबित नहीं होती बल्कि दूसरे धर्म के लोगों में द्वेष तथा हसद पैदा होता है।

(3) तीसरा नियम सार्वजनिक शान्ति की स्थापना के लिए आप ने यह प्रस्तावित किया कि देश की तरक्की फसाद और विद्रोह के माध्यम से न चाही जाए बल्कि शांति और सुलह के साथ सरकार से सहयोग करके इसके लिए कोशिश की जाए। इस में कोई शक नहीं कि इस समय जब कि असहयोग का ज़ोर है लोग इस वास्तविकता को नहीं समझ सकते परन्तु इस में कोई शक नहीं कि सहयोग से जिस आसानी से अधिकार मिल सकते हैं असहयोग से नहीं मिल सकते मगर सहयोग से अभिप्राय खुशामद(चापलूसी) नहीं, खुशामद और चीज़ है और सहयोग और चीज़ हैं। जिसे हर व्यक्ति जो विचार विमर्श का माद्दा रखता हो आसानी से समझ सकता है। खुशामद और पदों के लालच देश को नष्ट करती हैं और ग़ुलामी को चिरस्थायी बनाती है मगर सहयोग आज़ादी की ओर ले जाता है।

मआद(परलोक) संबंधित विचारों का सुधार

पनद्रहवां काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह किया है कि इनाम और सज़ा और बाकी परलोक सम्बंधित मामलों के बारे में ऐसा सही अनुसंधान प्रस्तुत किया है कि जिस से बढ़कर और बुद्धि को तसल्ली देने वाला अनुसंधान मन में नहीं आ सकता। आप से पहले सभी धर्मों में जज़ा(इनाम) तथा सज़ा और मआद (परलोक) के बारे में अजीब प्रकार के विचार फैले थे। जिनकी वजह से दुनिया इस आस्था से ही निराश हो रही थी और मआद को भ्रम करार दे रही थी। विभिन्न धर्मों के लोग यह आस्था रखते थे।

(1) कुछ लोगों का यह मानना था कि मुक्ति अदम एहसास (अनुभव के बिना) का नाम है। जैसे बुद्धों का विचार था।

(2) कुछ का मानना था कि मुक्ति ख़ुदा में फना (भस्म) हो जाने का नाम है। सनातनी हिंदू इसी आस्था के हैं।

(3) कुछ का मानना था कि मुक्ति पदार्थ से रूह के संबंध का पूर्ण रूप से स्वतंत्र होने का नाम है। जैनियों का यही विचार था।

(4) कुछ का विचार था मुक्ति अस्थायी और क्षणिक है, जैसे आर्य।

(5) कुछ का मानना था कि इनाम तथा सज़ा केवल आध्यात्मिक हैं, जैसे सिपर चौलिसट।

(6) कुछ का मानना था कि जज़ा तथा सज़ा शुद्ध शारीरिक हैं, जैसे यहूदी और मुसलमान।

(7) कुछ का मानना था कि दोज़ख शारीरिक और जन्नत आध्यात्मिक है, जैसे ईसाई।

(8) कुछ का विचार था दोज़ख की सज़ाएं जन्नत की नेअमतों की तरह हमेशा के लिए हैं।

मगर यह सब बातें बहुत ही आपत्तिजनक और संदेह पैदा करने वाली थीं। अगर एहसास का न होना मुक्ति है तो ख़ुदा ने मनुष्य को पैदा ही क्यों किया? पैदा तो इस बात के लिए किया जाता है जो भविष्य में प्राप्त होने वाली हो। ग़ैर एहसास तो जन्म से पहले मौजूद था। फिर पैदा करने का क्या उद्देश्य था? इसी तरह मुक्ति अगर ख़ुदा में फना हो जाने का नाम है तो यह इनाम किया हुआ। फना चाहे अलग हो चाहे ख़ुदा में एक पूर्ण अहसास वाली हस्ती के लिए इनाम नहीं कहला सकती। अगर पदार्थ से मुक्ति का नाम मुक्ति है रूहें पहले ही पदार्थ में क्यों डाली गईं। इस नए युग के शुभारंभ का उद्देश्य क्या था। इसी तरह यह भी ग़लत है कि जज़ा तथा सज़ा केवल आध्यात्मिक हैं क्योंकि इंसान की एक विशेषता यह है कि वह बाहर के प्रभाव को आत्मसात करना चाहता है और मानव स्वभाव की मांग है कि बाहर से भी आनन्द प्राप्त करे और अंदर से भी। इसी तरह वे जो कहते हैं कि जज़ा तथा सज़ा केवल शारीरिक हैं वे भी ग़लत कहते हैं। क्या यह हो सकता है कि मनुष्य को अनन्त जीवन इसलिए दिया जाएगा कि वह खाए और पीए और एक व्यर्थ उद्देश्य जीवन व्यतीत करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन सब विचारों का खंडन किया है और नीचे लिखी वास्तविकता पेश की है। आप फ़रमाते हैं:

मनुष्य का उद्देश्य मुक्ति नहीं बल्कि फलाह (कामयाबी) है। मुक्ति का अर्थ तो बच जानेके हैं और बच जाना अदम पर इंगित करता है और अदम लक्ष्य नहीं हो सकता। इसलिए मनुष्य का उद्देश्य फलाह है और फलाह कुछ खोने का नाम नहीं बल्कि कुछ पाने का नाम है और जब पाने का नाम फलाह है तो ज़रूरी है कि अगले जहान में भावनाएं और अधिक तेज़ हों ताकि अधिक प्राप्त कर सकें। यही कारण है कि मरने के बाद के जीवन के बारे में क़ुरआन में आया। وَ يَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ (अल्हाक्क: 18) कि इस दुनिया में तो चार बुनियादी गुणों का प्रकट होना मनुष्य के लिए होता है। अगले जहान में अर्श आठ मुख्य गुणों का प्रकट होगा अर्थात इस दुनिया की तुलना में अगले जहान की तजल्लियात बहुत बढ़कर होंगी।

फिर आपने साबित किया कि मुक्ति या फलाह चिरस्थायी है और कहा कि कर्म का बदला काम करने वाले की नीयत और जज़ा देने वाले की शक्ति पर होता है। इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर और मनुष्य की प्रकृति पर नज़र करते हुए जो फना से भागती और अनन्त जीवन प्राप्त करना चाहती है, फलाह का अनंत काल तक होना साबित है।

इसी तरह आप ने यह भी बताया कि जज़ा तथा सज़ा ना केवल आध्यात्मिक हैं और न केवल शारीरिक और न यह है कि इनमें से एक शारीरिक हो और दूसरी आध्यात्मिक, क्योंकि नेक तथा बुरे कर्म का केंद्र एक ही होता है। इस जज़ा तथा सज़ा का तरीका भी एक ही होना चाहिए। हां चूंकि पूर्ण इहसास आंतरिक तथा बाहरी भावनाओं के मिलने से होता है इसलिए जज़ा तथा सज़ा आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की इन्द्रियों पर आधारित होंगी और चूंकि वह संसार अधिक तेज अहसासों की जगह होगा, इसलिए वहाँ की जज़ा तथा सज़ा के अनुसार आवश्यकताओं की दृष्टि से एक नया शरीर इंसान को मिलेगा। वहाँ बेशक यह शरीर नहीं होगा। मगर होगा ज़रूर, अर्थात नया शरीर दिया जाएगा। जो यहां के लिहाज़ से रूहानी होगा। यहाँ की इबादतें वहाँ विभिन्न वस्तुओं के रूप में नजर आएंगी। उनकी ज़ाहरी शक्ल तो होगी मगर बावजूद इसके वह इस दुनिया के पदार्थ से न बनी हुई होंगी। मानो वहाँ फल और दूध और शहद और मकान तो होंगे लेकिन इस दुनिया की तरह के नहीं बल्कि एक सूक्ष्म पदार्थ के जिन्हें सूक्ष्मता के कारण इस दुनिया की तुलना में रूहानी जिस्म वाला कहा जा सकता है।

अब अंत में मैं बताना चाहता हूँ कि अगर कोई कहे कि यह सब बातें तो क़ुरआन में मोजूद थीं। मिर्ज़ा साहिब ने क्या किया? इन बातों की अभिव्यक्ति से उनका काम कैसे साबित हो गया? तो जवाब यह है कि इसी तरह अगर कोई ग़ैर मुस्लिम यह कहे कि सारी बातें तो ख़ुदा ने बताईं। मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) साहिब ने क्या काम किया। तो क्या यही नहीं कहोगे कि वास्तव में जो कुछ आप ने दुनिया का बताया, वह ख़ुदा तआला से आप को मिला। मगर सवाल यह है कि वह और किसी को क्यों नहीं मिला? आख़िर कोई नेकी और तक्वा और कुरबानी का स्तर आप को ऐसा प्राप्त था जो दूसरों को प्राप्त नहीं था। तब ही तो ख़ुदा तआला ने आप पर यह ज्ञान खोले अत: वह काम आप ही का काम कहलाएगा। यही जवाब हम देंगे कि दरअसल यह सब क़ुरआन में मौजूद था। मगर बावजूद इसके लोगों को नज़र न आता था और ख़ुदा तआला ने इस ज्ञानों को किसी पर न खोला मगर आप पर इन ज्ञान को खोल दिया और ऐसे समय में खोला जबकि दुनिया क़ुरआन की तरफ से मुंह फैर रही थी। अत: यद्यपि यह ज्ञान क़ुरआन करीम में मौजूद थे मगर दुनिया की नज़र से अदृश्य थे और ख़ुदा तआला ने उन्हें खोलने के लिए आपको चुना, इसलिए वे आप के ही काम कहलाएंगे।

मैं ने आप के कार्यों की संख्या पन्द्रह बताई है परंतु इस का यह अर्थ नहीं कि आप का काम यहीं तक खत्म हो गया है। आप का काम इससे बहुत व्यापक है और जो कुछ कहा गया है यह सिद्धांत है और इसमें भी चुनाव से काम लिया गया है। यदि आप के सब कामों को विस्तार से लिखा जाए तो हज़ारों की संख्या से बढ़ जाएंगे और मुझे लगता है अगर कोई व्यक्ति उन्हें किताब के रूप में जमा कर दे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वह इच्छा पूरी हो सकती है जो आप ने बराहीने अहमदिया में प्रकट की है और वह यह कि इस पुस्तक में इस्लाम के तीन सौ गुणों का वर्णन किया जाएगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह वादा अपनी विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से पूरा कर दिया। आप ने अपनी पुस्तकों में तीन सौ से भी अधिक गुणों को वर्णन फ़रमा दिया हैं और मैं यह साबित करने के लिए तैयार हूँ।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद (अ) के द्वारा अन्य धर्मों पर इस्लाम की विजय

(लईक अहमद डार, कादियान)

सृष्टि के आरंभ से ही इल्हामी ख़बरों और अल्लाह तआला की विशेष तकदीर में यह लिखा था कि कुफ्र और इस्लाम तथा सच और झूठ की सबसे बड़ी और अंतिम सार्वभौमिक लड़ाई मसीह मौऊद के समय में होगी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम की जीत होगी।

हमारे नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ तथा बरकतें हमेशा के लिए जारी हैं आप की वफात 63 साल की उम्र में हुई लेकिन इससे आप का फ़ैज़ बंद नहीं हुआ बल्कि आप की वफात के बाद ख़िलाफत राशिदा स्थापित हुई जो 30 साल तक रही फिर उम्मते मुहम्मदिया के सुधार के लिए अल्लाह तआला ने मुजद्ददीन और औलिया का निज़ाम जारी परमाया यहां तक कि चौदहवीं सदी हिजरी के आरम्भ में अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी के पूर्ण बरूज़, सच्चे आशिक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को हमारे देश भारत के पंजाब प्रांत में एक गुमनाम बस्ती कादियान में भेजा। आप को अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद तथा इमाम महदी बना कर भेजा। आप के हाथों इस्लाम की विजय की नींव डाली गई। उम्मत के बुज़ुर्गान इस बात को आरम्भ से मानते हैं कि इस्लाम की विजय मसीह मौऊद के ज़ाहिर होने से जुड़ी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम धर्म की अन्य धर्मों पर विजय के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो अपनी किताब "दअवतुल अमीर" में विस्तार से वर्णन करते हैं। उस का एक अंश पाठकों के लिए प्रस्तुत है। आप फरमाते हैं

चौथा सबूत या यों कहना चाहिए कि आप की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए चौथे प्रकार के सबूत ये हैं कि आप के हाथ पर अल्लाह तआला ने उस महान भविष्यवाणी को पूर्ण किया है जिसे पवित्र क़ुर्आन में मसीह मौऊद का विशेष कार्य बताया गया है अर्थात् आपके हाथ पर अल्लाह तआला ने इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी करके दिखाया। पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ۙ (सूरह अस्सफः10)

ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत (पथ-प्रदर्शन) और सच्चा धर्म देकर भेजा है ताकि अल्लाह तआला उस धर्म को शेष समस्त धर्मों पर विजयी करके दिखा दे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम से ज्ञात होता है कि यह बात मसीह मौऊद के समय में होगी, क्योंकि दज्जाल के उपद्रव को तोड़ने तथा याजूज, माजूज की तबाही तथा ईसाइयत को नष्ट करने का कार्य आप (स.अ.व.) ने मसीह के ही सुपुर्द वर्णन किया है। ये उपद्रव समस्त उपद्रवों से बड़े बताए गए हैं तथा यह भी खबर दी गई है कि दज्जाल अर्थात् ईसाइयत के समर्थक उस समय समस्त धर्मों पर विजयी हो जाएँगे। इस लिए उन पर विजयी होने से बिल्कुल स्पष्ट है कि अन्य धर्मों पर भी इस्लाम को विजय प्राप्त हो जाएगी।

अत: ज्ञात हुआ कि لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ से अभिप्राय मसीह मौऊद का ही युग है तथा इसका यह अर्थ ऐसा है कि लगभग समस्त मुसलमानों की इस पर सहमति है। अत: तफ़सीर (व्याख्या) जामिउलबयान जिल्द 29 में इस आयत की व्याख्या में लिखा है कि "व ज़ालेक इन्द नुज़ूले ईसा इब्ने मर्यम" यह धर्म पर विजय ईसा बिन मरयम के युग में होगी तथा बुद्धि द्वारा अनुमान भी इसी का समर्थन करते हैं, क्योंकि समस्त धर्मों का प्रकटन जैसा कि इस समय हुआ है, इससे पूर्व नहीं मिलता। परस्पर मेल-मिलाप के अधिक हो जाने के कारण समस्त धर्मों के मानने वालों में एक जोश उत्पन्न हो गया है तथा धर्मों की इतनी प्रचुरता नज़र आती है कि इससे पहले इतनी प्रचुरता दिखाई नहीं देती। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में तो मात्र चार धर्म ही इस्लाम के मुकाबले पर आए थे, अर्थात् मक्का के मुश्रिकों (अनेकेश्वरवाद) का धर्म, ईसाइयों का धर्म, यहूदियों तथा अग्नि पूजकों (पारसी) का धर्म। अतएव उस युग में इस भविष्यवाणी के प्रकटन का अभी समय नही आया था, उसका समय अब आया है, क्योंकि इस समय समस्त धर्म प्रकट हो गए हैं तथा यातायात के नवीन आविष्कृत साधनों, तार और प्रेस इत्यादि के आविष्कार से धर्मों का मुकाबला बड़े जोश से प्रारंभ हो गया है।

अत: पवित्र क़ुर्आन, हदीसों और सद्बुद्धि से ज्ञात होता है कि मान्यताओं को भुला चुके धर्मों पर इस्लाम की विजय प्रत्यक्ष तौर पर मसीह मौऊद के युग में ही निश्चित है तथा मसीह मौऊद का मूल कार्य यही है। इस कार्य को उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं कर सकता। जो व्यक्ति इस कार्य को सम्पन्न करे उसके मसीह मौऊद होने में कोई सन्देह नहीं। घटनाओं से सिद्ध है कि यह कार्य अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के हाथों से पूर्ण कर दिया है। अत: आप ही मसीह मौऊद हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के दावे से पूर्व इस्लाम की स्थिति इतनी कमज़ोर हो चुकी थी कि स्वयं मुसलमानों में से समझदार तथा समय से परिचित लोग ये भविष्यवाणियां करने लगे थे कि कुछ दिनों में इस्लाम बिल्कुल समाप्त हो जाएगा तथा परिस्तिथियां इस बात की ओर संकेत भी कर रही थीं क्योंकि ईसाइयत इस्लाम को इस तेज़ी के साथ खाती चली जा रही थी कि एक शताब्दी तक इस्लाम के बिल्कुल मिट जाने का खतरा था। मुसलमान ईसाइयों के मुक़ाबले में इतना अपमान पर अपमान सहन कर रहे थे कि नवीन मुसलमान कौमें तो पृथक रहीं, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सन्तान अर्थात् सादात में से सहस्त्रों इस्लाम को त्याग कर ईसाई हो गए थे और न केवल ईसाई हो गए थे अपितु इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध अत्यन्त दूषित साहित्य प्रकाशित कर रहे थे, तथा मंचों पर खड़े होकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र अस्तित्व पर ऐसे कष्टदायक आरोप लगाए जाते थे कि उनको सुनकर एक मुसलमान का कलेजा छलनी हो जाता था। मुसलमानों की कमज़ोरी इतनी बढ़ गई थी कि हिन्दुओं की वह निष्प्राण जाति जिसे प्रचार के मैदान में कभी भी सफलता प्राप्त नहीं हुई और जो सदा अपने घर की सुरक्षा ही का प्रयास करती तथा वह भी असफल प्रयास करती रही है उसे भी साहस हो गया तथा उसमें से भी एक सम्प्रदाय आर्यों का खड़ा हो गया जिसने अपना उद्देश्य मुसलमानों को हिन्दू बनाना निश्चित किया, तथा उसके लिए व्यवहारिक तौर पर प्रयत्न भी प्रारंभ कर दिए। यह दृश्य बिल्कुल ऐसा ही था जैसे एक अचूक

निशानेबाज़ के शव पर गिद्ध एकत्र हो जाते हैं। या तो वे उसकी शक्ति से भयभीत हो कर उसके निकट भी नहीं फटकते थे या उसके मांस के टुकड़े नोंच-नोंच कर खाने लगते हैं तथा उसी की हड्डियों पर बैठ कर उसका मांस खाते हैं। कुछ मुसलमान लेखक तक जो इस्लाम के समर्थन हेतु खड़े होते थे इस्लाम की विशेषता सिद्ध करने के स्थान पर इस बात का इक़रार करने लग गए थे कि इस्लाम के आदेश असभ्य और असंस्कृत युग के अनुकूल थे इसलिए वर्तमान युग के प्रकाश के अनुसार उन पर ऐतिराज़ नहीं करने चाहिएँ।

इस आन्तरिक निराशा तथा बाहरी आक्रमण के समय हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस्लाम की सुरक्षा का कार्य आरंभ किया तथा सर्वप्रथम आक्रमण ही इतना शक्तिशाली किया कि शत्रुओं के होश उड़ गए। आप ने एक किताब "बराहीन अहमदिया" लिखी जिसमें इस्लाम की सच्चाई के तर्कों को व्याख्यात्मक रूप में वर्णन किया तथा इस्लाम के शत्रुओं को चुनौती दी कि यदि वे अपने धर्मों से तर्कों का पाँचवाँ भाग दिखा देंगे तो आप उनको दस हज़ार रुपया देंगे। एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने के बावजूद कोई शत्रु इस किताब का उत्तर न दे सका तथा हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक शोर मच गया कि यह किताब अपना उदाहरण स्वयं है। शत्रु स्तब्ध रह गए कि या तो इस्लाम अपनी रक्षा और बचाव की भी शक्ति नहीं रखता था या इस योद्धा के बीच में आ कूदने से उसकी तलवार मान्यताओं को भुला चुके धर्मों के सरों पर इस शक्ति से पड़ने लगी है कि उनको अपने प्राणों के लाले पड़ गए हैं।

उस समय तक आपने मसीह होने का दावा नहीं किया था और न ही लोगों में आपके विरोध का जोश उत्पन्न हुआ था, वे द्वेष से रिक्त थे। परिणाम यह हुआ कि सहस्त्रों मुसलमानों ने घोषणात्मक रूप में कहना प्रारंभ कर दिया कि यही व्यक्ति इस युग का मुजद्दिद है अपितु लुधियाना के एक बुज़ुर्ग ने जो अपने समय के वलियों (ऋषियों) में गिने जाते थे यहां तक लिख दिया कि -

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पर नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

इस किताब के बाद आपने इस्लाम की सुरक्षा और उसके समर्थन में इतना प्रयास किया कि अन्ततः इस्लाम के शत्रुओं को स्वीकार करना पड़ा कि इस्लाम मुर्दा नहीं अपितु जीवित धर्म है तथा उन्हें चिन्ता पड़ गई कि इस्लाम के सामने हमारे धर्म क्योंकर ठहरेंगे। उस समय उस धर्म की जो अपनी सफलता पर सर्वाधिक गर्व कर रहा था तथा इस्लाम को अपना शिकार समझ रहा था, यह स्थिति है कि उसके प्रचारक हज़रत अक़दस के सेवकों से इस प्रकार भागते हैं जिस प्रकार गधे शेरों से भागते हैं। किसी में यह शक्ति नहीं कि वह अहमदी के मुक़ाबले पर खड़ा हो जाए। आज आप(अ) के द्वारा इस्लाम समस्त धर्मों पर विजय प्राप्त कर चुका है, क्योंकि तर्कों की तलवार ऐसी धारदार है कि यद्यपि उस की चोट देर के बाद अपना प्रभाव दिखाती है, परन्तु उस का प्रभाव न मिटने वाला होता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ईसाइयत यद्यपि अभी इसी प्रकार संसार को अपनी परिधि में लिए हुए है जिस प्रकार पूर्व में थी और अन्य धर्म भी उसी प्रकार स्थापित हैं जिस प्रकार पूर्व में थे, परन्तु निस्सन्देह उन की मृत्यु की घंटी बज चुकी है तथा उनकी रीढ़ की हड्डी टूट चुकी है। रीति-रिवाजों के प्रभाव के कारण अभी लोग इस्लाम में इस प्रचुरता के साथ प्रवेश नहीं करते जिस बाहुल्य से प्रवेश करने पर उनकी मृत्यु प्रत्यक्ष दर्शियों को दिखाई दे सकती है परन्तु लक्षण प्रकट हो चुके हैं।

बुद्धिमान व्यक्ति बीज से अनुमान लगा लेता है। हज़रत अक़दस ने उन पर ऐसी चोट की कि उस के लक्ष्य से बच नहीं सकते तथा शीघ्र या देर से एक मुर्दा ढेर की भांति इस्लाम के पैरों पर गिरेंगे। वे आक्रमण जो आपने अन्य धर्मों पर किए, जिन का परिणाम उनकी निश्चय ही मृत्यु है ये हैं

ईसाई धर्म पर प्रहार

ईसाई धर्म पर तो आप का यह प्रहार है कि उसकी समस्त सफलता इस विश्वास पर थी कि हज़रत मसीह सलीब पर मर कर लोगों के लिए कफ़्फ़ारा (पाप-निवारण) हो गए और पुनः जीवित होकर आकाश पर ख़ुदा के दाएँ हाथ पर जा बैठे। एक ओर उनकी मृत्यु जिसे लोगों के लिए प्रकट किया जाता था तो लोगों के हृदयों में उनके प्रेम की लहर दौड़ जाती थी और दूसरी ओर उन का जीवित होना और आकाश पर ख़ुदा के दायें हाथ पर जा बैठना उनकी श्रेष्ठता और ख़ुदा होने का इक़रार करवा लेता था। आप ने इन दोनों बातों को इन्जील ही से गलत सिद्ध करके दिखाया तथा इतिहास से सिद्ध कर दिया कि मसीह का सलीब पर मरना असंभव था, क्योंकि सलीब पर लोग तीन-तीन दिन तक जीवित रहते थे। मसीह को इन्जीलों के कथानानुसार केवल तीन-चार घंटे सलीब पर रखा गया अपितु इन्जील में है कि जब उन्हें सलीब से उतारा गया तो उनके शरीर में भाला चुभोने से शरीर से जीवित रक्त निकला तथा मुर्दे के शरीर से जीवित रक्त नहीं निकला करता अपितु इस से भी बढ़कर यह सिद्ध किया कि हज़रत मसीह ने यह भविष्यवाणी की थी जो अब तक इन्जीलों में विद्यमान है कि आप जीवित ही सलीब से उतर आएँगे। आपने कहा था इस युग के लोगों को युनुस नबी जैसा चमत्कार दिखाया जाएगा। जिस प्रकार वह तीन दिन-रात मछली के पेट में रहा उसी भांति "आदम का बेटा तीन दिन-रात क़ब्र में रहेगा" और यह बात सर्वसम्मति से स्वीकार की जाती है कि यूनुस नबी जीवित ही मछली के पेट में दाख़िल हुआ और जीवित ही उस से बाहर आया। अतः इस प्रकार मसीह अलैहिस्सलाम भी जीवित ही क़ब्र में उतारे गए और जीवित ही उसमें से निकाले गए। चूँकि समस्त तर्कों का आधार इन्जीलों पर ही था इस आक्रमण का उत्तर ईसाई कुछ न दे सकते थे और न अब दे सकते हैं। इस लिए कफ़्फ़ारा और मसीह की दूसरों के लिए सलीब पर मारे जाने की आस्था जो लोगों को ईसाइयत की ओर आकर्षित करके ला रही थी बिल्कुल मिथ्या हो गई और उस की एक टांग टूट गई।

ईसाइयत की प्रतिमा की दूसरी टांग हज़रत मसीह के जीवित आकाश पर जाने और ख़ुदा के दायें हाथ पर बैठ जाने की थी। यह टांग भी आप ने इन्जील के सबूतों से ही तोड़ दी, क्योंकि आप ने इन्जील से ही सिद्ध कर दिखाया कि मसीह अलैहिस्सलाम सलीबी घटना के पश्चात आकाश पर नहीं गए अपितु ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान की ओर चले गए। जैसा कि उल्लेख है कि - मसीह अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों को एकत्र करने हेतु आया हूँ **'मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़खाने की नहीं, मुझे उनको लाना भी आवश्यक है'** तथा इतिहास से सिद्ध है कि बाबुल के राजा 'बुख़्त नसर' ने बनी इस्राईल के बारह समूहों में से दस को बंदी बना कर अफ़गानिस्तान की ओर देश से निष्कासित कर दिया था। अतः हज़रत मसीह के इस कथन के अनुसार उनका अफ़गानिस्तान और कश्मीर की ओर आना अनिवार्य था ताकि वह उन खोई हुई भेड़ों को ख़ुदा का कलाम पहुँचा दें। यदि वह इधर न आते तो अपने इक़रार के

अनुसार उनका अवतरण व्यर्थ और निरर्थक हो जाता।

आपने इन्जीली साक्ष्य के अतिरिक्त ऐतिहासिक और भोगोलिक साक्ष्य से भी इस दावे को पूर्ण प्रमाण तक पहुँचा दिया। अत: प्राचीन मसीही इतिहासों से सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह के हवारी (शिष्य) हिन्दुस्तान की ओर आया करते थे और यह कि तिब्बत में एक किताब बिल्कुल इंजील की शिक्षा के समरूप उपलब्ध है जिसमें यह दावा किया गया है कि उसमें ईसा के जीवन के वृत्तान्त हैं जिससे विदित हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम इन क्षेत्रों की ओर आए थे। इसी प्रकार आप ने सिद्ध किया कि इतिहास से यह बात सिद्ध है तथा अफ़गानिस्तान और कश्मीर के अवशेष और नगरों के नाम इस बात का सत्यापन करते हैं कि इन देशों में यहूदी लाकर बसाए गए थे। अत: कश्मीर का अर्थ जो वास्तव में कशीर है (जैसा कि मूल निवासियों की भाषा से ज्ञात होता) 'श्याम के देश के समान' का है। 'क' का अर्थ 'समान' और शीर 'श्याम' (सीरिया) का नाम है। इसी प्रकार काबुल और अनेक अफ़गानी नगरों के नाम श्याम के नगरों के नामों से मिलते हैं। अफ़गानिस्तान और कश्मीर के निवासियों के मुखमंडलों की हड्डियों की बनावट भी बनी इस्राईल के मुखमंडलों की बनावट से मेल खाती है परन्तु सब से बढ़कर यह कि आपने इतिहास के माध्यम से मसीह की क़ब्र का भी पता ज्ञात कर लिया, जो कश्मीर के शहर श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में विद्यमान है। कश्मीर के प्राचीन इतिहासों से विदित होता है कि यह एक नबी की क़ब्र है जिसे शहज़ादा नबी कहते थे, जो पश्चिम की ओर से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व आया था तथा कश्मीर के पुराने लोग उसे ईसा साहिब की क़ब्र कहते हैं।

अत: भिन्न-भिन्न माध्यमों से पहुँचने वाले वर्णनों से आप ने सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह(अ) मृत्यु पाकर कश्मीर में दफ़्न हैं (मुर्दे को पृथ्वी के अन्दर एक विशेष प्रकार से गाड़ देना) तथा उनके पक्ष में ख़ुदा तआला का यह वादा पूर्ण हो चुका है कि وَّ اٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيْنٍ (अल्मोमेनून 50) और हमने मसीह और उसकी मां को एक ऐसे निवास स्थल पर शरण दी जो ऊँचा है फिर है भी मैदान में तथा उसमें बहुत से झरने भी बहते हैं। यह परिभाषा कश्मीर पर पूर्ण चरितार्थ होती है।

इसलिए मसीह के जीवन की परिस्थितियां उन की मृत्यु तक सिद्ध करके तथा उनकी क़ब्र तक का निशान निकाल कर हज़रत मसीह मौऊद ने मसीह की ख़ुदाई पर ऐसा शक्तिशाली आक्रमण किया है कि मसीह की ख़ुदाई (ख़ुदा होना) की आस्था सदा के लिए एक मृत आस्था बन गई है और अब ईसाइयत कभी भी सर नहीं उठा सकती।

समस्त धर्मों के लिए एक ही अस्त्र

चूँकि ईसाई धर्म क्या राजनैतिक श्रेष्ठता की दृष्टि से और क्या अपनी विशालता और क्या अपने प्रचार के प्रयासों की दृष्टि से और क्या ज्ञान और शैक्षणिक उन्नति की दृष्टि से उस युग में अन्य समस्त धर्मों पर एक श्रेष्ठता रखता था। इसी कारण अल्लाह तआला ने विशेष हथियार प्रदान किए, परन्तु शेष समस्त धर्मों के लिए एक ही ऐसा हथियार प्रदान किया जिसकी चोट से कोई धर्म बच नहीं सकता, अन्य प्रत्येक धर्म के अनुयायी इस्लाम का शिकार हो गए हैं। वह अस्त्र यह है कि प्रत्येक धर्म के पूर्वजों के द्वारा अल्लाह तआला ने संसार के अन्तिम युग में एक सुधारक की सूचना दे रखी थी। उस सूचना के कारण एक मुनि या अवतार या उन्होंने उसका जो भी नाम रखा था उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और अपनी

नज़्म

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया हो कर मसीह
ख़ुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे-बहार
आसमाँ पर दावते हक़ के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फरिश्तों का उतार
आ रहा है इस तरफ एहरारे यूरोप का मिजाज़
नब्ज़ फिर चलने लगी मुर्दों की नागह ज़िन्दावार
कहते हैं तसलीस को अब एहले दानिश अलविदा
फिर हुए हैं चशमए तौहीद पर अज़ ज़ां निसार
बाग़ में मिल्लत है कोई गुले रअना खिला
आई है बादे सबा गुलज़ार से मस्तानावार
आ रही है अब तो ख़ुशबु मेरे युसफ की मुझे
गो कहो दीवाना में करता हूँ इस का इन्तज़ार
हर तरफ़ हर मुल्क में है बुत परस्ती को ज़वाल
कुछ नहीं इन्साँ परसती को कोई इज़ ओ वकार
आसमाँ से है चली तौहीदे ख़ालिक की हवा
दिल हमारे साथ हैं गो मुँह करें बक बक हज़ार
''इसमऊ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह
नीज़ बिश्नु अज़ ज़मीं आमद इमामे कामगार
आसमाँ बारद निशाँ अल वक्त मे गोयद ज़मीं
ईं दों शाहिद अज़ पए मन नारा ज़न चूँ बेक़रार
अब इसी गुलशन में लोगों राहत ओ आराम है
वक्त है जल्द आओ ऐ आवारगाने-दश्ते ख़ार
इक ज़मां के बाद अब आई है यह ठण्डी हवा
फिर ख़ुदा जाने कि कब आवें यह दिन और यह बहार
मैं कभी आदम कभी मूसा कभी याकूब हूँ
नीज़ इब्राहीम हूँ नस्लें हैं मेरी बेशुमार
इक शजर हूँ जिस को दाऊदी सिफत के फल लगे
मैं हुआ दाऊद और जालूत है मेरा शिकार
पर मसीहा बन के मैं भी देखता रूए सलीब
ग़र न होता नामे अहमद जिस पे मेरा सब मदार

☆ ☆ ☆

समस्त उन्नति और उत्थान को उस से संलग्न समझते थे। हिन्दुओं में भी ऐसी भविष्यवाणियां थीं, पारसियों में भी थीं तथा अन्य छोटे-बड़े धर्मावलम्बियों में भी थीं तथा इन समस्त भविष्यवाणियों में आने वाले मौऊद (कथित) का समय भी बताया गया था अर्थात् उसके युग के कुछ लक्षण बतौर पहचान बता दिए गए थे। अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद पर यह स्पष्ट कर दिया कि ये जितनी भविष्यवाणियां हैं उन में जो लक्षण बताए गए हैं सब मिलते-जुलते हैं और यदि कुछ भविष्यवाणियों में कुछ अन्य भविष्यवाणियों की अपेक्षा कुछ अधिक लक्षण (निशान) बताए गए हैं तो वे भी उसी युग की ओर संकेत कर रहे हैं जिस ओर कि शेष लक्षण। इसलिए ये समस्त नबी या अवतार एक ही युग में आने वाले हैं।

अब इधर सहस्त्रों वर्षों के पश्चात इन भविष्यवाणियों का इस युग में पूर्ण होना बताता है कि वे ख़ुदा तआला की ओर से थीं, मनुष्य या शैतान की ओर से न थीं, क्योंकि आयत

يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿۲۷﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(सूरह अल्जिन्न: 27-28)इसका फैसला कर रही है तथा

दूसरी ओर यह बात बिल्कुल बुद्धि के विरुद्ध है कि एक ही समय में प्रत्येक क़ौम और जाति में अल्लाह तआला की ओर से रसूल, नबी या अवतार खड़े किए जाएँ जिन का यह कार्य हो कि वे उस जाति को अन्य जातियों पर विजयी करें अर्थात् ख़ुदा के नबी ही परस्पर मुक़ाबला करें। फिर यह भी असंभव है कि एक ही समय में प्रत्येक जाति अन्य जातियों पर विजयी हो जाए। अत: एक ओर इन भविष्यवाणियों का सच्चा सिद्ध होना कि ये ख़ुदा तआला की ओर से हैं और दूसरी ओर उनका विभिन्न लोगों पर पूर्ण होकर उपद्रव का कारण बनना अपितु बुद्धि-संगत न होना इस बात पर साक्षी है कि वास्तव में इन समस्त भविष्यवाणियों में एक ही अस्तित्व की सूचना दी गई तथा अल्लाह तआला की इच्छा यह थी कि पहले संसार की समस्त जातियों को प्रतीक्षा कराए और जब वह आ जाए तो उसके मुख से इस्लाम की सच्चाई की गवाही प्रस्तुत कराके उन धर्मावलम्बियों का इस्लाम में प्रवेश कराए तथा इस्लाम को उन धर्मों पर विजयी करे। अत: महदी कोई न था परन्तु मसीह और कृष्ण कोई न था परन्तु मसीह, ज़रतश्तियों का मैसूदरबहमी कोई न था परन्तु वही जो कृष्ण महदी और मसीह था और इसी प्रकार अन्य कौमों के मौऊद (जिनका वादा किया गया था) वास्तव में एक ही व्यक्ति था। अत: भिन्न-भिन्न नामों द्वारा भविष्यवाणी करने का उद्देश्य यह था कि अपने नबियों से उसकी सूचना सुनकर तथा अपनी भाषा में उसका नाम देखकर वे उसे अपना समझें, पराया या अजनबी न समझें, यहां तक कि वह समय आ जाए कि जब वह मौऊद प्रकट हो तथा उस के समय में समस्त भविष्यवाणियों को पूर्ण होते देखकर उन की सच्चाई को स्वीकार करना पड़े तथा उसकी साक्ष्य पर वे इस्लाम को स्वीकार करें।

इस नीतिपूर्ण क्रिया का उदाहरण बिल्कुल यह है कि कोई व्यक्ति बहुत सी कौमों को लड़ता हुआ देखकर उन से कामना करे कि मध्यस्थों द्वारा निर्णय कर लें और जब वे अपने-अपने मध्यस्थ नियुक्त कर लें तो ज्ञात हो कि वे एक ही व्यक्ति के विभिन्न नाम हैं तथा उसके फैसला करने पर सब की संधि (सहमति) हो जाए।

अत: यह सिद्ध करके कि विभिन्न धर्मों में अन्तिम युग के मौऊद के संबंध में जो भविष्यवाणियां हैं वे इस युग में पूर्ण हो चुकी हैं फिर यह सिद्ध करने के पश्चात कि एक ही समय में कई मौऊद जिन का उद्देश्य यह हो कि सच्चाई को समस्त संसार में प्रसारित करें तथा अपनी क़ौम को विजयी करें असंभव है। आप ने सिद्ध कर दिया कि वास्तव में समस्त धर्म भिन्न-भिन्न नामों के साथ एक ही मौऊद को याद कर रहे थे और वह मौऊद आप हैं। चूँकि नबी किसी क़ौम का नहीं होता, जो ख़ुदा के लिए उसके साथ हो वह उसका होता है। इसलिए वह जैसे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के अपने ही व्यक्ति हैं तथा आपके मानने से उनकी समस्त उन्नति और उत्थान निर्भर हैं। आपको स्वीकार करने और मानने का अर्थ यह है कि इस्लाम में प्रवेश करें अथवा दूसरे शब्दों में यह कि वह भविष्यवाणी पूर्ण हो जाए कि मसीह मौऊद इसलिए आएगा ताकि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّه उसके द्वारा अल्लाह तआला इस्लाम धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे।

यह आक्रमण इतना घातक है कि कोई धर्म इसका मुकाबला नहीं कर सकता। प्रत्येक धर्म में अन्तिम सुधारक की भविष्यवाणी विद्यमान है और जो लक्षण बताए गए हैं वे इस युग में पूर्ण हो चुके हैं परन्तु आप के अतिरिक्त दावा करने वाला कोई खड़ा नहीं हुआ। इसलिए या तो लोग अपने धर्मों को मिथ्या समझें या विवश होकर स्वीकार करें कि यह इस्लाम का मौऊद ही उन किताबों का मौऊद था और उस पर ईमान लाएँ। इन दो बातों के अतिरिक्त और कोई तीसरी बात संसार के धर्मों के अनुयायियों के लिए प्रकट नहीं हुई। इन दोनों बातों में इस्लाम को विजय प्राप्त हो जाती है क्योंकि यदि अन्य धर्मों के अनुयायी अपने धर्मों को झूठा समझकर त्याग दें तब भी इस्लाम विजयी रहा और यदि वे उन धर्मों को सच्चा करने हेतु उनकी भविष्यवाणी के अनुसार इस युग के सुधारक को स्वीकार कर लें तब भी इस्लाम विजयी रहा।

यह वह आक्रमण है कि ज्यों-ज्यों अन्य धर्मों के अनुयायियों पर इस आक्रमण का प्रभाव होगा वे इस्लाम को स्वीकार करने पर विवश होंगे और अन्तत: संसार में इस्लाम ही इस्लाम दिखाई देने लगेगा। मसीह मौऊद ने नबियों की पद्धति के अन्तर्गत बीज बो दिया है, पेड़ अपने समय पर परिपक्व होकर फल देगा तथा संसार उस के फलों की मधुरता पर मुग्ध तथा उस की शीतल छाया की स्वीकारिता पर विवश होगा कि उसी के नीचे आकर बैठे।

(अन्वारुल उलूम भाग 7 पृष्ठ 431 से 439)

☆ ☆ ☆

शाने इस्लाम

कलाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी

मसीह मौऊद व मेहदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

इस्लाम से न भागो राहे हुदा यही है
ऐ सोने वालो ! जागो शम्शुज़ ज़ुहा यही है
मुझको क़सम ख़ुदा की जिस ने हमें बनाया
अब आसमाँ ने नीचे दीने ख़ुदा यही है
वह दिलसताँ निहाँ है किस रह से उस को देखें
इन मुश्किलों का यारो ! मुश्किल कुशा यही है
बातिन सिय: हैं जिनके इस दीं से हैं वो मुनकिर
पर ऐ अन्धेरे वालो ! दिल का दिया यही है
दुनिया की सब दुकानें हैं हम ने देखीं भालीं
आखिर हुआ ये साबित दारुश्शिफ़ा यही है
सब खुश्क हो गए हैं जितने थे बाग़ पहले
हर तरफ मैं ने देखा बुस्ताँ हरा यही है
दुनिया में इस का सानी कोई नहीं है शर्बत
पी लो तुम इसको यारो ! आबे बका यही है
इस्लाम की सच्चाई साबित है जैसे सूरज
पर देखते नहीं हैं दुश्मन बला यही है
जब खुल गई सच्चाई फिर उसको मान लेना
नेकों की है ये खस्लत राहे हया यही है
जो हो मुफीद लेना, जो बद हो, उस से बचना
अक्लो ख़िर्द यही है, फह्मो ज़का यही है
मिलती है बादशाही इस दीं से आसमानी
ऐ तालिबाने दौलत ! ज़िल्ले हुमा यही है
सब दीं है इक फसाना, शिर्कों का आशियाना
उस का, जो है यगाना, चेहरा नुमा यही है

(दुर्रे समीन)

शुक्रिया

अख़बार बदर हिन्दी के इस विशेष नम्बर की प्रूफ रीडिंग में आदरणीय फरहत अहमद शाहिद कादियान तथा आदरणीय महबूबल हसन साहिब कादियान ने विशेष सहयोग दिया है। इदारा आप का शुक्रिया अदा करती है। सम्पादक

हज़रत मसीह मौऊद(अ) और अरब लोगों में अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की तब्लीग़

(मुहम्मद ताहिर नदीम, अरबी डेस्क यू.के)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आख़रीन को अव्वलीन से मिलाने वाला मौऊद नबी वादा के अनुसार फारस वालों में प्रकट हुआ। यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वही आध्यात्मिक पुत्र और प्रतिरूप है जिसके द्वारा अल्लाह 'ले युज़हेरहो अलद्ददीने कुल्लाही' का वादा पूरा करना था। इस महान काम को अंजाम देने के लिए जहाँ अल्लाह तआला ने उसे अपने समर्थन और सहायता के वादे करते हुए सामान्य तौर यह फ़रमाया कि में तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा वहाँ विभिन्न जातियों और देशों में आप की तब्लीग़ तो विशेष रूप से फैलने की खबरें भी दे दीं और यह कैसे हो सकता था कि आप जिस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ादिम और सच्चे आशिक थे तथा आध्यात्मिक पुत्र बन के आए थे उस की अरब क़ौम अरब देशों के बारे में आप को ख़बरें न मिली हों। इसलिए अल्लाह ने अरबों के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इलहाम भी किए और रोया तथा कश्फों द्वारा भी ख़बरें प्रदान कीं। आइए इन का अध्ययन करके अपने ईमानों को ताज़ा करते हैं।

अरबों में तब्लीग़ पहुंचने और उनके ईमान लाने की बिशारतें

एक रोया का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " कोई पच्चीस छब्बीस साल का समय गुज़रा एक बार मैंने ख़्वाब में देखा था कि एक व्यक्ति मेरा नाम लिख रहा है तो आधा नाम उसने अरबी में लिखा है और आधा अंग्रेज़ी में लिखा है।"

(अलहकम जिल्द 9 नंबर 32 दिनांक 10 सितम्बर 1905, पृष्ठ 3)

1905 ई में हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि पच्चीस छब्बीस साल पहले का यह रोया है इसका अर्थ है कि लगभग 1880 ई की बात है।

इस रोया से अरब तथा अजम(अरब के अतिरिक्त देश) में आप के नाम की समान लोकप्रियता की ओर भी संकेत लगता है।

अरब लोगों का ध्यान रखने और मार्गदर्शन का इरशाद:

1893 ई में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी अरबी किताब हमामतुल बुश्रा लिखी इसमें ख़ुदाई बिशारत और उपदेश लिखते हुए फरमाते हैं:

وَإِنَّ رَبِّي قَدْ بَشَّرَنِي فِي الْعَرَبِ وَأَلْهَمَنِي أَنْ أُمَوِّنَهُمْ وَأُرِيَهُمْ طَرِيْقَهُمْ وَأُصْلِحَ لَهُمْ شُيُوْنَهُم

(हमामतुल बुशरा, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 7 पृष्ठ 182)

अनुवाद: और मेरे रब्ब ने अरब के बारे में मुझे बिशारत दी और इल्हाम किया है कि उनका ध्यान रखो और ठीक मार्ग बताओ और उनके मामलों को ठीक करो।

7 सितम्बर 1905 ई को आप को कश्फ़ में एक काग़ज़ दिखाई दिया उस पर लिखा था:

مَصَالِحُ الْعَرَبِ مَسِيْرُ الْعَرَبِ

इस विवरण में हज़ूर अलैहिस्सलाम ने कहा: " इसके यह अर्थ हो सकते हैं कि (अरबों में चलना) शायद भाग्य में हो कि हम अरब में जाएं ... नबियों के साथ हिजरत भी है लेकिन कुछ रोया नबी के अपने ज़माना में पूरे होते हैं और कुछ बच्चों या किसी अनुकरण कारी के माध्यम से पूरे होते हैं, जैसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कैसर तथा किसरा की चाबियां मिली थीं तो वे देश हज़रत उमर रज़ि के ज़माने में विजय हुए। "

(बदर जिल्द 1 नंबर 23, दिनांक 7 सितम्बर 1905 ई)

यह भविष्यवाणी हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह के द्वारा पूरी हुई। अत: हुज़ूर दो बार अरब देशों में तशरीफ़ ले गए। पहले तो 1912 में ख़लीफा बनने से पहले मिस्र तशरीफ़ ले गए और वहां से हज बैतुल्लाह शरीफ के लिए मक्का और मदीना का सफर किया दूसरी बार 1924 ई में बैतुल मुकद्दस और दमिश्क तशरीफ़ ले गए।

और जहां तक मसालेहुल अरब की भविष्यवाणी का संबंध है तो यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़लीफ़ाओं के मुबारक ज़माना में अरबों में अहमदियत की तब्लीग़ और उनके लाभों की रक्षा के लिए उनके मार्गदर्शन और उनके लिए दुआओं के द्वारा पूरी हुई और हो रही है।

मक्का वालों की बहुत अधिक संख्या में अहमदियत स्वीकार करने की ख़ुश ख़बरी

1894 ई में आपने अरबी किताब नूरुल हक लिखी जिस में यह ख़ुश ख़बरी फरमाई:

وَإِنِّيْ أَرَى أَنَّ أَهْلَ مَكَّةَ يَدْخُلُوْنَ أَفْوَاجًا فِي حِزْبِ اللهِ الْقَادِرِ الْمُخْتَارِ، هٰذَا مِنْ رَبِّ السَّمَآءِ وَعَجِيْبٌ فِيْ أَعْيُنِ أَهْلِ الْأَرْضِيْنَ

अर्थात और मैं देखता हूं कि मक्का वाले समर्थ ख़ुदा के गिरोह में समूहों के साथ दाख़िल हो जाएंगे और यह आसमान के ख़ुदा की तरफ से है और धरती के लोगों की आंखों में अजीब।

(नूरुल हक भाग द्वितीय, रूहानी खज़ायन भाग 8 पृष्ठ 197)

सीरिया और अन्य अरब देशों से मोमिनों की जमाअत की बिशारत:

हज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "लुज्जतुन्नूर" में फरमाते हैं। (अरबी का अनुवाद यह है)

"मैंने एक ख़ुशख़बरी वाली ख़वाब में वफादार मोमिनों और आदिल और नेकी करने वाले बादशाहों की एक जमाअत देखी जिनमें कुछ इस देश (भारत) के थे और कुछ अरब के, कुछ फारस के कुछ सीरिया के, कुछ रोम के कुछ दूसरे देशों के थे जिन को मैं नहीं जानता। इसके बाद मुझे ख़ुदा तआला द्वारा बताया गया कि ये लोग तेरी पुष्टि करेंगे और तुझ पर ईमान लाएंगे और तुझ पर दरूद भेजेंगे, तेरे लिए दुआ करेंगे, और मैं तुझे बहुत बरकतें दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे और मैं उन्हें मुख़लेसीन में शामिल करूँगा। यह वह ख़वाब है जो मैं ने देखी और वह इल्हाम है जो बहुत अधिक जानने वाले ख़ुदा की तरफ से मुझे हुआ।

(लुज्जतुन्नूर, रूहानी खज़ायन जल्द 16 पृष्ठ 339-340)

सुलहाए अरब और अब्दाले शाम की बिशारत:

6 अप्रैल 1885 ई को आप ने एक रोया देखी। इस विषय में हुज़ूर फरमाते हैं:

"आज उसी समय मैंने ख़वाब देखा है कि किसी परीक्षा में पड़ा हूं और मैंने इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन कहा और जो आदमी आधिकारिक तौर पर मुझ से पूछताछ करता है मैंने उससे कहा क्या मुझे कैद करेंगे या कत्ल करेंगे। उसने कुछ ऐसा कहा कि प्रबंध यह हुआ है कि गिराया जाएगा। मैंने कहा कि मैं अपने सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला के

अधिकार में हूँ जहाँ मुझे बैठाएगा बैठ जाऊंगा और जहां मुझे खड़ा करेगा खड़ा हो जाऊंगा और यह इल्हाम हुआ: يَدْعُونَ لَكَ أَبْدَالُ الشَّامِ وَعِبَادُ اللّٰهِ مِنَ الْعَرَبِ तेरे लिए सीरिया के अब्दाल दुआ करते हैं और ख़ुदा के बन्दे अरब में से दुआ करते हैं। ख़ुदा जाने यह क्या मामला है और कब और कैसे इसका प्रकटन हो। वल्लाहो आलमो बिस्सवाब।"

(मक्तूबात दिनांक 6 अप्रैल 1885, मकतूबाते अहमदिया भाग1 पृष्ठ 86)

अरब दुनिया का पहला अहमदी

जैसा कि इन इलहामों और रोया तथा कश्फों से पता चलता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को 1880 ई के बाद से ही अरबों के विषय में ख़ुश ख़बरियां, उनके मामलों का सुधार, उन्हें सीधा रास्ता दिखाने और उनके अहमदियत में प्रवेश करने की बिशारात का सिलसिला शुरू हो गया था, मगर 1891 ईसवी तक हुज़ूर ने न तो कोई अरबी किताब लिखी थी, न ही अरबों में तब्लीग़ की राह निकल सकी। लेकिन वह क़ुदा जिस ने यह बिशारात दे दी थीं ख़ुद ही उनके पूरा होने के सामान कर रहा था। इसलिए वह ख़ुद ही तब्लीग़ के सामान फरमा दिए और रसूल की बस्ती के एक सपूत और नेक स्वभाव मनुष्य को हज़रत मसीह मौऊद के कदमों में ला डाला। यूं अरबों में अहमदियत का पहला पौधा लगा। उनका नाम है:

हज़रत शेख़ मुहम्मद बिन अहमद अलमक्की साहिब रज़ि अल्लाह (बैअत 10 जुलाई 1891 ई।, वफात: 28 जुलाई 1940)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप का वर्णन अपनी मशहूर किताब इज़ाला औहाम पृष्ठ 538-539 में विस्तार से किया बैअत के बाद आप कुछ समय कादियान में ठहरे और1892 ई के जलसा सालाना कादियान में भी शामिल हुए थे।

अरबों की तरफ ध्यान और उन की तब्लीग़ के लिए किताबों का लिखना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: (अनुवाद)

" जब भारत देश में ऐसा भूकंप आया कि सारी पृथ्वी हिल गई और उलेमा मैं कंजूसी और ईर्ष्या पाई तो मैंने अपने दिल में ठान लिया कि उन लोगों से दूरी बरतूं और मक्का की तरफ भागूं और सुलहाए अरब और मक्का के चुने हुओं की तरफ ध्यान करूं ... अत: ख़ुदा ने इस आवश्यकता के पैदा होने के समय मेरे मन में यह विचार डाला कि खुली खुली अरबी में कुछ किताबें लिखूं। अत: मैंने ख़ुदा के फज़ल और उसकी दया और उसकी ताकत से एक किताब लिखी जिसका नाम तब्लीग़ है फिर दूसरी पुस्तक लिखी जिसका नाम तोहफा है फिर तीसरी किताब लिखी जिसका नाम करामतुस्सादेकीन है, फिर चौथी किताब लिखी जिस का नाम हमामतुल बुशरा है ... और मैंने इन किताबों को केवल अरब की ज़मीन के जिगर के टुकड़ों के लिए तैय्यार किया है।"

(उर्दू अनुवाद नूरुल हक भाग 1, रूहानी खज़ायन भाग 8 पृष्ठ 19-20)

हज़ूर अलैहिस्सलाम की पहली अरबी पुस्तक:

11 जनवरी 1893 ई को जब हुज़ूर ने अपनी महान किताब आइना कमालाते इस्लाम के उर्दू हिस्सा को लिखा तो मौलाना अब्दुल करीम साहब सियालकोटी ने एक मजलिस में हज़रत अक़दस से निवेदन किया कि इस किताब के साथ मुसलमान फकीरों और पीरज़ादों पर इतमामे हुज्जत (दलील के पूरा होने) के लिए एक ख़त भी प्रकाशित होना चाहिए जो दिन रात बिदअतों में डूबे हुए हैं और ख़ुदा के स्थापित इस सिलसिला से अनजान हैं। हुज़ूर को यह सुझाव पसंद आया। अत: हुज़ूर फरमाते हैं:

" मेरा इरादा यह था कि यह ख़त उर्दू में लिखूं लेकिन रात को कुछ इल्हामी संकेतों से ऐसा मालूम हुआ कि यह ख़त अरबी में लिखना चाहिए और यह भी इल्हाम हुआ कि उन पर प्रभाव बहुत कम होगा, हाँ दलील पूर्ण होगी।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, पेज 359-360)

अत: आपने ख़ुदा तआला की दी हुई शक्ति तथा सामर्थ्य से अरबी ज़बान में "अत्तबलीग़" शीर्षक से एक ख़त लिखा जिस में आप ने भारत, अरब, मिस्र, सीरिया, ईरान, तुर्की और अन्य देशों के सज्जादा नशीनों, ज़ाहिदों(नेकोंकारों), सूफियों और ख़ानकाह नशीनों तक सच्चा संदेश पहुंचाया।

अरब वालों को नाम ले लेकर ख़िताब और आमंत्रण:

इसी किताब अर्थात "अत्तबलीग़" में एक जगह पर हुज़ूर ने फ़रमाया जिसका सार यह है कि हे अरब के शेखो और हरमैन शरीफ़ैन के चुने लोगो, मैंने उन सभी मामलों को भारत के उलमा के सामने रखा लेकिन उन्होंने इन को स्वीकार नहीं किया। मैंने उन्हें समझाया लेकिन वे न समझे, मैंने उन्हें जगाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं जागे बल्कि इसके विपरीत मेरे कुफ्र (इन्कार) की कोशिशों में लग गए।

हे अरब और मिस्र और शाम के शहरों आदि के भाइयो ! जब मैंने देखा कि यह एक महान नेअमत है और आसमान से नाज़िल होने वाला माइदा है देने वाले खुदा की तरफ से एक सार्थक निशान है तो मेरे दिल ने पसंद नहीं किया कि मैं आप को इस में शरीक न करूं। अत: मैंने इस की तब्लीग़ करना फर्ज़ समझा और उसे ऐसे कर्ज़ से मिलता जुलता देखा जिस का हक उसे अदा किए बिना नहीं होता।

अब मैंने तुम्हें वह सब कह दिया है जो मेरे रब्ब की तरफ से प्रकट हुआ है और मैं इस बात के इंतज़ार में हूं कि तुम किस तरह इस का जवाब देते हो।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 488-490)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम के प्रभावी शब्दों का जादू:

हुज़ूर के यह प्रभावशाली शब्द ऐसे हैं कि पत्थर से पत्थर दिल भी पिघला कर रख दें। लेकिन उस ज़माने में हुज़ूर की किताबों का अरबों तक पहुँचना बहुत मुश्किल था इसलिए उस समय में शायद अरब देशों के कुछ अधिक लोगों पर इस लेख का जादू प्रकट न हुआ। लेकिन इतिहास ने गर्व से एक उदाहरण इस प्रकार सुरक्षित की है कि तराबलस के एक प्रसिद्ध विद्वान अस्सयद मुहम्मद सईद अश्शामी ने जब यह किताब पढ़ी तो सहज कहा: "अल्लाह की कसम ऐसी इबारत अरब नहीं लिख सकता" और अंतत: इससे प्रभावित होकर अहमदियत स्वीकार कर ली।

(सारांक्ष तारीख अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 473)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में क़सीदा:

इसी किताब "अत्तबलीग़" के अंत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान अक़दस में एक चमत्कार पूर्ण अरबी क़सीदा भी लिखा है जब यह क़सीदा अस्सयद मुहम्मद सईद अश्शामी को दिखाया गया तो वह पढ़ कर अपने आप रोने लगे और कहा: ख़ुदा की क़सम मैंने इस समय के अरबों के शेर भी कभी पसंद नहीं किए, लेकिन इन शेरों को मैं याद करूँगा।

(तारीख अहमदियत, भाग 1 पृष्ठ 473)

यह क़सीदा जमाअत के प्रत्येक छोटे बड़े में बहुत मकबूल है। इसकी शुरुआत इस शेर से होती है:

يَا عَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ يَسْعٰى إِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمْآنِ

पहला अबदाले शाम:

हज़रत अस्सयद मुहम्मद सईद अश्शामी साहब को सीरिया के लोगों में से सब से पहले बैअत की तौफीक मिली और इस तरह आप पहले अबदाले शाम को पूरा करने वाले बने।

"हमामतुल बुशरा" मक्का वालों के लिए एक तब्लीग़ी किताब:

वफ़ाते मसीह नासरी अलैहिस्सलाम

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ कलाम

क्यों नहीं लोगो तुम्हें हक का ख़्याल?	ल में उठता है मेरे सौ सौ उबाल
इब्ने मर्यम मर गया हक़ की क़सम	दाख़िले जन्नत हुआ वो मुहतरम
मारता है उसको फ़ुर्क़ां सर बसर	उस के मर जाने की देता है ख़बर
वह नहीं बाहर रहा अमवात से	हो गया साबित यह तीस आयात से
कोई मुर्दों से कभी आया नहीं	ये तो फ़ुर्क़ां ने भी बतलाया नहीं
अहद शुद अज़ किर्दगारे बे चगों	ग़ौर कुन दर अन्नहुम ला यरजऊन
ए अज़ीज़ो ! सोच कर देखो ज़रा	मौत से बचता कोई देखा भला
ये तो रहने का नहीं प्यारो मकां	चल बसे सब अम्बिया वा रास्ताँ
हाँ नहीं पाता कोई इस से नजात	यूँ ही बातें हैं बनाई वाहियात
क्यों तुम्हें इनकार पर इसरार है	है यह दीं या सीरते कुफ्फार है
बर ख़िलाफ़े नस्स ये क्या जोश है	सोच कर देखो अगर कुछ होश है
क्यों बनाया इब्ने मर्यम को ख़ुदा	सुन्नतुल्लाह से वो क्यों बाहर रहा
क्यों बनाया उस को बा शाने कबीर	ग़ैब दाँ व ख़ालिक़ो हय्यो क़दीर
मर गए सब पर वो मरने से बचा	अब तलक आई नहीं उस पर फना

मौलवी साहिब ! यही तौहीद है
सच कहो किस देव की तक़्लीद है ?

☆ ☆ ☆

पहले उल्लेख किया है कि हज़रत मुहम्मद बिन अहमद मक्की साहिब जब बैअत के बाद मक्का शरीफ गए तो वहां तब्लीग़ का काम शुरू कर दिया और अपने एक दोस्त अली ताए साहिब के हवाले से हुज़ूर की सेवा में लिखा कि हुज़ूर उन्हें अपनी पुस्तकें भिजवाएँ तो वह उन्हें शरीफ़ उलमाए मक्का में बांटेंगे। इस ख़त के मिलने पर हुज़ूर ने उसे तब्लीग़ का एक ग़ैबी सामान समझते हुए " हमामतुल बुशरा" अरबी भाषा में लिखी जिस में हुज़ूर ने मसीहियत के दावा, वफाते मसीह की दलीलें नज़ूल मसीह और दज्जाल के निकलने का विस्तृत वर्णन और काफिर कहने वाले उलेमा की तरफ से आप की आस्थाओं और दावे पर आपत्ति का जवाब दिया है।

यह किताब हुज़ूर ने 1893 ई में ही लिखी थी परन्तु इस का प्रकाशन फरवरी 1894 में हुआ।

अरबी भाषा में अन्य तब्लीग़ी लिट्रेचर:

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अरबों में तब्लीग़ के लिए 22 पुस्तकें ख़ुदा तआला की विशेष कुदरत से सिखाई गई अरबी भाषा में लिखीं जो इलाही मआरिफ़ तथा हकीकतों के मोतियों से भरी हैं। यह पुस्तकें अल्लाह तआला के फज़ल से इंसाफ पसन्द करने वाले अरब पाठकों के मन को मोह लेने वाली हैं। याद रहे कि इन 22 पुस्तकों में से कुछ तो पूर्ण रूप से अरबी में लिखी गई हैं और कुछ उर्दू पुस्तकों के अरबी हिस्से के तौर पर शामिल की गई हैं।

प्रतिनिधिमंडल नसीबैन और तब्लीग़ के लिए अरबी किताब की इच्छा

जिन दिनों हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "मसीह हिन्दुस्तान में" लिख रहे थे, इन्हीं दिनों में पता चला था कि नसीबैन (देश इराक, अरब) में हज़रत मसीह नासरी के कुछ चिन्ह मौजूद हैं जिन से उनके इस सफर का पता मिलता है और पुष्टि की है कि वह कश्मीर में आकर रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उत्तम समझा था कि एक प्रतिनिधिमंडल को नसीबैन भेजा जाए जो उनके चिन्ह तथा हालत का ख़ुद अनुसंधान करे और फिर इसी रास्ते से जो हज़रत मसीह ने कश्मीर आने के लिए प्रस्तावित किया था वापस होते हुए कादियान पहुंच जाए। तीन सदस्यीय इस दल के विषय में हज़ूर ने फ़रमाया:

"उनके लिए एक अरबी पुस्तक भी मैं लिखनी चाहता हूँ जो तब्लीग़ के लिए हो और जहां जहां वह जाएं उसको बांटते रहे। इस तरह से इस सफर से भी फायदा होगा कि हमारे सिलसिला का प्रचार भी होता जाएगा।

इस प्रतिनिधिमंडल को अलविदा करने के लिए एक जलसा 12 से 14 नवंबर 1899 ई में आयोजित किया गया था जिसे जलसा अलविदा कहा गया। लेकिन कुछ सम्मुख आने वाले मामलों की वजह से यह प्रतिनिधिमंडल नसीबैयन के लिए रवाना नहीं हो सका।

(विवरण के लिए देखें: मल्फूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 331 से 336)

अरब विद्वानों को मुकाबले की दअवत और उनके पराजय की भविष्यवाणी

तब्लीग़ का एक साधन विरोधियों पर इलाही निशानों के द्वारा हुज्जत पूरा करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इलाही मआरिफ़ को चमत्कारिक ढंग से सीखी हुई अरबी भाषा में बहुत चमत्कार पूर्ण तरीके से वर्णन कर के इंकार करने वालों को उसका उदाहरण लाने का चैलेन्ज दिया। नीचें अरबों को चुनौती देने के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

एजाज़ुल मसीह

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पीर मेहर अली शाह गोलड़वी को अपने मुकाबले में परिष्कृत तथा उच्च कोटि की अरबी भाषा में कुरआन की सूरह: अल्फातिह: की तफसीर का चैलन्ज दिया और कहा कि:

उन्हें इजाज़त है कि वह इस तफसीर में दुनिया के उलमा से मदद लें, अरब के उच्च कोटि के भाषाविद बुला लें, लाहौर और अन्य शहरों के अरबी जानने वाले प्रोफेसरों को भी मदद के लिए बुला लें। इस एलान के अनुसार अल्लाह तआला के फज़ल से और उस के विशेष समर्थन से हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने निश्चित अवधि के अंदर 23 फरवरी 1901 ई को "एजाज़ुल मसीह" के नाम से परिष्कृत सुसज्जित अरबी भाषा में सूरतुल फातिहा की व्याख्या प्रकाशित कर दी लेकिन न पीर गोलड़वी और न अरब तथा अजम के किसी अदीब फाज़िल को उसकी समरूप लिखने का साहस हुआ।

जब इस किताब के जवाब से भारत के सभी उलमा हार गए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे अरब देशों अर्थात हरमैन और सीरिया और मिस्र आदि में भिजवाना उचित समझा।

किताब एजाज़ुल मसीह के उत्तर से केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना के भारत या मिस्र ही के उलेमा आज़िज़ (असमर्थ) नहीं आए थे बल्कि आज तक यह चमत्कार जारी है और किसी को साहस नहीं हुआ कि इस महान किताब का जवाब लिखने की कोशिश भी कर सके।

अरबों को तब्लीग़ के अन्य माध्यम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां ख़ुदा तआला से चमत्कारिक तौर पर सिखाई जाने वाली परिष्कृत भाषा में बहुत प्रभावी रंग में अपनी अरबी पुस्तकों द्वारा अरबों में तब्लीग़ का कर्तव्य निभाया वहां इस के लिए अन्य माध्यम भी अपनाए। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाता है।

फोनोग्राफ द्वारा अरबी में तब्लीग़ी तक़रीर रिकॉर्ड करने का प्रस्ताव:

31 अक्तूबर 1901 ई की मल्फूज़ात की डायरी में लिखा है: हज़रत अक़्दस रोज़ की तरह सैर को तशरीफ ले गए रास्ते में फोनोग्राफ के अविष्कार और इस से अपनी तकरीर को विभिन्न स्थानों पर पहुंचाने की चर्चा होती रही। इसलिए यह प्रस्ताव रखा गया कि इसमें हज़रत अक़्दस

एक भाषण अरबी में रिकार्ड करें जो चार घंटे तक जारी रहे। इस भाषण से पहले हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब की तकरीर एक आरंम्भिक नोट के रूप में जिस का विषय इस प्रकार का हो कि उन्नीसवीं सदी ईसवी के सबसे बड़े इंसान की तकरीर आप को सुनाई जाती है जिस ने ख़ुदा की ओर से नियुक्त होने का दावा किया है और जो मसीह मौऊद और महदी मौऊद के नाम से दुनिया में आया है जिस ने हिन्दुस्तान में हज़ारों लोगों को अपने साथ मिला लिया है और जिसके हाथ पर हज़ारों समर्थन वाले निशान प्रकट हुए, ख़ुदा तआला ने जिस की प्रत्येक विभाग में सहायता की वह अपनी तब्लीग़ इस्लामी देशों में करता है सुनने वाले ख़ुद उसे उसके मुंह से सुन लें कि इसका क्या दावा है और उसकी दलील उसके पास क्या हैं। इस प्रकार की एक भाषण के बाद फिर हज़रत अक़्दस की तकरीर होगी और जहाँ जहाँ ये लोग जाएँगे उसे खोल कर सुनाते फिरें।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 378)

यद्यपि किसी कारण से ऐसा न हो सका लेकिन इस वर्णन से हुज़ूर अलैहिस्सलाम और आप के सहाबा की अरबों तक ख़ुदा के मसीह और महदी की आवाज़ पहुंचाने की तड़प का अनुमान ज़रूर हो जाता है।

मिस्र में तब्लीग़:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबों तक अपना संदेश पहुंचाने की इसी तड़प का अनुमान मल्फ़ूज़ात में 29 दिसंबर 1902 ई की डायरी के इस हिस्से से भी बख़ूबी होता है जहां यह उल्लेखनीय है कि " एक अहमदी हज को जाते हुए कुछ समय मिस्र में रहे और अब तक वहीं हैं और हज़रत अक़दस की पुस्तकें बांट रहे हैं। उन्होंने लिखा था कि अगर आदेश हो तो मैं इस साल हज स्थगित रखूं और मुझे और पुस्तकें भेजें तो उन्हें वितरित करूं।

हज़रत अक़्दस ने फ़रमाया कि उन्हें लिख दिया जाए कि किताबें रवाना होंगी। उनके प्रकाशन के लिए मिस्र में ठहरे रहें और हज इंशा अल्लाह फिर अगले साल करें। मन आताअर्रसूल फकद अता अल्लाह।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पेज 323-324)

क़ादियान आने वाले अरबों को तब्लीग़:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सबको दअवत दी थी कि अनुसंधान के लिए आएं और आप के पास क़ादियान में ठहरें और दलील सुनकर और निशान को देखकर फिर फैसला करें। अरब दुनिया का पहला अहमदी और पहले अब्दाल शाम भी इसी तरीके से आए और हिदायत पाई। इसके अतिरिक्त अगर कोई मात्र जानकारी प्राप्त करने के लिए भी आता तो आप उसके सवालों के जवाब देने और तहकीक को लेकर उसकी तसल्ली करवाने के लिए हर संभव प्रयास करते। मल्फ़ूज़ात से एक दो उदाहरण प्रस्तुत हैं:

इस शीर्षक के तहत मल्फ़ूज़ात भाग 3 में लिखा है कि जनवरी 1902 ई को आरम्भ में एक अरब साहिब आए जिनके विषय में हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ कि उन्हें दुआ के अतिरिक्त और कोई चीज़ भी लाभ नहीं देगी। आप ने दुआ की और "फिर 9 जनवरी 1902 ई की सुबह जब आप सैर को निकले तो अरबी भाषा में एक तक़रीर फरमाई जिसमें सिलसिला मुहम्मदिया और मूसविया की समानता को बताया और फिर सूरत अन्नूर की आयत इस्तिख़लाफ और सूरत अत्तहरीम से अपने दावो पर दलीलें पेश कीं ... जिसका नतीजा यह हुआ कि वह अरब साहिब जो पहले बड़े जोश से बोलते थे पूरी तरह से साफ हो गए। उन्होंने सच्चे दिल से बैअत की और एक इश्तेहार भी प्रकाशित किया और बड़े जोश के साथ अपने देश की तरफ तब्लीग़ के लिए चले गए।"

(उद्धृरित मल्फ़ूज़ात, भाग 3, पेज 210)

13 फरवरी 1903 ई को लखनऊ से एक डॉक्टर साहब तशरीफ़ लाए जिनका नाम अलबदर में मुहम्मद यूसुफ लिखा है। उन के कथन के अनुसार वह बग़दादी नस्ल के थे और समय से लखनऊ में रहते थे। उनके कुछ मित्रों ने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्थिति जानने के लिए भेजा। अत: वह नमाज़ मग़रिब के बाद हज़रत अक़दस की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुलाकात का अवसर हासिल किया। फिर उन की हुज़ूर से बातचीत हुई।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात, भाग 5, पृष्ठ 82 से 110)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ के आप की ज़िन्दगी में फल

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में ही अल्लाह तआला ने कुछ अरबों को हिदायत देकर आप के कदमों में ला दिया। उनमें से तीन अरबों का उल्लेख तो हो चुका है अर्थात हज़रत शेख मुहम्मद बिन अहमद अल्मक्की और हज़रत सय्यद मुहम्मद सईद अश्शामी और एक वह अरब जिनका उल्लेख अभी गुज़रा है। इसके अतिरिक्त एक अब्दु-ल्लाह अरब साहिब थे जो सिंध के एक बहुत प्रसिद्ध पीर जिनका नाम पीर साहबे अलम था के विशेष मुरीद बने हुए थे और अपने पीर के इरशाद पर अनुसंधान के लिए आए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करके आप के अस्ताना पर ही ठहरे। आप का ज़माना बैअत भी 1891 ई से 1893 ई के मध्य का समय है क्योंकि आप का ज़िक्र हज़रत अकदस ने हमामतुल बुशर: में फरमाया है जो कि 1893 ई की लिखी है।

इस के अतिरिक्त सिलसिला के इतिहास में दो ऐसे सहाबियों का उल्लेख भी मिलता है, जिनका संबंध बग़दाद से था और जिन्हें हज़रत मसीह मौऊद के जीवन में बैअत करके सिलसिला अहमदिया में शामिल होने की सआदत हासिल की। उनके नाम हज़रत हाजी महदी साहिब अरबी बग़दादी नज़ील मद्रास, हज़रत अब्दुल वहाब साहिब बग़दादी।

इसी तरह एक और अरबी पत्रकार सहाबी हज़रत सैयद अली पुत्र शरीफ मुस्तफा अरब हैं जिनकी बैअत भी लगभग 1891 ई से 1893 ई के बीच समय की है और आपके एक पत्र का उल्लेख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब " सच्चाई का इज़हार" में दर्ज किया है जो कि 1893 ई की लिखी है।

(सच्चाई का इज़हार रूहानी खज़ायन भाग 6 पृष्ठ 76 से 80)

एक और अरब सहाबी हज़रत अब्दुल मुहयी अरब रज़ि अल्लाह तआला हैं। आप का संबंध इराक से था और शीयों से अहमदी हुए थे। आप को भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सोहबत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सीरतुल महदी भाग 2 रिवायत नंबर 1200 में आप की बैअत की घटना लिखी है।

हज़रत सेठ अबू बकर यूसुफ साहिब भी अरबों में से थे और लम्बे समय से भारत में ही रहते थे। आप बैअत के बाद क़ादियान में ही ठहर गए थे और बाद में आपकी एक पुत्री से हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की शादी हुई।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सारे अरब सहाबियों के हालाते ज़िन्दगी और बैअत के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए किताब "सुलहाए अरब वा अबदाल शाम भाग 1" का अध्ययन लाभदायक होगा)

अरबों के आगमन का यह सिलसिला आज भी जारी है और आज तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबी पुस्तकें इंटरनेट पर उपलब्ध हैं इस के अतिरिक्त कई उर्दू पुस्तकों के अरबी अनुवाद भी उपलब्ध हैं इसके अतिरिक्त एक पूरा चैनल दिन रात तब्लीग़ी कार्यक्रम के साथ अरबों के लिए तब्लीग़ में लगा है, और उसके फल भी स्पष्ट रूप से सामने आ रहे हैं।

अलहमदो लिल्लाह अला ज़ालिक।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-''ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है कि मैं रत्नों के भंडारों को जो दफन हो चुके हैं, दुनिया में ज़ाहिर करूँ और अपवित्र विरोधों की कीचड़ को जो बहुमूल्य आध्यात्मिक रत्नों पर थोपा गया है उससे उनको पवित्र और शुद्ध करूँ।"

(मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम पृ. 60)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपनी सफल जीवन में ख़ुदा की मुहब्बत और इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में डूबकर जो किताबें लिखी हैं उनकी सूची निम्नानुसार है :

1. एक ईसाई के तीन सवालों के जवाब (सन् 1876 ई.)
2. पुरानी तहरीरें (सन् 1879 ई.)
3. बराहीने अहमदिय्या (भाग प्रथम, 1880 ई.)
4. बराहीने अहमदिय्या (भाग द्वितीय, 1880 ई.)
5. बराहीने अहमदिय्या (भाग तृतीय, 1882 ई.)
6. बराहीने अहमदिय्या (भाग चतुर्थ, 1884 ई.)
7. सुर्मा चश्म आर्य: (मार्च 1886 ई.)
8. शहनए हक (सन् 1887 ई.)
9. सब्ज़ इश्तेहार (सन् 1888 ई.)
10. फ़तह इस्लाम (सन् 1890 ई.)
11. तौज़ीह मराम (सन् 1890 ई.)
12. इज़ाला औहाम (भाग प्रथम, 1891 ई.)
13. इज़ाला औहाम (भाग द्वितीय, 1891 ई.)
14. "अलहक़" मुबाहिसा लुधियाना (जुलाई 1891 ई.)
15. "अलहक" मुबाहिसा देहली (अक्तूबर 1891 ई.)
16. आसमानी फैसला (दिसम्बर 1891 ई.)
17. निशाने आसमानी (मई 1892 ई.)
18. आइना कमालाते इस्लाम (1892-93 ई.)
19. बरकातुद्दुआ (अप्रैल 1893 ई.)
20. सच्चाई का इज़हार (मई 1893 ई.)
21. हुज्जतुल इस्लाम (मई 1893 ई.)
22. जंगे मुक़द्दस (मई 1893 ई.)
23. शहादतुल क़ुर्आन (1893 ई.)
24. तोहफए बग़दाद (जुलाई 1893 ई.)
25. करामातुस् सादिक़ीन (1893 ई.)
26. हमामतुल बुशरा (1893 ई.)
27. नूरुल हक़ (भाग प्रथम, फरवरी 1894 ई.)
28. नूरुल हक़ (भाग दितीय, मई 1984 ई)
29. इत्मामुल हुज्जत (जून 1894 ई.)
30. सिर्रुल ख़िलाफ़: (जुलाई 1894 ई.)
31. अनवारुल इस्लाम (6 सितम्बर 1894 ई.)
32. मिननुर्र रहमान (मई 1895 ई.)
33. ज़ियाउल हक़ (मई 1895 ई.)
34. नूरुल क़ुर्आन (भाग प्रथम, 15 जून 1895 ई.)
35. नूरुल क़ुर्आन (भाग द्वितीय, 20 दिसम्बर 1895 ई.)
36. मियारुल मज़ाहिब (1895 ई.)
37. आर्य: धर्म (नवम्बर 1895 ई.)
38. सत बचन (10 नवम्बर 1895 ई.)
39. इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी (दिसम्बर 1896 ई.)
40. अन्जामे आथम (1896 ई.)
41. सिराजे मुनीर (24 मार्च 1896 ई.)
42. इस्तफ़ता (12 मई 1896 ई.)
43. हुज्जतुल्लाह (17 मार्च 1896 ई.)
44. तोहफा-ए-कैसरिया (26 मई 1896 ई.)
45. जलसा-ए-अहबाब (28 जून 1896 ई.)
46. महमूद की आमीन (6 जून 1896 ई.)
47. सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब (22 जून 1897 ई.)
48. किताबुल बरीय: (24 जनवरी 1898 ई.)
49. अल् बलाग़ (1898 ई.)
50. ज़रूरतुल इमाम (अक्तूबर 1898 ई.)
51. नज्मुल हुदा (20 नवम्बर 1898 ई.)
52. राज़े हक़ीक़त (30 नवम्बर 1898 ई.)
53. कश्फुल ग़िता (26 दिसम्बर 1898 ई.)
54. अय्यामुस्सुलह (1 अगस्त 1898 ई.)
55. हक़ीक़तुल मेहदी (29 फरवरी 1899 ई.)
56. मसीह हिन्दुस्तान में (अप्रैल 1899 ई.)
57. सितारा-ए-क़ैसरिया (24 अगस्त 1899 ई.)
58. तरयाकुल कुलूब (1899 ई.)
59. तोहफा गज़नविया (1900 ई.)
60. रूएदाद, जलसा दुआ (2 फरवरी 1900 ई.)
61. ख़ुत्ब: इल्हामिया (11 अप्रैल 1900 ई.)
62. लुज्जतुन्नूर (1900 ई.)
63. गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद (23 मई, 1900 ई.)
64. तोहफा गोलड़विया (जुलाई 1900 ई.)
65. अरबईन (भाग प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, 15 दिसम्बर 1900 ई.)
66. एजाज़ुल मसीह (23 फरवरी 1901 ई.)
67. एक ग़लती का इज़ाला (5 नवम्बर 1901 ई.)
68. दाफेउल बला (अप्रैल 1902 ई.)
69. अलहुदा (12 जून 1902 ई.)
70. नूज़ूले मसीह (अगस्त 1902 ई.)
71. कश्ती-ए-नूह (5 अक्तूबर 1902 ई.)
72. तोहफतुन् नद्वा (6 अक्तूबर 1902 ई.)
73. एजाज़-ए-अहमदी (12 नवम्बर 1902 ई.)
74. रिव्यू बर मुबाहिसा बटालवी व चकड़ालवी 26 नवम्बर 1902 ई.
75. मवाहिबुर्रहमान (24 जनवरी 1903 ई.)
76. नसीमे दावत (28 फरवरी 1903 ई.)
77. सनातन धर्म (8 मार्च 1903 ई.)
78. तज़किरतुश्शहादतैन (16 अक्तूबर 1903 ई.)
79. सीरतुल अब्दाल (14 दिसम्बर 1903 ई.)
80. लेक्चर सियालकोट (31 अक्तूबर 1904 ई.)
81. लेक्चर लाहौर (31 सितम्बर 1904 ई.)
82. अहमदी व ग़ैर अहमदी में फ़र्क़ (26 दिसम्बर 1905 ई.)
83. लेक्चर लुधियाना (4 नवम्बर 1905 ई.)
84. अलवसीयत (20 दिसम्बर 1905 ई.)
85. चश्मा-ए-मसीही (9 मार्च 1906 ई.)
86. तजल्लियाते इलाहिया (15 मार्च 1906 ई.)
87. क़ादियान के आर्य: और हम (20 फरवरी 1907 ई.)
88. बराहीने अहमदिय्या (भाग पंचम, फरवरी 1905 ई.)
89. हक़ीक़तुल वह्यी (1906 ई.)
90. चश्मा-ए-मारिफत (जनवरी 1908 ई.)
91. पैग़ामे सुलह (मई 1908 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद(अ) का जॉन एलैकज़ेण्डर डोई से मुकाबला और यूरोप और अमरीका में इस्लाम की महान विजय की गूंज

(ताहिर अहमद तारिक, नायब नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया, क़ादियान)

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुनिया के सारे धर्मों के सुधार के लिए भेजा। अल्लाह तआला ने आप के इल्हाम में "जरी उल्लाह फी हुललिल अंबिया।" फरमाया इसलिए सभी धर्मों की आस्थाओं के सुधार की ज़िम्मेदारी आप की थी और इस सुधार के परिणाम में हर धर्म के लोगों के साथ आप का मुकाबला होना अनिवार्य था।

आपके मुकाबला में सअदुल्लाह लुधियानवी, पंडित लेखराम पेशावरी, पादरी अब्दुल्लाह आथम व जान एलैकज़ेण्डर डोई जैसे प्रचण्ड विरोद्धी आए और फिर आप की भविष्यवाणी के अनुसार मारे गए। आप अलैहिस्सलाम के आगमन के समय ईसाई पादरियों के भारत में इस्लाम के ख़िलाफ बहुत हमले हो रहे थे और उनके दावे थे कि हम पूरे भारत को बहुत जल्द ईसाई बना देंगे और भारत के हर शहर में सलीब का झंडा गाड़ देंगे और इस बाढ़ में कई मुसलमान यहां तक कि उलेमा भी बह गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला के समर्थन तथा सहायता से ऐसे तरीकों से ईसाई मुन्नादों और पादरियों का मुकाबला किया कि उन्हें पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। आपका संदेश यूरोप और अमेरिका में पहुंचना शुरू हो गया और आप भारतीय नबी के नाम से याद किए जाने लगे। आप की प्रगति और प्रतिष्ठा को देखते हुए इस्लाम के साथ द्वेष रखने वाला एक व्यक्ति जान एलैकज़ेण्डर डोई भी हज़रत मसीह मौऊद के साथ मुकाबला में आया और अपनी क़िस्मत आज़माने की ठानी। इस मुकाबला और इसके नतीजा में यूरोप तथा अमरीका में इस्लाम तथा अहमदियत की जीत की गूंज चारों तरफ सुनाई देने लगी। इस का विवरण इस प्रकार है।

जान एलैकज़ेण्डर डोई वास्तव में स्कॉटलैंड का रहने वाला था जो बचपन में अपने माता पिता के साथ ऑस्ट्रेलिया चला गया। जहां वह 1872ई में एक सफल वक्ता और पादरी के रूप में लोगों के सामने आने लगा। 1888 ई में वह अमेरिका की नई दुनिया में अपने विचारों के प्रसार के लिए सैन फ्रांसिस्को आ गया। सैन फ्रांसिस्को के निकट राज्यों में सफल जलसे करने के बाद उसने 1893 ई में शिकागो में अपनी विशेष गतिविधियां शुरू कर दीं। उसने अपना अख़बार लीयूज़ आफ हेलिंग जारी किया। थोड़े ही समय में अमेरिका में उसकी ख़ूब चर्चा हुई और उसके मानने वालों में बहुत वृद्धि होने लगी। डोई ने प्रसिद्धि और सफलता को देखकर 22 फरवरी 1896 को एक नए समुदाय की स्थापना की जिसका नाम "क्रिश्चियन कैथोलिक चर्च " रखा 1899 ई 1900 ई में उसने नबी होने का दावा किया ..और इस समुदाय को "क्रिश्चियन कैथोलिक अपासटलिक चर्च" का नाम दे दिया।

(उद्धृत तारीख़ें अहमदियत, भाग 2, पृष्ठ 241)

जान एलैकज़ेण्डर डोई को इस्लाम से सख्त वैर था और इस्लाम को दुनिया से मिटाना चाहता था और लोगों का ध्यान ईसाई विश्वासों और अपनी तरफ आकर्षित करना चाहता था। उसने लिखा कि

"जो कुछ मैं तुम्हें कहूँगा तुम्हें उस का पालन करना पड़ेगा क्योंकि मैं ख़ुदा के वादे के अनुसार पैग़म्बर हूँ।"

(इबरतनाक अंजाम, पृष्ठ 25, लेखक डॉ चौधरी ख़लील अहमद नासिर, उद्धरित हयात-ए-तय्यबा,पृष्ठ 34)

चूंकि यह व्यक्ति अमेरिका का एक धनी तथा अमीर आदमी था सांसारिक दृष्टि से ख्याति रखता था अपनी तरक्की की गति को देखते हुए उसने 1901 ई में एक शहर सैहून नामक आबाद किया इसलिए अमेरिकी अख़बारों में इस व्यक्ति की खूब चर्चा हुई।

एलैकज़ेण्डर डोई अपने अख़बार के जरिए हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोध में डटा रहता था और हमेशा इस विचार में रहता था कि कैसे इस्लाम को संसार से मिटाया जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब डॉ एलैकज़ेण्डर डोई के दावों का पता चला कि यह व्यक्ति इस्लाम को मिटाने के ख़वाब देखता है और आम जनता को गुमराह कर रहा है और इस गुमराही के काम में अपने अखबार को भी समर्पित किया हुआ है तो आप ने अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हुए 8 अगस्त 1902 को जान एलैकज़ेण्डर डोई को एक चिट्ठी लिखी जिस में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु और श्रीनगर कश्मीर में उनकी कब्र का वर्णन करते हुए उसे मुबाहिला का चैलेन्ज देते हुए लिखा कि:

"डोई बार बार कहता है कि जल्द ही यह सब मारे जाएंगे सिवाय उस गिरोह के जो यसूअ मसीह की ख़ुदाई मानता है और डोई की नबुव्वत। इस मामले में यूरोप तथा अमरीका के सभी ईसाइयों को चाहिए कि बहुत जल्द डोई को मान लें ताकि हलाक न हो जाएं और जब उन्होंने एक बुद्धि के विपरीत बात को मान लिया कि वह ख़ुदा का रसूल है। रहे मुसलमान अत: हम डोई की सेवा में अदब के साथ निवेदन करते हैं कि इस मुकदमा में करोड़ों मुसलमानों को मारने की क्या जरूरत है एक सुविधाजनक तरीका है जिससे इस बात का फैसला हो जाएगा कि मानो डोई का ख़ुदा सच्चा है या हमारा ख़ुदा। वह बात यह है कि डोई साहब सभी मुसलमानों को बार बार मौत की भविष्य-वाणी न सुनाएं। बल्कि उनमें से केवल मुझे अपने मन के आगे रख कर यह दुआ करें कि हम दोनों में से झूठा है वह पहले मर जाए चूंकि डोई यीशु मसीह को ख़ुदा मानता है मगर मैं उसे एक बंदा असमर्थ मगर नबी मानता हों ... अगर डोई अपने दावे में सच्चा है और वास्तव में यीशु मसीह ख़ुदा है तो यह फैसला एक ही आदमी के मरने से होगा। क्या ज़रूरत है कि सारे देशों के मुसलमानों को हलाक किया जाए अगर इस ने इस नोटिस का जवाब न दिया या अपने ख़िलाफ़ बातें कर दी तो फिर दुनिया से पहले मेरी मृत्यु के पहले उठाया गया तो यह सारे अमेरिका के लिए एक निशान होगा मगर यह शर्त है कि किसी की मौत मानव हाथों से न हो बल्कि किसी बीमारी से या बिजली से या सांप के काटने से या किसी दरिन्दे के फाड़ने से हो। "

(रियूयू आफ रिलेजनज़, पर्चा दिसंबर 1902)

अत: हज़रत मसीह माौऊद अलैहिस्सलाम के इस मुबाहिला की चुनौती को अमेरिका के कई अख़बारों ने बड़े अच्छे रंग में छापा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय भी करवाया कि यह व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से मामूर है।

इस मुबाहिला की चुनौती का डोई की तरफ से कोई जवाब न मिलने पर आप अलैहिस्सलाम ने लगातार चिट्ठियों और इश्तेहारों के द्वारा उसे इस बात की ओर आकर्षित करते रहे कि वह मुबाहिला की चुनौती को स्वीकार करे और अपने इश्तिहार की प्रतियां अमेरिकी अख़बारों में भी

भिजवाते रहे और इन इश्तिहारों आदि को 1903 ई में बहुतायत के साथ अमेरिकी अख़बारों ने हज़रत मसीह मौऊद की इस चुनौती के साथ प्रकाशित किया। 32 अख़बारों के सारांश हज़रत मसीह मौऊद ने अपनी किताब हकीतुल वह्यी में दर्ज किए हैं।

जब बार-बार आग्रह करने पर डोई ने इस चुनौती का जवाब नहीं दिया और फिर सितंबर और दिसंबर के अख़बारों में उसने लिखा कि:

" भारत में एक मूर्ख मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार बार लिखता है कि यीशु मसीह की खबर कश्मीर में है और लोग मुझे कहते हैं कि तो क्यों उस व्यक्ति का जवाब नहीं देता मगर क्या तुम मानते हो कि मैं इन मक्खियों और मच्छरों का जवाब दूंगा। अगर मैं उन पर अपना पैर रखूं, तो मैं उन्हें कुचल कर मार डालोंगा।"

(परिशिष्ट हकीकतुल वह्यी पृष्ठ 73, किताबुल हयात-ए-तैयबा, 335)

हज़रत मसीह मौऊद को जब उस की बेबाकी वाणी का ज्ञान हुआ तो आप ने ख़ुदा तआला की अदालत में इस मामले में सफलता के लिए पहले से बढ़ कर दुआएं शुरी कर दीं। इस दौरान डॉक्टर डोई अमेरिका और यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में बहुत ख्याति प्राप्त कर चुका था उसे अपनी सेहत शक्ति और सम्मान पर बहुत गर्व करता था और पूरी उन्नति पर था और यह सोचता था कि अब मेरी प्रतिष्ठा दूर दूर तक हो चुकी है अत: हुज़ूर ने 23 अगस्त 1903 ई के इश्तेहार में लिखा कि

" अब तक डोई ने मेरे इस मुबाहिला के आवेदन का कुछ उत्तर न दिया और न अपने अख़बार में कुछ संकेत किया है इसलिए आज की तारीख से जो 23 अगस्त 1903 ई है उसे पूरे सात महीने की और मोहलत देता हूं अगर वह इस समय में मेरे मुकाबला के लिए आ गया और जिस तरह से मैंने मुकाबला करने का प्रस्ताव किया है, जिसे मैं प्रकाशित कर चुका हूं और इस प्रस्ताव को पूरे तौर पर स्वीकार करके अपने अख़बार में आम इश्तिहार दे दिया तो शीघ्र दुनिया देख लेगी कि इस मुकाबला का अंजाम क्या होगा अगर डोई इस मुकाबला से भाग गया तो देखो आज में यूरोप और अमेरिका के निवासियों को इस बात पर गवाह करता हूं कि यह तरीका उसका हार की अवस्था माना जाएगा ... अत: वास्तव में समझो कि उस के सैहून में शीघ्र एक आपदा आने वाली है क्योंकि इन दोनों मामलों में से एक तो उसे पकड़ लेगा।"

(रिव्यूयू ऑफ रिलीजन्स अप्रैल 1907 ई)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इश्तेहार की भी अमरीका के अख़बार में ख़ूब चर्चा हुई और इश्तिहार के जवाब में डोई इशारों इशारों में मुकाबला में आ गया। अत: वह अपने अखबार 27 दिसंबर 1903 ई में लिखता है

" भारत में एक मूर्ख व्यक्ति है जो मुहम्मदी मसीह होने का दावा करता है और मुझे बार बार कहता है कि यीशु कश्मीर में दफन हैं उनका मकबरा देखा जा सकता है वह यह नहीं कहता कि ख़ुद उसने वह मकबरा देखा है मगर बेचारा पागल और अज्ञानी व्यक्ति फिर भी यह आरोप लगाता है कि हज़रत मसीह भारत में मर गए। घटना यह है कि प्रभु मसीह बैअत ग़याह नामक स्थान पर आकाश में उठाया गया जहां वह अपने आसमानी शरीर में मौजूद है।"

फिर 23 जनवरी 1904 ई को मुसलमानों के विनाश की भविषयवाणी को दोहराते हुए लिखा:

"सैकड़ों लाखों मुसलमान जो इस समय एक झूठे नबी के हाथ में हैं उन्हें या तो ख़ुदाई आवाज़ सुननी होगी या वे तबाह हो जाएंगे।"

(तारीख़ अहमदियत, भाग 2, पेज 246)

डोई चूंकि एक दुनियादार अय्याश आदमी था। उस ने लोगों से कर्ज़ लेकर सैहून शहर आबाद किया था। धीरे धीरे उसकी अय्याशी की वजह से उसका सम्मान कम होने लगा वित्तीय संकट शुरू हो गया। डोई ने वित्तीय संकट को दूर करने के लिए दूसरी जगह शहर आबाद करना चाहता था लेकिन ख़ुदाई तकदीर ने उसे इसमें सफल न होने दिया क्योंकि मामूर ज़माना के मुकाबले में वह आ चुका था अब दुनिया के लिए विशेष रूप से अमेरिका और यूरोप के लिए इस्लाम धर्म की सच्चाई देखने का समय आ गया था इसलिए उस पर 1 अक्टूबर 1905 ई को पक्षघात हुआ और फिर 19 दिसंबर 1905 को फिर पक्षघात हुआ उसके अपने रिश्तेदार उस से जुदा हो गए इज़्ज़त खत्म हो गई सैहून शहर वालों ने अपना नया नेता चुन लिया। डोई बीमारी की वजह से निढाल होता गया। देखभाल के लिए वेतनभोगी हब्शी नियुक्त हुए जो एक जगह से उठाकर दूसरी जगह ले जाते और कई बार हाथों से पृथ्वी पर ऐसा गिरता जैसे बेजान पत्थर। अंत में ज़माना के मामूर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार 9 मार्च 1907 ई को इस संसार से विदा हुआ। उसकी पत्नी बच्चे और रिश्तेदार उस के जनाज़ा में शामिल नहीं हुए। हज़रत मसीह मौऊद ने बीस फरवरी 1907 को ही डोई की मौत से पहले एक इश्तिहार के द्वारा इस निशान के पूरे होने के बारे में लोगों को बता दिया था।

अब देखें ख़ुदा तआला किस तरीके से अपनी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाने का इंतज़ाम करता है अगर यूरोप और अमेरिका में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश पंहुचाने के लिए हज़ारों आदमी भी निर्धारित किए जाते तो शायद इस रंग में वह प्रचार पैग़ाम न पहुँचे जिस रंग में भविष्यवाणी और निशान के द्वारा यूरोप और अमेरिका में अहमदियत का संदेश पहुंचा और इस्लाम और अहमदियत की महान विजय का निशान दिखाया।

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

" अब जाहिर है कि ऐसा निशान (जो महान जीत का कारण है) जो सारी दुनिया एशिया और अमेरिका और यूरोप और भारत के लिए एक खुला खुला निशान हो सकता है वह यही कि डोई के मरने का निशान है क्योंकि और निशान जो मेरी भविष्यवाणियों से प्रकट हुए हैं वह तो पंजाब और भारत तक ही सीमित थे और अमेरिका और यूरोप के किसी व्यक्ति को उनके प्रकट होने की ख़बर नहीं थी लेकिन यह निशान पंजाब से भविष्यवाणी के रूप में प्रकट होकर अमेरिका में जाकर ऐसे व्यक्ति के हाथों

मुसलमानों बनाओ ताम तक्वा

कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमें उस यार से तक़्वा अता है	न ये हम से कि इहसाने ख़ुदा है
करो कोशिश अगर सिदक़ो सफ़ा है	कि ये हासिल हो जो शर्ते लिक़ा है
यही आईना ख़ालिक़ नुमा है	यही एक जौहरे सैफ़े दुआ है
हर इक नेकी की जड़ ये इत्तक़ा है	अगर ये जड़ रही सब कुछ रहा है
यही इक फख़रे शाने औलिया है	बजुज़ तक्वा ज़ियादत उन में क्या है
डरो यारो कि वो बीना खुदा है	अगर सोचो, यही दारुल जज़ा है
मुझे तक्वा से उस ने ये जज़ा दी	''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी
अजब गौहर है जिसका नाम तक़्वा	मुबारक वह है जिसका काम तक्वा
सुनो ! है हासिले इस्लाम तक़्वा	ख़ुदा का इश्क मय और जाम तक्वा
मुसलमानों बनाओ ताम तक़्वा	कहाँ ईमाँ अगर है ख़ाम तक्वा

यह दौलत तूने मुझ को ऐ ख़ुदा दी
''फसुब्हानल् लज़ी अख़्ज़ल अआदी

☆ ☆ ☆

में पूरा हुआ जिसे अमेरिका और यूरोप का प्रत्येक आदमी जानता था।"

(तारीख अहमदियत,भाग 2, पृष्ठ 250, इश्तिहार 17 अप्रैल 1907 ई)

डोई की मौत से जहां कसरे सलीब का निशान पूरा हुआ वहाँ इस्लाम की प्रामाणिकता साबित होने के साथ साथ यूरोप और अमेरिका में इस्लाम के पुनर्जागरण के नींव पड़ गई और नेक रूहों के दिलों में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुहब्बत डाल दी। डोई की मौत पर अमेरिका यूरोप के प्रैस पर ख़ूब टिप्पणियां हुई जैसे अमेरिकन अखबार टुरुथ सीकर ने अपनी 15 जून 1907 ई के प्रकाशन में "मुरसलीन की जंग" के शीर्षक से लंबा संपादकीय लिखा जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी का विस्तार से ज़िक्र किया उसी तरह अखबार बोस्टन हेराल्ड ने संडे संस्करण 23 जून 1907 ई के एक पूरे पृष्ठ में इस भविष्यवाणी के पूरे विवरण और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी बड़ी तस्वीरें भी प्रकाशित कीं और नीचे दोहरे शीर्षक के साथ अपने लेख को शुरू किया कि

"मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अल्मसीह एक महान इंसान है।"

यूं तो इस निशान के प्रकट होने से पहले हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के पत्राचार से श्री वेब मुसलमान हुए थे फिर उनके द्वारा श्री एंड्रयूसन हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहब रज़ि अल्लाह से पत्र व्यवहार कर 26 सितम्बर 1904 ई को मुसलमान हो गए थे लेकिन हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के इस निशान के बाद अमेरिका और यूरोप में अहमदियत की एक तहरीक हुई और इसी कराण से इस्लाम और अहमदियत की तब्लीग़ के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफात के बाद सबसे पहले यूरोप में हज़रत ख़लीफा अव्वल ने हज़रत चौधरी फत्ह मुहम्मद सयाल को 28 जून 1912 को ईसाई धर्म के केंद्र इंग्लैंड में भिजवाया और बाद के हालात ने यह साबित कर दिया कि यूरोप अमेरिका और पश्चिम देशों में इस्लाम अहमदियत के पुनर्जागरण और विकास और प्रभुत्व के लिए इंग्लैण्ड ही केंद्र बना। मानो इस निशान के बाद यूरोप और अमेरिका में इस्लाम के पुनर्जागरण के अभियान की नियमित व्यवस्थित शुरू हुई और फिर हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने हज़रत मुफ्ती मोहम्मद सादिक साहिब को 26 जनवरी 1920 ई को अमेरिका के लिए रवाना किया। आप को अमरीका में प्रवेश करने से रोक दिया गया और नज़रबंद कर दिया गया। जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को ज्ञात हुआ तो आप ने फरमाया:

"अमेरिका जिसे शक्तिशाली होने का दावा है इस समय तक उस ने आर्थिक साम्राज्यों का मुकाबला किया है और उन्हें हराया होगा। रूहानी साम्राज्य से उस ने मुकाबला करके नहीं देखा अब अगर उस ने हम से मुकाबला किया तो उसे पता चल जाएगा कि वह हमें हरगिज़ नहीं हरा सकता चूंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम मिल कर आसपास के क्षेत्रों में तब्लीग़ करके वहां के मुसलमानों को अमेरिका भेजेंगे और उन्हें अमेरिका नहीं रोक सकता और हम उम्मीद करते हैं कि अमेरिका में एक दिन "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" की आवाज़ गूंजेगी और निश्चित रूप से गूंजेगी।"

(अल्फज़ल 15 अप्रैल 1920 ई)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने अपने पहले दौरे इंग्लैंड के दौरान 19 अक्तूबर 1924 को मस्जिद फज़ल लंदन की नींव रखी। यूं यूरोपीय देशों और ईसाइयत के केंद्र इंग्लैंड में तौहीद के केंद्र की नींव पड़ी और तौहीद की आवाज़ बुलंद होनी शुरू हुई और फिर हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की 1984 ई में हिजरत के बाद यही मस्जिद फज़ल यूरोपीय देशों में इस्लाम की तब्लीग़ का केंद्र बन गई। यूरपीय देशों में समय के ख़लीफा की मौजूदगी और दौरों के परिणाम स्वरूप में अल्लाह तआला के फज़ल से अमेरिका और यूरोप में इस्लाम अहमदियत के जीत के नज़ारे हम दिन प्रतिदिन अपनी आंखों से देख रहे हैं। यह जीत तोप, गोले बंदूकों और तलवारों की नहीं रही बल्कि यह जीत दलील और तर्क और इस्लाम की सुंदर शिक्षा के परिणाम में हो रही है। इन देशों के नेताओं और राजनेताओं और बुद्धिजीवी वर्ग की नज़र में आज अहमदियत अर्थात सच्चा इस्लाम, मानवता की सेवा और मुहब्बत सबके लिए नफरत किसी से नहीं के साथ जानी और पहचानी जाती है। आज इन नेताओं और बुद्धिजीवियों को पता लग रहा है कि वास्तव में इस्लाम हिंसा का धर्म नहीं है। इस्लाम अहमदियत की सुंदर और आकर्षक शिक्षा के परिणाम में ही इन देशों के नेता जमाअत के प्रोग्रामों में सम्मिलित होते हैं और हज़ूर अनवर को अपनी संसद में तकरीर के लिए बुलाते हैं कहां वह डोई की डींगें कि हम इस्लाम को खत्म कर देंगे और इस्लाम संसार से समाप्त हो जाएगा और कहां आज यूरोपीय देशों की सदनों में इस्लाम अहमदियत का बोलबाला हो रहा है। ख़ुद अमरीकी संसद में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब तकरीर फरमा चुके हैं आज अहमदियत की तरक्की और प्रभुत्व एक खुली किताब बन चुका है।

☆ ☆ ☆

मसीह वक्त अब दुनिया में आया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ कलाम

करो तौबा कि ता हो जाए रहमत
दिखाओ जल्द तर सिदको इनाबत

खड़ी है सर पे एसी एक साअत
कि याद आ जाएगी जिस से क़यामत

मुझे ये बात मौला ने बता दी
''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी

मुसलमानों पे तब इदबार आया
कि जब तालीमे कुरआँ को भुलाया

रसूले(स) हक को मिट्टी में सुलाया
मसीहा को फलक पर है बिठाया

यह तौहीं करके फल वैसा ही पाया
इहानत ने उन्हें क्या क्या दिखाया

खुदा ने फिर तुम्हें अब है बुलाया
कि सोचो इज्ज़ते ख़ैरुल बराया

हमें ये रह ख़ुदा ने खुद दिखा दी
''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी

कोई मुर्दों में क्यों कर राह पावे
मरे तब बे गुमाँ मुर्दों में जावे

खुदा ईसा को क्यों मुर्दों से लावे
वो क्यों खुद मुहरे खतमिय्यत मिटावे

कहाँ आया कोई ता वो भी आवे
कोई इक नाम भी हम को बतावे

तुम्हें किस ने ये तालीमे ख़ता दी
''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी

वह आया मुनतज़िर ये जिसके दिनरात
मअमा खुल गया रौशनर हुई बात

दिखाईं आसमाँ ने सारी आयात
ज़मीं ने वक्त की दे दीं शहादत

फिर उसके बाद कौन आएगा हयहात
ख़ुदा से कुछ डरो छो‹डो मआदात

ख़ुदा ने इक जहाँ को ये सुना दी
''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी

मसीहे वक्त अब दुनिया में आया
ख़ुदा ने अहद का दिन है दिखाया

मुबारक वो जो अब ईमान लाया
सहाबा(र) से मिला जब मुझको पाया

वही मय साकी ने उन को पिला दी
''फसुब्हानल्लज़ीअख़्ज़लअआदी

ख़ुदा का तुम पे बस लुतफ़ो करम है
वो नेअमत कौन सी बाकी जो कम है

ज़मीने कादियाँ अब मुहतरम है
हुजूमे ख़लक से अरज़े हरम है

ज़ुहूरे औन-व-नुस्रत दम बदम है
हसद से दुश्मनों की पुश्त ख़म है

सुनो अब वक्ते तौहीदे अतम है
सितम अब माइले मुल्के अदम है

ख़ुदा ने रोक ज़ुल्मत की उठा दी
''फसुब्हानल् लज़ी अख़्ज़ल अआदी।।

☆ ☆ ☆

महान धर्म महोत्सव लाहौर तथा विभिन्न धर्मों के मुकाबला में इस्लाम की भव्य विजय

(शेख़ मुहम्मद ज़करिया, मुबल्लिग़ सिलसिला कादियान)

हमारे प्यारे आका ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के वजूद से शरीयत पूर्ण हो गई जैसा कि कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला फरमाता है।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अलमाइदा: 4)

अर्थात आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर मैंने अपनी नेअमत सम्पूर्ण कर दी है और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म के रूप में पसंद कर लिया है।

मुहब्बत से घायल किया आप ने दलायल से कायल किया आप ने
जहालत को ज़ायल किया आपने शरीयत को कामिल क्या आप ने
बयां कर दिए सब हलाल-व-हराम अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम
(बुख़ारे दिल)

इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम द्वारा शरीयत सम्पूर्ण हो गई और शरीयत के पूर्ण प्रकाशन और इस्लाम की विजय और वर्चस्व की ख़बर देते हुए अल्लाह तआला फरमाता है कि

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ

(अस्सफ: 10) अर्थात वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के हर क्षेत्र) में विजय प्रमुख दे चाहे मुशरिक बुरा मनाएं।

इसी तरह कहता है कि

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا (अल्फतह: 29)

अर्थात वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के हर क्षेत्र) पर पूर्ण रूप से ग़ालिब कर दे और गवाह के रूप में अल्लाह काफी है

उल्लेखनीय है कि पवित्र कुरआन के मुफस्सेरीन इस बात पर सहमत हैं कि उपरोक्त आयतों में इस्लाम के जिस प्रभुत्व की ख़बर दी गई है वह ग़लबा हज़रत इमाम महदी द्वारा होगा।

(तफसीर मजमउल ब्यान फी तफसीरुल कुरआन, भाग 5, पृष्ठ 24, अल्लामा तिबरी बैरूत लेबनान)

अत: इस आख़री ज़माना में ऊपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर इमाम महदी और मसीह मौऊद होने का दावा किया। आप फ़रमाते हैं:

"मुझे उस ख़ुदा की कसम है जिसने मुझे भेजा है और जिस पर इफ़्त-राय करनालानतियों का काम है कि उस ने मसीह मौऊद बनाकर मुझे भेजा है और मैं जैसा कि कुरआन शरीफ की आयतों पर विश्वास करता हूँ ऐसा ही बिना अंतर एक कण के ख़ुदा की इस खुली खुली वह्यी पर ईमान लाता हूँ जो मुझे हुई जिसकी सच्चाई यह उस के निरन्तर निशानों से मुझ पर खुल गई और में बैतुल्लाह में खड़े होकर इस बात की कसम खा सकता हूँ कि वह पाक वह्यी जो मेरे पर नाज़िल होती है जिस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसलल्म पर अपना कलाम नाज़िल किया। (एक त्रुटि निवारण, पेज 6)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुरआन तथा हदीस की भविष्यवाणियों के अनुसार कई मुबाहसे ,मुबाहले, चमत्कार, तथा किताबों के माध्यम से झूठे धर्मों इस्लाम के प्रभुत्व की नींव डाली और इस्लाम की भव्य जीत और प्रभुत्व का आरम्भ फरमाया। धर्म महोत्सव इन्हीं अनगिनत माध्यमों में से एक उच्च माध्यम है। इस जलसा द्वारा विश्व के एक संयुक्त धार्मिक मंच पर इस्लाम और इस्लाम के सफल वकील की हैसियत से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ऐसी शानदार जीत नसीब हुई कि रहती दुनिया तक यादगार रहेगी।

जलसा की पृष्ठभूमि

इस जलसा की पृष्ठभूमि कुछ इस तरह से है कि इस जलसा की नींव एक हिंदू व्यक्ति स्वामी साधु शुगुन चंद्र नामक ने डाली। 1892 में उन्हें विचार आया कि जब तक सब लोग इकट्ठे न हो कोई फायदा नहीं होगा अन्तत: उन्हें एक धार्मिक सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव सूझा। अत: इस प्रकार का पहला जलसा अजमेर में हुआ। तत्पश्चात् वह 1896 ई. में दूसरे सम्मेलन के लिए लाहौर के वातावरण को उचित समझकर उसकी तैयारी में लग गए।

(रिपोर्ट जलसा-ए-आज़म मज़ाहिब पृष्ठ - 253, 254 सिद्दीकी प्रेस लाहौर से सन् 1897 ई. में प्रकाशित)

सम्मेलन के लिए व्यवस्था

स्वामी जी ने इस धार्मिक सम्मेलन के प्रबन्ध के लिए एक कमेटी बनाई। जिसके अध्यक्ष मास्टर दुर्गा प्रसाद तथा चीफ़ सेक्रेटरी चीफ़ कोर्ट लाहौर के एक हिन्दू प्लीडर लाला धनपतराय बी. ए. एल. एल. बी. थे। सम्मेलन के लिए 26, 27, 28 दिसम्बर सन 1896 ई. की तिथियां निर्धारित हुईं तथा सम्मेलन की कार्यवाही के लिए निम्नलिखित छ: मॉडरेटर मनोनीत किए गए :-

1. राय बहादुर परतोल चन्द साहिब जज चीफ़ कोर्ट पंजाब
2. ख़ान बहादुर शैख ख़ुदा बख़्श साहिब जज स्माल कॉज़ कोर्ट लाहौर
3. राय बहादुर पंडित राधा किशन कौल प्लीडर चीफ़ कोर्ट भूतपूर्व गवर्नर जम्मू
4. हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन[रज़ि.] साहिब शाही वैद्य
5. राय भवानीदास साहिब एम. ए. अतिरिक्त सैटिलमेण्ट अफसर जेहलम
6. जनाब सरदार जवाहर सिंह साहिब सेक्रेटरी खालसा कमेटी लाहौर

(रिपोर्ट जलसा आज़म मज़ाहब धर्मों, पृष्ठ 253-254, मुद्रित प्रैस सिद्दीकी लाहौर 1897 ई।)

सम्मेलन के लिए 26-27-28 दिसंबर 1896 ई की तारीखें घोषित कीं और जलसा स्थल के लिए अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर हाई स्कूल का सेहन (आंगन) (मस्जिद मौलवी अहमद अली शेरांवाला दरवाज़ा से जुड़ा हुआ) प्राप्त किया गया।

(तब्लीग़ रिसालत, भाग 5, पृष्ठ 77)

जलसा की कार्यवाही के लिए निम्नलिखित छह मोडरेटर साहिबान नामित किए गए

1-राय बहादुर बाबू परतोल कुछ साहिब जज चीफ कोर्ट पंजाब।

2-ख़ान बहादुर शेख़ ख़ुदा बख्श साहिब जज चीफ कोर्ट लाहौर

3-राय बहादुर पंडित राधा कृष्ण साहब कोल पलीडर चीफ कोर्ट पूर्व

राज्यपाल जम्मू।

4-हजरत मौलवी हकीम नूर दीन साहब शाही वौद्य।

5-राय भवानी दास साहिब एम .ए अधिकारी जम्मू

6-श्री सरदार जवाहर सिंह साहिब सचिव खालसा समिति लाहौर

(रिपोर्ट जलसा आज़म मज़ाहब)

सम्मेलन का इश्तिहार

स्वामी शिवगुण चन्द्र साहिब ने कमेटी की ओर से जलसा का विज्ञापन देते हुए, मुसलमानों ईसाइयों तथा आर्य सज्जनों को शपथ दी कि उनके प्रसिद्ध विद्वान इस जल्सा में अपने-अपने धर्म की विशेषताएं अवश्य वर्णन करें तथा लिखा कि

"यह बंदा समस्त धर्म के साहिबों की सेवा में जो अपने अपने धर्म के उच्च स्तर के प्रवचन और मानव जाति की सहानुभूति के लिए तत्पर हैं विनम्रता से गुज़ारिश करता है कि जलसा आज़म धर्मों का लाहौर टाउन हॉल करार पाया है। इसकी तिथियाँ 26-27-28- दिसंबर 1896 निर्धारित हो चुकी हैं।

आप फरमाते हैं कि इसके उद्देश्य यही हैं कि सच्चे धर्म की विशेषताएं तथा गुण एक सभ्य और शिक्षित लोगों के सार्वजनिक जल्से में प्रकट होकर उसका प्रेम हृदयों में बैठ जाए तथा उसके प्रमाण एवं तर्कों को लोग भली प्रकार समझ लें। इस प्रकार प्रत्येक धर्म के सम्मानित उपदेशक को अवसर मिले कि वह अपने धर्म की सच्चाइयां दूसरों के हृदयों में बैठा दे तथा श्रोताओं को भी यह अवसर प्राप्त हो कि वे उन सब महानुभावों के जल्से में प्रत्येक भाषण की दूसरे के भाषण के साथ तुलना करें तथा जहां सत्य की झलक देखें उसे स्वीकार कर लें।

आजकल धार्मिक वाद-विवादों के कारण हृदयों में सच्चे धर्म को ज्ञात करने की इच्छा भी पाई जाती है तथा इसके लिए उत्तम उपाय यही विदित होता है कि समस्त धार्मिक विद्वान जो आदेश एवं नसीहत करना अपना आचरण रखते हैं एक स्थान पर एकत्र हों तथा अपने-अपने धर्म की विशेषताएं विज्ञापन में दिए गए प्रश्नों की पाबन्दी के साथ वर्णन करें। इस बड़े धर्मों के सम्मेलन में जो धर्म सच्चे परमेश्वर की ओर से होगा वह अपनी विशेष चमक अवश्य दिखाएगा। इसी उद्देश्य से इस जल्से को प्रस्तावित किया है। प्रत्येक जाति के बुज़ुर्ग उपदेशक भली भांति जानते हैं कि अपने धर्म की सच्चाई प्रकट करना उन का कर्त्तव्य है। अत: इस उद्देश्य के लिए जिस अवस्था में यह जलसा आयोजित हुआ है कि सच्चाइयां प्रकट हों तो ख़ुदा ने उन को इस उद्देश्य को पूर्ण करने का अब अच्छा अवसर दिया है जो हमेशा मनुष्य के अधिकार में नहीं होता।

फिर उन्हें प्रेरणा देते हुए लिखा :-

"क्या मैं स्वीकार कर सकता हूं कि जो व्यक्ति दूसरों को एक घातक रोग में ग्रस्त समझता है तथा विश्वास रखता है कि उसकी सुरक्षा मेरी दवा में है और मानव जाति की सहानुभूति का दावा भी करता है वह ऐसे अवसर पर कि ग़रीब रोगी उसे उपचार के लिए बुलाते हैं वह जानबूझ कर पहलू बचाए ? मेरा हृदय इस बात के लिए तड़प रहा है कि यह निर्णय हो जाए कि कौन सा धर्म वास्तव में सच्चाइयों से भरा हुआ है तथा मेरे पास वे शब्द नहीं जिनके द्वारा मैं अपने इस सच्चे जोश का वर्णन कर सकूं।"

(सारांक्ष अलफज़ल 5 जुलाई 1952 ई, पृष्ठ 5-7)

विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि

इस इश्तिहार पर निम्नलिखित 17 विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने निमंत्रण स्वीकार किया।

1. हजरत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम (प्रतिनिधि इस्लाम)
2. मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी (प्रतिनिधि इस्लाम)
3. मौलवी साना उल्लाह साहब अमृतसरी (प्रतिनिधि इस्लाम)
4. मुफ्ती मोहम्मद अब्दुल्ला साहब टोंक (प्रतिनिधि इस्लाम)
5. मौलवी अबू यूसुफ मुबारक अली साहब (प्रतिनिधि इस्लाम)
6. इएशी प्रसाद साहब (प्रतिनिधि सनातन धर्म)
7. पंडित गोपीनाथ साहिब सचिव सनातन धर्म सभा लाहौर (प्रतिनिधि सनातन धर्म)
8. पंडित भानू दत्त साहिब सेक्रेटरी पंजाब विश्वविद्यालय (प्रतिनिधि सनातन धर्म)
9. राय बरवोह कनटा साहिब पलीडर वज़ीर राज्य फरीदकोट (प्रतिनिधि थियोसोफीकल सोसायटी)
10. बाबू बेजा राम चटर्जी साहिब सक्खर (प्रतिनिधि आर्य समाज)
11. मास्टर दुर्गा प्रसाद साहिब (प्रतिनिधि आर्य समाज)
12. पंडित गोवर्धन दास साहिब (प्रतिनिधि फ्री थिन्कर)
13. प्रधान जवाहर सिंह साहिब एम-ए (प्रतिनिधि सिख धर्म)
14. मास्टर राम जी दास साहिब (प्रतिनिधि हार मूनीकल सोसायटी)
15. लाला कांशीराम साहब सचिव ब्रह्म समाज लाहौर (प्रतिनिधि ब्रह्म समाज)
16. श्री जे मारेसन साहब बहादुर पत्रकार लाहौर (प्रतिनिधि ईसाई)
17. श्री रो साहिब बहादुर पूर्व हेडमास्टर एची सन हाई स्कूल लाहौर (प्रतिनिधि ईसाई)

(तारीख़ अहमदियत, भाग 1 पृष्ठ, पृष्ठ 557)

हज़रत मसीह मौऊद की ओर से अपने लेख के विजयी रहने की समयपूर्व भविष्यवाणी

स्वामी शोगुन चंद्र साहिब जलसा का इश्तिहार देने से पहले क़ादियान भी आए थे और हज़रत अक़्दस से निवेदन किया कि मैं एक धार्मिक जलसा चाहता हूँ आप भी अपने धर्म के गुणों से संबंधित कुछ लेख लिखें जो इस जलसा में पढ़ा जाए हज़रत अक़्दस ने अपनी बीमारी के कारण मना किया लेकिन उन्होंने ज़ोर दिया कि आप जरूर लिखें चूंकि आप विश्वास रखते थे कि आप बिना ख़ुदा के बुलाए बोल नहीं सकते इसलिए आप ने अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ की कि वह आपको ऐसे लेख का इलकाअ करे जो इस जलसा की सारी तकरीरों पर हावी रहे आपने दुआ के बाद लिखा कि एक शक्ति आपके अंदर फूंक दी गई और आप ने आसमानी शक्ति की एक जबरदस्त ताकत अपने अंदर महसूस की। आप को इन दिनों दस्त की बीमारी थी आप ने तबीयत ठीक न होने के कारण लेटे लेटे ही तेज़ कलम से लेख लिखना शुरू कर दिया। आप ऐसा तेज़ और जल्दी लिखते थे कि नकल करने वालों के लिए मुश्किल हो गया कि इतनी जल्दी उसकी नकल कर सकें। जब हुज़ूर लेख लिख चुके तो ख़ुदा तआला से इल्हाम हुआ कि लेख विजयी रहा।

(हकीकतुल वह्यी पृष्ठ 278-279 प्रथम संस्करण)

इस इलाही ख़ुशख़बरी को पाते ही आप ने 21 दिसंबर 1896 ई को एक इश्तिहार लिखा जिसका शीर्षक था

सत्याभिलाषियों के लिए एक महान शुभ सन्देश

महान धर्म महोत्सव जो लाहौर टाउन हाल में 26, 27, 28 दिसम्बर 1896 ई. को होगा उसमें इस विनीत का एक निबन्ध क़ुर्आन शरीफ़ की विशेषताओं तथा चमत्कारों के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह निबन्ध है जो मानव शक्तियों से श्रेष्ठतम तथा ख़ुदा के निशानों में से एक निशान तथा उसके विशेष समर्थन से लिखा गया है। इसमें क़ुर्आन शरीफ़ की उन सच्चाइयों एवं अध्यात्म ज्ञानों का उल्लेख किया है जिनसे सूर्य के समान प्रकाशमान हो जाएगा कि वास्तव में यह ख़ुदा का कलाम (वाणी) तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक की किताब है तथा जो व्यक्ति

इस निबंध को प्रारंभ से अन्त तक पांचों प्रश्नों के उत्तर सुनेगा, मैं विश्वास रखता हूं कि उसमें एक नया ईमान पैदा होगा तथा उसमें एक नया प्रकाश चमक उठेगा तथा ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम की एक सर्वांगपूर्ण व्याख्या उसके हाथ में आ जाएगी। मेरा भाषण मानवीय व्यर्थ बातों तथा डींगों से पवित्र है। मुझे इस समय केवल प्रजा की सहानुभूति ने इस विज्ञापन को लिखने के लिए विवश किया है ताकि वे क़ुर्आन शरीफ़ के सौन्दर्य को देखें कि हमारे विरोधियों का कितना अन्याय है कि वे अंधकार से प्रेम करते और प्रकाश से घृणा करते हैं। मुझे सर्वज्ञ ख़ुदा ने इल्हाम द्वारा सूचित किया है कि यह वह निबंध है **जो सब पर विजयी होगा** तथा इसमें सच्चाई और बुद्धिमत्ता एवं अध्यात्म ज्ञान का वह प्रकाश है जो दूसरी जातियां इस शर्त पर कि उपस्थित हों तथा उसे आरंभ से अन्त तक सुनें शर्मिन्दा हो जाएंगी और कदापि समर्थ न होंगी कि अपनी किताबों की यह विशेषताएं दिखा सकें चाहे वे ईसाई हों, चाहे सनातन धर्म वाले अथवा कोई अन्य, क्योंकि ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया है कि उस दिन उसकी पवित्र किताब का प्रदर्शन हो। मैंने कश्फ़ की अवस्था में उसके संबंध में देखा कि मेरे मकान पर परोक्ष से एक हाथ मारा गया तथा उस हाथ के छूने से उस मकान में से एक उज्ज्वल प्रकाश निकला जो चारों और फैल गया तथा मेरे हाथों पर भी उसका प्रकाश पड़ा। तब एक व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा था वह उच्च स्वर में बोला -

اَللّٰہُ اَکْبَر خَرِبَتْ خَیْبَر

इसकी व्याख्या यह है कि उस मकान से अभिप्राय मेरा हृदय है जो प्रकाश स्थल तथा प्रकाशों के उतरने का स्थल है और वे प्रकाश क़ुर्आनी ज्ञान हैं और 'ख़ैबर' से अभिप्राय समस्त ख़राब धर्म हैं जिनमें शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) और बिदअत (शरीअत के आदेशों में अपनी ओर से किसी नई बात का समावेश) की मिलावट है तथा मनुष्य को ख़ुदा का स्थान दिया गया या ख़ुदा की विशेषताओं को उनके यथोचित स्थान से नीचे गिरा दिया है। अत: मुझे बताया गया कि इस निबन्ध के उचित तौर पर प्रसार के पश्चात् झूठे धर्मों का झूठ खुल जाएगा और क़ुर्आनी सच्चाई प्रतिदिन पृथ्वी पर प्रसारित होती जाएगी, यहां तक कि अपना चक्र पूरा करे। अन्तत: मेरा हृदय कश्फ़ की अवस्था से इल्हाम की ओर फेरा गया और मुझे यह इल्हाम हुआ -

اِنَّ اللّٰہَ مَعَکَ اِنَّ اللّٰہَ یَقُوْمُ اَیْنَمَا قُمْتَ

अर्थात् ख़ुदा तेरे साथ है और ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहां तू खड़ा हो। ये शब्द ख़ुदाई समर्थन के सूचक हैं। अब मैं अधिक न लिखकर प्रत्येक को यही सूचना देता हूं कि इन अध्यात्म ज्ञानों को सुनने के लिए कुछ हानि सहन करके भी आना पड़े तो भी सम्मेलन की निर्धारित तिथि पर लाहौर अवश्य पधारें कि उनकी बुद्धि और ईमान को इस से वे लाभ प्राप्त होंगे कि वे सोच भी नहीं सकते। सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया।

विनीत - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान
21, दिसम्बर - 1896 ई.

(तब्लीग़ रिसालत, भाग 5, पृष्ठ 77-79)

हज़रत अक़्दस का यह विज्ञापन कई बार प्रकाशित हुआ और भारत के दूरदराज के स्थानों तक फैला था।

जलसा की कार्यवाही का आरम्भ

26 दिसंबर 1896 ठीक दस बजे अंजुमन हिमायत इस्लाम हाई स्कूल स्थित शेरांवाला के परिसर में जलसा शुरू हुआ। हज़रत अक़्दस का लेख दूसरे दिन डेढ़ बजे की दूसरी बैठक में पढ़ा जाना था इसलिए इससे पहले ईशरी प्रसाद साहिब मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी और बरदा कनटा साहिब मौलवी सना उल्लाह साहिब अमृतसर, बाबू बेजा राम साहिब और पंडित गोवर्धन दास साहिब का भाषण हुआ।

(तारीख अहमदियत भाग 1 पृष्ठ 561)

हज़रत अक़्दस का लेख और दर्शकों का शौक

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि हज़रत अक़्दस की तकरीर के लिए दूसरे दिन की दूसरी बैठक निर्धारित थी जिसका समय हालांकि डेढ़ बजे शुरू होना था मगर विरोध के बावजूद दिलों में ऐसी तहरीक पैदा हो गई कि पहली बैठक में बैठने वाले भी अपनी अपनी जगह पर जमे रहे और हज़ारों दर्शक चारों ओर से उमड़ पड़े। नतीजा यह हुआ कि कार्रवाई से पहले ही सभा का स्थल खचाखच भर गया और सैकड़ों व्यक्ति जिनमें देश के बड़े-बड़े लोग रईस डॉक्टर और वकील शामिल थे खड़े होने पर मजबूर हो गए। अंत में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब जैसे परिष्कृत बयान ने अपनी आकर्षक और दिलनशीन आवाज़ से हज़रत अक़्दस का लेख पढ़ना शुरू किया, हज़रत मसीह मौऊद का रूहुल कुदुस की सहायता से लिखा गया लेख और मौलाना अब्दुल करीम साहब की मीठी ज़बान से हज़ारों के इस ऐतिहासिक इज्तिमा पर आन्नद छा गया। ऐसा नज़ारा आज तक ज़मीन ने कभी नहीं देखा होगा, ऐसा लग रहा था कि मानो फरिश्ते आसमान से नूर के थाल ले कर हाज़िर हो गए हैं और एक ग़ैबी हाथ आकर्षक हर दिल को धीरे धीरे वजद की ओर ले जा रहा है। दिल और दिमाग इस आसमानी माइदा का आनंद ले रहे थे कि एकाएक लेख का निर्धारित समय समाप्त हो गया। यह देखकर मौलवी अबू यूसुफ मुहम्मद मुबारक अली साहब सियालकोटी ने घोषणा की कि मैं अपना समय भी हज़रत अक़्दस की तकरीर के लिए देता हूँ इस घोषणा ने लोगों में खुशी और उल्लास की बिजली की लहर दौड़ा दी और सभा स्थल तालियों से गूंज उठा और फिर ज्ञान और हिकमत के मोती लुटने लगे। तकरीर अभी बाकी थी कि समय फिर खत्म हो गया अब की बार चारों ओर शोर मचा कि जलसा की कार्यवाही तब तक खत्म नहीं की जाए जब तक यह तकरीर समाप्त न हो ले और जलसा के आयोजकों को यही करना पड़ा। सुनने वालों ने यह सुन कर फिर तालियों के माध्यम से अपनी खुशियां जताई और तकरीर बहुत शौक और समान रुचि से शाम साढ़े पांच बजे तक लगातार चार घंटे तक चली। सुनने वालों की बे-खुदी और महवियत यहां तक बढ़ी कि उन्होंने यही समझ लिया कि पांचों प्रश्नों के उत्तर पढ़ दिए गए हैं लेकिन हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहब ने ज़ोर से कहा कि सज्जनों जो कुछ सुना है यह केवल पहले सवाल का जवाब है चार सवालों के जवाब अभी बाकी हैं मौलाना का कहना था कि दर्शकों ने एक ज़बान होकर बड़े ज़ोर शोर से अपनी यह इच्छा जताई कि जब चार सवालों के उत्तर अभी बाकी हैं जलसे के लिए एक और दिन क्यों न बढ़ाया जाए। ये ज़बरदस्त मांग चारों ओर इतनी तीव्रता से बढ़ी कि जलसा के आयोजकों को घोषणा करनी पड़ी कि जलसा के दर्शकों के लिए जलसा के लिए एक दिन की वृद्धि की जाती है इस घोषणा पर जन साधारण ने जो उत्साह तथा आनन्द व्यक्त किया वह देखने की बात थी शब्द उसका नक्शा प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 1 पृष्ठ, 562)

जलसा के आयोजकों के बयान

इस धार्मिक महोत्सव के सेक्रेटरी धनपत राय बी.ए., एल.एल. बी. प्लीडर चीफ़ कोर्ट पंजाब "रिपोर्ट जल्सा-ए-आज़म मज़ाहिब" (धर्म महोत्सव) में इस भाषण के संबंध में लिखते हैं :-

"पंडित गोवर्धन दास के भाषण के पश्चात् आधे घण्टे का अवकाश था, परन्तु चूंकि अवकाश के बाद एक प्रसिद्ध वकील की ओर से भाषण होना था, इसलिए अधिकांश रुचि रखने वाले लोगों ने अपने-अपने स्थान को न छोड़ा। डेढ़ बजने में अभी बहुत समय रहता था कि इस्लामिया कालेज का विशाल मकान शीघ्र-शीघ्र भरने लगा तथा कुछ ही मिनटों में भर गया। उस समय लगभग लगभग सात-आठ हज़ार लोग थे। विभिन्न धर्मों और मिल्लतों तथा सोसायटियों के अधिकांश शिक्षित लोग मौजूद थे, यद्यपि कुर्सियां, मेज़ें तथा फ़र्श नितान्त बड़े स्तर पर उपलब्ध किए परन्तु सैकड़ों लोगों को खड़ा होने के अतिरिक्त और कुछ न बन पड़ा। इन खड़े हुए रुचि रखने वाले लोगों में बड़े-बड़े रईस, पंजाब के उच्च अधिकारी लोग, प्रकाण्ड विद्वान, बैरिस्टर, वकील, प्रोफ़ेसर, एक्सट्रा असिस्टेंट, डाक्टर, निष्कर्ष यह कि विभिन्न विभागों के उच्च वर्ग के हर प्रकार के लोग मौजूद थे। इन लोगों के इस प्रकार एकत्र होने तथा नितान्त धैर्य और गंभीरता के साथ जोश से निरन्तर चार-पांच घण्टे तक खड़े रहने से स्पष्ट प्रकट होता है कि इन धनाढ्य लोगों को कहां तक इस पवित्र प्रेरणा से सहानुभूति थी। भाषण के लेखक स्वयं तो जल्से में मौजूद न थे परन्तु उन्होंने स्वयं अपने एक विशेष शिष्य मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी को निबन्ध पढ़ने के लिए भेजा हुआ था। इस निबन्ध के लिए यद्यपि कमेटी की ओर से केवल दो घंटे ही थे परन्तु जल्से में मौजूद लोगों को सामान्यतया इस निबन्ध से कुछ ऐसी रुचि पैदा हो गई कि मॉडरेटर लोगों ने नितान्त जोश और प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दी कि जब तक यह निबन्ध समाप्त न हो तब तक जल्से की कार्यवाही को समाप्त न किया जाए। उन का इस प्रकार कहना दर्शकों की इच्छा के सरासर अनुकूल था, क्योंकि जब निर्धारित समय-सीमा के गुज़रने पर मौलवी अबू यूसुफ़ मुबारक अली साहिब ने अपना समय भी इस निबन्ध के समाप्त होने के लिए दे दिया। अत: उपस्थित सज्जनों एवं मॉडरेटर लोगों ने ख़ुशी से नारा लगाते हुए मौलवी साहिब का धन्यवाद किया। जल्से की कार्यवाही साढ़े चार बजे समाप्त हो जानी थी किन्तु सभी की इच्छा को देखकर जल्से की कार्यवाही साढ़े पांच बजे तक जारी रखनी पड़ी क्योंकि यह निबन्ध लगभग चार घण्टे में समाप्त हुआ तथा प्रारंभ से अन्त तक अपने अन्दर बराबर रुचि और मान्यता रखता था।"

(रिपोर्ट जलसा मज़ाहबे आलम, पृष्ठ 79-80)

उचित मालूम होता है कि नमूने के तौर पर दो तीन अख़बारों की रायों का नीचे उल्लेख कर दिया जाए :-

सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट (लाहौर) ने लिखा :-

"इस सम्मेलन में श्रोताओं की हार्दिक एवं विशेष रुचि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के भाषण के साथ थी, जो इस्लाम के समर्थन और सुरक्षा में दक्ष एवं प्रकाण्ड हैं। इस भाषण को सुनने के लिए दूर और निकट से विभिन्न सम्प्रदायों का एक विशाल समूह उमड़ पड़ा था। चूंकि मिर्ज़ा साहिब स्वयं नहीं आ सकते थे, इसलिए यह भाषण उनके एक शिष्य एवं मुंशी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने पढ़कर सुनाया। 27, दिसम्बर को भाषण तीन घंटे तक होता रहा तथा लोगों ने अत्यन्त प्रसन्नता और ध्यानपूर्वक उसे सुना, किन्तु अभी केवल एक प्रश्न समाप्त हुआ। मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने वादा किया कि यदि समय मिला तो शेष भाग भी सुना दूंगा। इसलिए प्रबन्धन कमेटी और अध्यक्ष ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि 29 दिसम्बर का दिन बढ़ा दिया जाए।"

(अनुवाद)

अख़बार "चौदहवीं सदी" (रावलपिन्डी) ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस भाषण पर निम्नलिखित समीक्षा की :-

"इन भाषणों में सबसे उत्तम भाषण जो सम्मेलन की प्राणवायु थी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का भाषण था जिसे सुप्रसिद्ध, सरस एवं सुबोध भाषी वक्ता मौलवी अब्दुल करीम सियालकोटी ने नितान्त उत्तम ढंग से पढ़कर सुनाया। यह भाषण दो दिन में समाप्त हुआ, जो मोटाई में सौ बड़े पृष्ठ तक होगा। अत: मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने भाषण आरंभ किया और कैसा आरंभ किया कि समस्त श्रोता लट्टू हो गए। एक-एक वाक्य पर वाह-वाह के स्वर बुलन्द थे और प्राय: एक-एक वाक्य को पुन: पढ़ने के लिए उपस्थित सज्जनों की ओर से मांग की जाती थी। जीवन-पर्यन्त हमारे कानों ने ऐसा सुन्दर और प्रभावोत्पादक भाषण नहीं सुना। अन्य धर्मों में से जितने लोगों ने भाषण दिए, सत्य तो यह है कि वे सम्मेलन के निर्धारित प्रश्नों के उत्तर भी नहीं थे। समान्यतया वक्ता केवल चौथे प्रश्न पर ही रहे तथा शेष प्रश्नों को उन्होंने बहुत कम प्रस्तुत किया तथा अधिकांश लोग तो ऐसे भी थे जो बोलते तो बहुत थे परन्तु उसमें सजीवता बिल्कुल न थी सिवाए मिर्ज़ा साहिब के भाषण के जो इन प्रश्नों का पृथक-पृथक विस्तृत तथा पूर्ण उत्तर था, जिसे दर्शकों ने नितान्त ध्यान और रुचि से सुना तथा बड़ा बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण विचार किया। हम मिर्ज़ा साहिब के मुरीद (शिष्य) नहीं हैं और न उन से हमारा कोई संबंध है किन्तु हम न्याय का ख़ून कभी नहीं कर सकते और न कोई सौम्य और सही अन्तरात्मा रखने वाला व्यक्ति उसे उचित समझ सकता है। मिर्ज़ा साहिब ने समस्त प्रश्नों के उत्तर (यथोचित) क़ुर्आन शरीफ़ से दिए तथा समस्त बड़े-बड़े नियम एवं इस्लाम की शाखाओं को बौद्धिक तर्कों द्वारा तथा दर्शनशास्त्रीय प्रमाणों के साथ सुसज्जित किया। पहले बौद्धिक तर्कों द्वारा दर्शनशास्त्रीय समस्या को सिद्ध करना तत्पश्चात ख़ुदा के कलाम को बतौर उद्धरण पढ़ना एक अद्भुत शान दिखाता था।

मिर्ज़ा साहिब ने न केवल क़ुर्आनी समस्याओं की दार्शनिकता वर्णन की अपितु क़ुर्आन के शब्दों की फलास्फ़ी भी साथ-साथ वर्णन कर दी। अत: मिर्ज़ा साहिब का भाषण हर प्रकार से पूर्ण और प्रभावोत्पादक भाषण था जिसमें असंख्य ज्ञानों, वास्तविकताओं, आदेश एवं रहस्यों के मोती चमक रहे थे तथा आध्यात्म के दर्शन का ऐसे ढंग से वर्णन किया गया था कि समस्त धर्मों वाले स्तब्ध रह गए थे। किसी व्यक्ति के भाषण के समय इतने लोग एकत्र नहीं थे जितने कि मिर्ज़ा साहिब के भाषण के समय। सम्पूर्ण हाल नीचे से ऊपर तक भरा हुआ था तथा श्रोता पूर्ण ध्यान से सुन रहे थे। मिर्ज़ा साहिब के भाषण के समय तथा अन्य वक्ताओं के भाषणों के अन्तर के लिए इतना कहना पर्याप्त है कि मिर्ज़ा साहिब के भाषण के समय लोग इस प्रकार आ आकर गिरे जैसे शहद पर मक्खियां किन्तु दूसरों के भाषणों के समय आनन्द के अभाव के कारण उठ कर चले जाते थे। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का भाषण बिल्कुल मामूली था। वही मुल्लाई विचार थे जिन्हें लोग प्रतिदिन सुनते हैं। उसमें कोई विचित्र बात न थी तथा मौलवी साहिब के दूसरे भाषण के

समय कई लोग उठ कर चले गए थे। मौलवी साहिब को अपना भाषण पूर्ण करने के लिए कुछ अतिरिक्त मिनट देने की अनुमति भी नहीं दी गई।"

(अख़बार "चौदहवीं सदी" रावलपिन्डी, 1 फ़रवरी 1897 ई.)

अख़बार "जनरल व गौहर आसिफ़ी" कलकत्ता ने 24 जनवरी 1897 ई. के प्रकाशन में "धर्म महोत्सव लाहौर में आयोजित" और "फ़तह इस्लाम" के दोहरे शीर्षक से लिखा -

"इससे पूर्व कि हम सम्मेलन की कार्यवाही के बारे में बात करें हमें यह बता देना आवश्यक है कि हमारे अख़बार के कालमों में जैसा कि उसके दर्शकों पर स्पष्ट होगा यह बहस हो चुकी है कि इस धर्म महोत्सव में इस्लाम की वकालत के लिए सबसे योग्य व्यक्ति कौन था। हमारे एक सम्माननीय पत्रकार ने सर्वप्रथम मस्तिष्क को पक्षपात से रिक्त करके तथा सत्य को दृष्टिगत रख कर **हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद रईसे क़ादियान को अपने विचार में चुना था**, जिनके साथ हमारे एक अन्य आदरणीय सज्जन ने अपने पत्राचार में सहमति प्रकट की थी। जनाब मौलवी सय्यद फ़ख़रुद्दीन साहिब फ़ख़्र ने बड़े ज़ोर के साथ इस चुनाव के बारे में जो अपनी आज़ाद तार्किक तथा बहुमूल्य राय लोगों के समक्ष प्रस्तुत की थी उसमें हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान, जनाब सर सय्यद अहमद साहिब आफ़ अलीगढ़ को चुना था और साथ ही इस इस्लामी वकालत की पर्ची निम्नलिखित सज्जनों के नाम निकली थी। मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, जनाब मौलवी हाजी सय्यद मुहम्मद अली साहिब कानपुरी और मौलवी अहमद हुसैन साहिब अज़ीमाबादी। यहां यह वर्णन कर देना भी अनुचित न होगा कि हमारे एक स्थानीय अख़बार के संवाददाता ने जनाब मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी लेखक 'तफ़्सीर हक़्क़ानी' का इस कार्य के लिए निर्वाचन किया था।"

तत्पश्चात् स्वामी शिवगुण चन्द्र के विज्ञापन से उस भाग को नक़ल करके जिसमें उन्होंने हिन्दुस्तान के विभिन्न धर्मों के विद्वानों को बहुत शर्म दिला-दिला कर अपने-अपने धर्म के जौहर दिखाने के लिए बुलाया था। यह अख़बार लिखता है :-

"इस जल्से के विज्ञापनों आदि के देखने तथा निमंत्रणों के पहुंचने पर हिन्दुस्तान के किन-किन विद्वानों के स्वाभिमान ने पवित्र इस्लाम धर्म की वकालत के लिए जोश दिखाया तथा उन्होंने कहां तक इस्लामी समर्थन का बीड़ा उठाकर प्रमाणों एवं तर्कों के माध्यम से क़ुर्आन के रोब का सिक्का अन्य धर्मों के हृदय पर बैठाने का प्रयत्न किया है।

हमें विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने विशेष तौर पर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब तथा सर सय्यद अहमद साहिब को जल्से में भाग लेने के लिए पत्र लिखा था। हज़रत मिर्ज़ा साहिब तो तबीयत की ख़राबी के कारण स्वयं सम्मेलन में भाग न ले सके किन्तु अपना निबंध भेजकर अपने एक विशेष शिष्य जनाब मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी को उसे पढ़ने के लिए नियुक्त किया, परन्तु सर सय्यद ने जल्से में भाग लेने तथा निबंध भेजने से पृथकता रखी। यह इस कारण न था कि वह वृद्ध हो चुके हैं तथा ऐसे सम्मेलनों में भाग लेने योग्य नहीं रहे हैं और न इस कारण था कि उन्हीं दिनों मेरठ में एजूकेशनल कान्फ्रेंस का आयोजन तय हो चुका था अपितु इसका कारण यह था कि धार्मिक सम्मेलन उनके ध्यान योग्य नहीं, क्योंकि उन्होंने अपने पत्र में जिसे हम ख़ुदा ने चाहा तो अपने अख़बार में किसी अन्य समय लिखेंगे स्पष्ट लिख दिया है कि वह कोई उपदेशक या नसीहत करने वाले या मौलवी नहीं, यह कार्य उपदेश देने वालों एवं नसीहत करने वालों का है। सम्मेलन के प्रोग्राम को देखने तथा छान-बीन करने से यह ज्ञात हुआ है कि जनाब मौलवी सय्यद मुहम्मद अली कानपुरी, जनाब मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी और जनाब मौलवी अहमद हुसैन साहिब अज़ीमाबादी ने इस जल्से की ओर कोई जोश से ध्यान नहीं दिया और न हमारे पवित्र विद्वान-वर्ग में से किसी अन्य योग्य व्यक्ति ने अपना निबन्ध पढ़ने या पढ़वाने का संकल्प बताया। हां दो एक उलेमा ने बहुत साहस करके इसमें कदम रखा परन्तु उलटा। इसलिए उन्होंने या तो निर्धारित विषयों पर कोई बात न की या बिना सर-पैर की बातें हांक दीं जैसा कि हमारी बाद की रिपोर्ट से स्पष्ट होगा। अत: जलसे की कार्यवाही से यही सिद्ध होता है कि **केवल हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान थे जिन्होंने इस मुकाबले के मैदान में इस्लामी पहलवानी का पूरा हक़ अदा किया है और इस निर्वाचन को सच्चा किया है जो विशेष तौर पर स्वयं आप को इस्लामी वकील नियुक्त करने में** पेशावर, रावलपिण्डी, शाहपुर, भेरा, ख़ुशाब, सियालकोट, जम्मू, वज़ीराबाद, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, लुधियाना, शिमला, देहली, अम्बाला, रियासत पटियाला, देहरादून, इलाहाबाद, मद्रास, बम्बई, हैदराबाद दक्कन, बैंगलोर इत्यादि हिन्दुस्तान के विभिन्न इस्लामी सम्प्रदायों से वकालत नामों के द्वारा हस्ताक्षरों से सुसज्जित होकर अमल में आया था। सत्य तो यह है कि **यदि इस सम्मेलन में हज़रत मिर्ज़ा साहिब का निबन्ध न होता तो इस्लामियों पर अन्य धर्मावलम्बियों के समक्ष अपमान और निर्लज्जता का तिलक लगता किन्तु ख़ुदा के शक्तिशाली हाथ ने पवित्र इस्लाम को गिरने से बचा लिया अपितु उसे इस निबन्ध के द्वारा ऐसी विजय प्रदान की कि मित्र तो मित्र विरोधी भी स्वाभाविक जोश से यह कह उठे कि यह निबन्ध सब से श्रेष्ठ है, श्रेष्ठ है।** अत: निबन्ध की समाप्ति पर वास्तविकता प्रतिद्वन्द्वियों के मुख पर इस प्रकार जारी हो चुकी थी कि अब इस्लाम की सच्चाई स्पष्ट हुई तथा इस्लाम को विजय प्राप्त हुई जो चयनित लक्ष्य पर लगने वाले तीर के समान प्रकाशमान दिन में उचित निकला। अब इसके विरोध में कुछ कहने की गुंजायश है ही नहीं अपितु वह हमारे गर्व का कारण है। इसलिए इसमें इस्लामी वैभव और प्रताप है तथा इसी में इस्लामी श्रेष्ठता तथा सत्य भी यही है।"

लेक्चर का अन्य भाषाओं में अनुवाद और सार्वभौमिक लोकप्रियता

1897 ई में पहली बार यह विश्व प्रसिद्ध लेक्चर किताब की शक्ल में उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ। लेकिन जल्द ही इसे विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने की ज़रूरत महसूस हुई। अत: अब दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं जैसे अरबी, फारसी, अंग्रेजी, जर्मन, इंडोनेशियाई, स्पेनिश , बर्मी, चीनी, सवाहेली, कनियारी, तथा हिंदी और गुरमुखी में प्रकाशित हो चुके हैं और जैसा कि हज़रत अक़्दस को कशफ़ में बताया गया था। दुनिया भर में इस्लाम के प्रकाशन और तब्लीग़ का बहुत प्रभावी साधन बन रही है और विशेषकर पश्चिमी देशों में इस्लामी शिक्षाओं के प्रचार तथा लोक प्रिय होने में तो इस लेक्चर का बड़ा भारी दख़ल है। सैंकड़ों ग़ैर मुस्लिम इस का अध्ययन करके इस्लाम को स्वीकार कर रहे हैं। इस्लामी सिद्धांत की फलासफी' का अंग्रेज़ी अनुवाद आदरणीय मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ने किया था। और इस का संशोधन आदरणीय मुहमद अलेक्ज़ेनडर

रसेल वेब (अमेरिका) हज़रत मौलवी शेर अली साहिब बी ए और चौधरी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब स्यालकोटी ने की थी। यह अनुवाद 1910 ई के मध्य लंदन में छपा था।

"इस्लामी उसूल की फलासफी" पश्चिमी विचारकों की नज़र में

अमेरिका और यूरोप में जब " इस्लामी उसूल की फलासफी" का अनुवाद प्रकाशित हुआ तो उसे जबरदस्त लोकप्रियता प्राप्त हुई और पश्चिमी विचारकों ने इस लेक्चर को बेहद सराहा कुछ प्रतिक्रियाएं बतौर उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(1) प्रख्यात रूसी दार्शनिक कानट टॉल्स्टॉय ने कहा:

The ideas are very Profound and very true

(यह विचार बहुत गहरे और सच्चे हैं)

(2) '' थियोसफीकल बुक नोटिस 'ने लिखा:

Admirably Calculated to Appeal to the student of Comparative religion, who will find exactly what he wants to know as Mohammedan Doctrines on souls and Bodies, divine existence, moral law and much else.

Theosophical Book Notes (March1912)

सराहनीय, नपी तुली शैली जो धर्मों के मुकाबला के ऐसे छात्र को प्रभावित करता है जिसे वह सब कुछ मिल जाता है जो वह मुहम्मदी नियमों की रोशनी में 'रूह' जिस्म, रूहानी ज़िन्दगी' नैतिक नियमों और कई अन्य संबंधित मामलों के बारे में जानना चाहता है।

3. "द इंग्लिश मेल" ने यह राय दी कि

A summary of really Islamic Ideas.

The English Mail (27 Oct 1911)

'' वास्तविक इस्लामी विचारों का सारांश ''

4. 'द ब्रिस्टल टाइम्स एंड मिरर' ने टिप्पणी की कि

Clearly it is no ordinary person who thus Addressess Himself to the West.

(The Bristol Times and Mirror)

निश्चित रूप से वह व्यक्ति जो इस रूप से पश्चिम को संबोधित करता है कोई मामूली आदमी नहीं।

5.दी दैनिक समाचार (शिकागो) ने लिखा:

Character of the author is Apparent.

Chicago (16 March 1912) .The devout and earnast

(The Daily News)

इस लेखक का बहुत ईमानदारी और सच्चाई पर आधारित चरित्र बिल्कुल स्पष्ट है।

दी एंग्लो बेल्जियम टाइम्स (ब्रसेल्स) ने किताब में निम्नलिखित विचार व्यक्त किया।

The Teachings of Islam. turns out a wonderfull Commentary on the Quran (the Muslim Scripture) itself. The author, s method has a Further moral, and this is one which, to our mind, all Writers on Riligion will do well to consider. It is that a religious Treatise should be Affirmative rather than negative in character .It should Insist on te beauties of the one system rather than on the Defects of another .The Teachings of Islam Demonstrates the Principle in a pre-eminent degree, and the result is that the author has been able, without being in the least Bitter Towards any non-muslim system, guide the reader to an Appreciation of muslim Fundamentals such as would have been impossible Otherwise.The book rings with Sincerity and Conviction.

(The Anglo-Belgion Times, Brussels)

"टीचिंगस ऑफ इस्लाम " मुसलमानों की इल्हामी किताब कुरआन करीम की एक बहुत उत्कृष्ट तफसीर है। लेखक की लेखन शैली एक अधिक नैतिक मानक स्थापित करती है जिसे हमारे समीप धर्म पर लिखने वाले सभी लेखकों को ध्यान में रखना चाहिए और वह यह है कि एक धार्मिक पुस्तक का अंदाज़ नकारात्मक नहीं बल्कि सकारात्मक होना चाहिए। इसे किसी भी सिस्टम के गुण स्पष्ट करने चाहिए न कि केवल दूसरे की कमियां। किताब " टीचिन्गज़ ऑफ इस्लाम" यह नियम बहुत स्पष्ट रूप से स्थापित करती है जिसके कारण से इसका लेखक पाठक को इस्लाम के बुनियादी सिद्धांतों की सराहना के लिए किसी और ग़ैर मुस्लिम सिस्टम के ख़िलाफ कटु व्यवहार नहीं करता और यह बात कोई और भाषा शैली अपनाने से संभव नहीं थी। अत: यह किताब ईमानदारी और सही यकीन का सार है।

(सिलसिला अहमदिया, पृष्ठ 71-72)

पाठको ! ज़ाहिर कि जलसा मज़ाहबे आलम लाहौर का प्रबंध अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार था ताकि इस्लाम का उज्ज्वल चेहरा सभी धर्मों पर प्रकट हो और लेयुज़हेरहो अलद्दीन कुल्लेही के वादा के अनुसार अन्य धर्मों पर इस्लाम की भव्य विजय प्रकट हो और हज़रत मसीह मौऊद को धर्मों के अखाड़े में विजयी पहलवान और महान योद्धा के रूप सत्यापित किया जाए। इस जलसा मज़ाहब आलम में संसार के सारे प्रमुख धर्मों के प्रतिनिधि सम्मलित हुए और इस जलसा में इस्लाम की शान बढ़ी। जिस की ख़बर समय से पहले इल्हाम द्वारा पाकर होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इश्तिहार के द्वारा साधारण जनता को दे दी थी।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कामिल प्रतिरूप की महानता और महिमा को न केवल मुसलमानों ने बल्कि ग़ैर मुस्लिम लोगों ने भी स्वीकार किया आप की प्रशंसा की है। यह लेक्चर जो कुरआन शरीफ की व्यापक व्याख्या है और इस्लामी उसूल की फलासफी के नाम से प्रकाशित है उसको 120 साल हो चुके हैं। यह लेक्चर न केवल अहमदियों की रूहानी प्यास बुझा रहा है, बल्कि ग़ैर अहमदी मुसलमान भाइयों तथा ग़ैर मुस्लिम सज्जनों के दिल की तसल्ली का कारण हो रहा है और इसके द्वारा अनगिनत प्यासी रूहें तृप्त हो रही हैं और अहमदियत अर्थात् वास्तविक इस्लाम को स्वीकार कर रही हैं। आख़िर में दुआ है कि मानवता इस लेक्चर के द्वारा जल्दी से जल्दी अहमदियत को समझे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद और आप के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद पर दुआएं भेजने वाले हो।

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिनवअला अब्देहिल मसीह मौऊद व बारिक वसल्लम इन्नक हमीदुन मजीद। आमीन।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad